चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 141, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 05 जुलाई 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

देश-प्रदेश में हो रहा डबल इंजन से विकास: योगी

स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति संवेदनशील है डबल इंजन की सरकार, आयुष्मान भारत योजना से गरीब से गरीब व्यक्ति भी करा सकता है बेहतरीन उपचार

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश और प्रदेश की डबल इंजन सरकार आमजन, गरीबों व कमजोर तबके के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के प्रति संवेदनशील है। इस संवेदनशीलता का ही परिणाम है कि आज प्रदेश का हर जिला एक मेडिकल कॉलेज से जुड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। स्वास्थ्य सुविधाओं के क्षेत्र में सरकार के प्रयासों के साथ ही निजी क्षेत्र की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। मुख्यमंत्री योगी ने यह बातें मंगलवार को गोरखपुर में छात्रसंघ चौराहे के पास नवनिर्मित न्यू आनंद लोक हॉस्पिटल के उद्घाटन समारोह में कहीं। हॉस्पिटल का उद्घाटन करने के बाद उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य का क्षेत्र काफी विस्तृत क्षेत्र है। केवल सरकार के भरोसे रहकर इस क्षेत्र में सफलता नहीं हासिल की जा सकती है। सरकार के साथ निजी क्षेत्र की सहभागिता भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि नौ वर्ष पूर्व समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति के लिए किसी प्राइवेट या कारपोरेट हॉस्पिटल में उपचार कराना कठिन था। लेकिन, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई आयुष्मान भारत योजना से गरीब से गरीब व्यक्ति भी सरकारी अस्पतालों, मेडिकल कॉलेजों के साथ ही निजी व कारपोरेट हॉस्पिटलों में इलाज करा सकता है। उन्होंने बताया कि देश में 50 करोड़ जरूरतमंदों को

आयुष्मान भारत योजना का लाभ प्राप्त हो रहा है।मुख्यमंत्री ने कहा कि 06 वर्ष पहले पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति ठीक नहीं थी। गोरखपुर का बीआरडी मेडिकल कॉलेज भी बीमार था। अब बीआरडी में सुपर स्पेशलिटी सेवा शुरू है। एम्स भी बन गया है। निजी क्षेत्र में भी अनेक हॉस्पिटल आए हैं। ये भी अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं देने का प्रयास कर रहे है।

हर जिले में होगा मेडिकल कॉलेज

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि सरकार हर जिले में मेडिकल कॉलेज की स्थापना की दिशा में कदम बढ़ा चुकी है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में ही देवरिया, सिद्धार्थनगर, बस्ती में मेडिकल कॉलेज बन चुका है।

कुशीनगर में निर्माण चल रहा है। महाराजगंज में पीपीपी मॉडल पर मेडिकल कॉलेज बनने की प्रक्रिया शुरू है।1947 से लेकर 2017 तक प्रदेश में मात्र 12 गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज थे। 2017 से 2022-23 के बीच 59 नए मेडिकल कॉलेज का निर्माण या तो पूरा हो चुका हैया निर्माण चल रहा है।

गोरखपुर की जनता को पीएम मोदी का आभार जताने का सुनहरा अवसर : योगी

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गोरखपुर को बहुत कुछ दिया है। लगभग तीन दशक तक बंद खाद कारखाने को चलवाया। गोरखपुर में एम्स की स्थापना कराई। वायुयान की सुविधा में काफी बढ़ोतरी की सौगात देकर मुंबई, दिल्ली, कोलकाता सहित अन्य शहरों के लिए आवागमन आसान किया। इसके अलावा बहुत सारी सुविधाएं गोरखपुर को प्राप्त हुई हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 07 जुलाई को दो महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में सम्मिलित होने गोरखपुर आ रहे हैं। ऐसे में गोरखपुर की जनता को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का सुनहरा अवसर मिला है।

मुख्यमंत्री योगी मंगलवार को एनेक्सी भवन में भाजपा पदाधिकारियों के साथ बैठक कर रहे थे। यह बैठक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन के मद्देनजर स्वागत की तैयारियों के सिलसिले में आयोजित थी।

आदिवासी युवक पर पेशाब करने का वीडियो वायरल

भोपाल। मध्य प्रदेश में मानवता को शर्मसार करने वाला मामला सामने आया है। मंगलवार को सोशल मीडिया पर एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें एक युवक नशे की हालत में एक आदिवासी युवक पर पेशाब करते हुए दिख रहा है। वीडियो वायरल होने के बाद लोगों की तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मामले को संज्ञान में लिया है और अपराधी पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (एनएसए) लगाने की बात कही है। मामला मप्र के सीधी जिले का बताया जा रहा है। घटना को लेकर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने

मुख्यमंत्री बोले- अपराधी पर लगाया जाएगा एनएसए

जांच कर कार्रवाई के निर्देश दे दिए हैं। उन्होंने मंगलवार को ट्वीट कर-के कहा कि 'मेरे संज्ञान में सीधी जिले का एक वायरल वीडियो आया है। मैंने प्रशासन को निर्देश दिए हैं कि अपराधी को गिरफ्तार कर कड़ी से कड़ी कार्रवाई कर एनएसए भी लगाया जाए। वायरल हो रहे वीडियो में दिखाई दे रहा है कि एक गरीब व्यक्ति सीढ़ियों पर बैठा है। उसके बाल बिखरे हैं। चेहरे से लग रहा है, जैसे वो कई दिन से भूखा हो। उसके सामने एक ब्लू जींस और चेक वाली शर्ट पहने एक शख्स खड़ा होकर सिगरेट पीते हुए उसके ऊपर पेशाब करने लगता है। पेशाब करने वाला शख्स शराब के नशे में लग रहा है। कहा जा रहा है कि नशे में धुत पेशाब करने वाले शख्स की किसी भाजपा नेता से नजदीकी है। हालांकि, भाजपा ने इस बात से साफ इनकार किया है। सीधी से भाजपा विधायक केदारनाथ शुक्ला ने ट्वीट करते हुए कहा है कि सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है।

सीएम गहलोत ने दिए पायलट की मांगों को मानने के संकेत

पेपरलीक करने पर उम्रकैद की सजा होगी; बिल लाने की घोषणा

जयपुर: राजस्थान में पेपरलीक करने वालों के खिलाफ गहलोत सरकार मौजूदा कानून को और कड़ा करने की तैयारी में है। सीएम अशोक गहलोत ने पेपरलीक करने वालों को उम्रकैद की सजा करने का प्रावधान करने की घोषणा की है। इसके लिए विधानसभा के अगले सत्र में बिल लाया जाएगा। इसमे एंटी चीटिंग बिल में संशोधन करके उम्रकैद का प्रावधान किया जाएगा। सीएम ने कर्मचारी चयन बोर्ड की भर्ती प्रक्रिया को सुधारने के लिए मैकैनिज्म बनाने की भी घोषणा की है। सीएम की इस घोषणा को पेपरलीक पर सचिन पायलट की मांगों को मानने के संकेत के तौर पर देखा जा रहा है। इसे पायलट के साथ सुलह के फॉर्मूले की शुरूआत के तौर

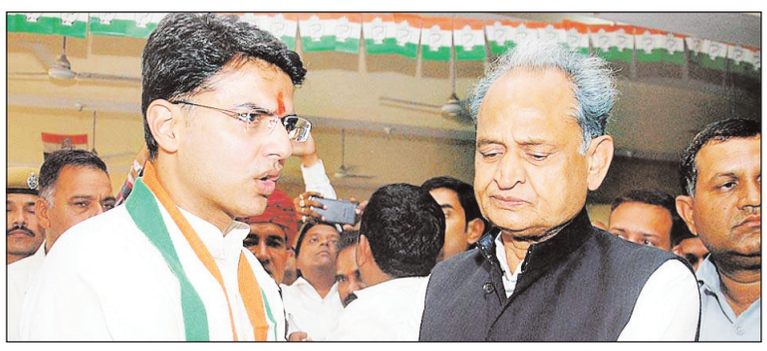

पर देखा जा रहा है। सीएम गहलोत ने ट्वीट करके नकल करने वालों को उम्र कैद की सजा करने और भर्ती प्रक्रियाओं में सुधार की घोषणा की। सीएम ने लिखा- राज्य में प्रतियोगी परीक्षाओं में और पारदर्शिता लाने के उद्देश्य से मुख्य सचिव को निर्देशित किया है कि दूसरे हितधारकों के साथ चर्चा कर बेहतर प्रक्रिया तैयार करें। पेपरलीक के खिलाफ बनाए गए कानून में भी अधिकतम सजा का प्रावधान उम्रकैद करने के लिए आगामी विधानसभा सत्र में बिल लाने का फैसला किया है।

पायलट की मांगों को मानने की शुरूआत के तौर पर देखा जा रहा: गहलोत की इस घोषणा को पायलट की मांगों को मानने की शुरूआत के तौर पर देखा जा रहा है। पायलट ने आरपीएससी को भंग करके इसका पुनर्गठन करके आमूलचूल बदलाव करने की मांग की थी। अब तक पायलट की मांगों को गहलोत ने सिरे से खारिज कर दिया था। पायलट ने 11 से 15 मई तक पेपरलीक और बीजेपी राज के करप्शन के खिलाफ अजमेर से जयपुर तक पैदल यात्रा की थी।

एससीओ समिट: कट्टरता से निपटने में सहयोग करेंगे देश

नई दिल्ली। शंघाई सहयोग संगठन (एससीयू) की शिखर वार्ता भारत की अध्यक्षता में मंगलवार को वर्चुअल माध्यम से संपन्न हुई। इस दौरान नेताओं ने सहयोग से जुड़ी दो संयुक्त घोषणाओं पर हस्ताक्षर किए। इसमें कट्टरता का मुकाबला करने और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन में सहयोग शामिल है।मध्य एशियाई देशों, रूस, चीन, पाकिस्तान, भारत और ईरान के शीर्ष नेताओं ने इस शिखर सम्मेलन में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया। शिखर वार्ता के बाद विदेश सचिव विनय मोहन क्वात्रा ने जानकारी दी कि निष्कर्ष के तौर पर नेताओं ने न्यू दिल्ली डिक्लेरेशन और दो विषय अनुसार वक्तव्य अपनाएं। एक आतंकवाद, चरमपंथ और अलगाववाद की ओर ले जाने वाली कट्टरता से निपटने में सहयोग और

दूसरा डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन में सहयोग। उन्होंने कहा कि सभी नेताओं ने ईरान के संगठन में शामिल होने की प्रक्रिया के पूरे होने का स्वागत किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से राष्ट्रपति रईसी को शुभकामनाएं दी। साथ ही संगठन में बेलारूस को शामिल करने के लिए मेमोरेंडम ऑफ ऑब्लिगेशन पर हस्ताक्षर हुए। यह प्रक्रिया 2024 में होने वाले शिखर सम्मेलन तक पूरी हो जाएगी। विदेश सचिव ने बताया कि प्रधानमंत्री ने शिखर सम्मेलन में भारत के पिछले 6 सालों के योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने साथ मिलकर काम करने के महत्व को रेखांकित किया। साथ ही आतंकवाद को क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर मिलकर समाप्त करने की दिशा में काम करने के महत्व को रेखांकित किया।

अफजाल अंसारी को सजा के खिलाफ राहत नहीं

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गाजीपुर से बहुजन समाज पार्टी(बसपा) के पूर्व सांसद अफजाल अंसारी को लोवर कोर्ट से मिली सजा के खिलाफ फिलहाल कोई राहत नहीं दी है। हालांकि, कोर्ट ने याची के अधिवक्ता के अनुरोध पर जेल अधीक्षक से अफजाल अंसारी की मेडिकल रिपोर्ट तलब की है। कोर्ट अब इस मामले में 12 जुलाई को सुनवाई करेंगी। यह आदेश न्यायमूर्ति राजबीर सिंह की पीठ ने अफजाल अंसारी की अपील पर सुनवाई करते हुए दिया है।

एमपी: संविदा कर्मियों को मिलेगा नियमित कर्मचारियों के बराबर वेतन

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश के करीब डेढ़ लाख संविदा कर्मचारियों को बड़ी सौगात दी है। उन्होंने मंगलवार को भोपाल के मोतीलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित संविदा कर्मचारियों के प्रांतीय सम्मेलन में बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि संविदा कर्मचारियों की प्रतिवर्ष अनुबंध की प्रक्रिया समाप्त की जाती है। संविदा कर्मचारियों को नेशनल पेंशन स्कीम और स्वास्थ्य बीमा योजना समेत अन्य लाभ मिलेंगे। मुख्यमंत्री ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि मध्य प्रदेश का भव्य भवन बन कर खड़ा हो रहा है और उसकी नींव के पत्थर अगर कोई हैं, तो वह संविदाकर्मी हैं। कोविड काल में संविदा कर्मियों ने अपनी जान की बाजी लगाकर जनता की जिंदगी बचाई। प्रदेश आपके इस काम को कभी भुला नहीं पाएगा। उन्होंने कहा कि आपकी दृष्टि और कार्यकुशलता नियमित कर्मचारियों से रत्ती भर कम नहीं है, कई मायनों में ज्यादा है। मुझे कहने में हिचक नहीं है कि नियमित कर्मचारियों के साथ कदम से कदम और कंधे से कंधा मिलाकर और जरूरत पड़ने पर उनसे ज्यादा काम करके दिखाया है। मुख्यमंत्री चौहान ने सम्मेलन में सहभागिता कर संविदा कर्मियों को अनेक सौगात दी। उन्होंने घोषणाएं करते हुए कहा कि संविदा कर्मचारियों को नियमित कर्मचारियों के बराबर वेतन मिलेगा।

नेशनल पेंशन स्कीम और स्वास्थ्य बीमा का लाभ भी सभी को दिया जाएगा। अनुकंपा नियुक्ति भी दी जाएगी। रिटायरमेंट पर ग्रेच्युटी की व्यवस्था भी की जाएगी। नियमित पदों पर भर्ती में 50 फीसदी आरक्षण संविदा कर्मचारियों के लिए किया जाएगा।

सरकार का काम स्टार्टअप को सुविधा प्रदान करना है: गोयल

नई दिल्ली: सरकार स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए हमेशा एक मददगार या सुविधा प्रदाता के तौर पर कार्य करेगी, नियामक के रूप में नहीं। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को गुरुग्राम में स्टार्टअप्स-20 शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह बात कही। पीयूष गोयल ने कहा कि सबसे अच्छा तरीका स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र से बाहर होना है। उन्होंने कहा कि सरकार पारिस्थितिकी तंत्र के नियमन या उसे निर्देशित करने का काम नहीं करेगी। पीयूष गोयल ने कहा कि इस पारिस्थितिकी तंत्र के हितधारक स्व-नियमन करेंगे। गोयल ने कहा कि भारत स्टार्टअप की दुनिया को एक विशिष्ट अवसर मुहैया करता है। भारत के पास कुशल प्रतिभा, सामर्थ्य, बढ़ती स्टार्टअप संस्कृति और आकांक्षी आबादी का लाभ है। उन्होंने दुनियाभर की स्टार्टअप कंपनियों को भारत आने और यहां अवसर तलाशने के लिए आमंत्रित किया। वाणिज्य मंत्री ने कहा कि यहां से संदेश जाना चाहिए कि इसमें भाग लेने वाले सभी 22 देशों की संयुक्त प्रतिबद्धता यह है कि सरकारें स्टार्टअप द्वारा किए जा रहे काम की प्रगति में बाधा नहीं डालेंगी।

यूनिफॉर्म सिविल कोड का सीएम मान ने किया विरोध

अमृतसर: आम आदमी पार्टी के सीनियर लीडर संदीप पाठक के यूनिफॉर्म सिविल कोड़ (यूसीसी) का समर्थन किए जाने की घोषणा के बाद अब पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने इसका विरोध कर दिया है। उन्होंने यूसीसी पर सवाल उठाते हुए देश को गुलदस्ता बताया और इसे खराब ना करने की अपील की। वहीं अकाली दल ने इसका समर्थन किया और आप को इस पर अपना पक्ष साफ करने को कहा है। सीएम ने कहा- हमारा देश एक गुलदस्ते की तरह है, गुलदस्ते में हर रंग के फूल हैं और हर रंग की एक अलग संस्कृति है। गुलदस्ता एक ही रंग का हो, इसकी इजाजत नहीं

होगी। हर रंग की अपनी संस्कृति है, सबके अपने रीति-रिवाज हैं। सबसे बात करें, सहमति लें, फिर विचार करें कि इस कोड को लागू करना है या नहीं। मान ने बीजेपी पर सवाल खड़ा करते हुए कहा कि बताओ हर धर्म के रीति-रिवाज इन्हें क्या कहते हैं? ये बीजेपी पता नहीं धर्म के मुद्दे क्यों उठा रही है?

ये बीजेपी का एजेंडा: मान ने आगे कहा कि संविधान कहता है, पूरा समाज एक समान हो जाए तो ऐसे कोड लागू करें। क्या हम सामाजिक तौर पर बराबर हो गए हैं? अभी भी बहुत से दलित लोग हैं जिन्हें पढ़ने का समय नहीं मिलता, अर्थव्यवस्था के कारण किसी को काम करने का समय नहीं मिलता।

अकाली दल ने आप को घेरा: अकाली दल के वक्ता डॉ. दलजीत चीमा ने मुख्यमंत्री का समर्थन किया है। डॉ. चीमा ने कहा कि यह अच्छी बात है, सीएम को इसकी समझ आने लगी है, लेकिन इससे आप का दोहरा चेहरा भी सामने आया है। कुछ दिन पहले आप नेता व सांसद संदीप पाठक ने राष्ट्रीय स्तर पर वउउ का समर्थन किया। जिससे साफ हुआ कि केजरीवाल खुद यूसीसी के हक में हैं। अब मुख्यमंत्री को चाहिए कि वे संदीप पाठक को लेकर वह उनकी बात दोहराने के लिए कहें ताकि आप का पक्ष साफ हो सके।

सेफ्टी कमिश्नर की रिपोर्ट में खुलासा; विपक्ष ने कहा- सरकार की लापरवाही से ट्रेनें मुर्दाघर बनीं

बालासोर हादसे की वजह सिग्नलिंग सिस्टम में खराबी

बालासोर: 2 जून को ओडिशा के बालासोर में तीन ट्रेनों की टक्कर हुई थी। दो दशक के सबसे बड़े हादसे में 293 लोगों की मौत हो गई और 1 हजार से ज्यादा लोग घायल हो गए। हादसे की जांच सीबीआई कर रही है। एक जांच रेलवे बोर्ड की ओर से कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी ने भी की है। सोमवार को उप्र ने 40 पेज की रिपोर्ट बोर्ड को सौंपी। रिपोर्ट के मुताबिक, लेवल-क्रॉसिंग लोकेशन बॉक्स के अंदर तारों की गलत लेबलिंग की वजह से ऑटोमेटेड सिग्नलिंग सिस्टम में गड़बड़ी हुई। जो हादसे का कारण बना। क्रॉसिंग लोकेशन बॉक्स में तारों की गलत लेबलिंग के बारे में सालों तक मालूम ही नहीं चला। मेंटेनेंस के दौरान भी इसमें गड़बड़ी हुई

है। रिपोर्ट सामने आने के बाद विपक्षी पार्टियां सरकार पर हमलावर हैं। टीएमसी ने कहा कि सरकार की लापरवाही से पैसेंजर ट्रेनें चलता फिरता मुर्दाघर बन गई हैं। वहीं कांग्रेस प्रवक्ता जयराम रमेश ने कहा- वंदे भारत ट्रेनों के उद्घाटन की सनक में केंद्र सरकार रेलवे सुरक्षा जैसे बुनियादी मुद्दों पर समझौता कर रही है। लेवल-क्रॉसिंग लोकेशन बॉक्स के अंदर सारे तार गलत जुड़े थे। उसके चलते ही मेंटेनेंस वर्क के दौरान गड़बड़ी हुई, जिसके चलते गलत फंक्शन इंडिकेट हो रहे थे। इसके बारे में सालों तक पता नहीं चल सका। हादसे के लिए सिग्नलिंग डिपार्टमेंट को मुख्य रूप से जिम्मेदार माना जा रहा है। रिपोर्ट में स्टेशन मास्टर का नाम भी है, जो सिग्नलिंग कंट्रोल सिस्टम में गड़बड़ी का पता नहीं लगा पाए। बालासोर में एक अन्य जगह भी लोकेशन बॉक्स के डायग्राम का इस्तेमाल बहनागा बाजार के लोकेशन बॉक्स के लिए हुआ था।

उप्र के ग्रामीण अंचलों में बढ़ेंगी खेल सुविधाएं

बनेंगे मिनी स्टेडियम और मल्टीपरपज हॉल, खेलो इण्डिया योजना के अंतर्गत 6238 लाख के सात प्रस्ताव केंद्र को भेजेगी योगी सरकार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में खेल सुविधाओं के निर्माण के लिए योगी सरकार ने खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत छह हजार लाख रुपए से अधिक के सात प्रस्ताव भारत सरकार को भेजने का निर्णय लिया है। इसके अंतर्गत प्रदेश के पांच जनपदों के सात विकास खण्डों में मिनी स्टेडियम और मल्टीपरपज हॉल के निर्माण का प्रस्ताव है। अपर मुख्य सचिव, खेल एवं युवा कल्याण डॉ नवनीत सहगल की अध्यक्षता में आयोजित खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत गठित राज्य स्तरीय निगरानी समिति की बैठक में 6238.46 लाख रुपए के सात प्रस्ताव भारत सरकार को भेजे जाने की सहमति प्रदान की गई।

अपर मुख्य सचिव ने बताया कि खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में मिनी स्टेडियम एवं मल्टीपरपज हॉल का निर्माण कराया जा रहा है। इसके अंतर्गत पांच जनपदों-बागपत, सहारनपुर, आगरा, कुशीनगर तथा प्रतापगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सुविधाओं के विकास प्रस्ताव भेजे जाएंगे।

अन्य जनपदों से भी मांगे गए प्रस्ताव: डॉ नवनीत सहगल ने बताया कि बागपत के विकास खण्ड छपरौली में 264.68 लाख रुपए की लागत से मल्टीपरपज हॉल, सहानपुर के विकास खण्ड नकुड़ में 1421.93 लाख रुपए की लागत से मिनी स्टेडियम तथा विकास खण्ड पुवांरका में 564.01 लाख रुपए की लागत से मल्टीपरपज हॉल का निर्माण कराया जाना प्रस्तावित है।

खबर संक्षेप

दबंगों ने युवक को दौड़ा कर पीटा वीडियो वायरल मुकदमा दर्ज

सिरसा। शहर से घर लौटते समय युवक की कुछ दबंग युवकों ने घेराबंदी कर बेरहमी से पिटाई कर लहूलुहान कर दिया। पिटाई के दौरान उक्त युवकों ने घायल युवक का मोबाइल, पैसा भी छीन लिया और फरार हो गए। घायलावस्था में युवक को नजदीकी अस्पताल में इलाज के लिए दाखिल कराया गया है। मेजा थाना क्षेत्र के परानीपुर बनका डुहिया निवासी प्रमोद कुमार तिवारी का 22 वर्षीय बेटा प्रिंस तिवारी रविवार रात शहर से बाइक लेकर घर लौट रहा था। जैसे ही वह रामनगर के दलई का पूरा गांव के सामने पहुंचा कुछ दबंग युवकों ने घेराबंदी कर अचानक हाकी और लाठी डंडे से पिटाई करने लगे। युवक की इतनी बेरहमी से पिटाई हुई कि वह लहूलुहान हो गया। जिसका वीडियो भी वायरल हो रहा है। हालांकि पब्लिक वाइब वायरल वीडियो की पुष्टि नही करता है। पीड़ित युवक का आरोप था कि पिटाई के दौरान बदमाश युवकों ने उसका मोबाइल और 3 हजार नकद छीन लिया। वहीं सूचना पर मौके पर पहुंचे सिरसा चौकी प्रभारी जगदीश कुमार ने घायल युवक को आनन फानन में इलाज के लिए सीएचसी रामनगर भेजवाया है।उक्त प्रकरण में मेजा थानाध्यक्ष राजेश उपाध्याय का कहना है कि पीड़ित की तहरीर पर अभियोग दर्ज कर लिया गया है। स्थानीय पुलिस को आरोपितों को चिन्हित कर गिरफ्तारी के लिए निर्देशित कर दिया गया है।

एलएलबी द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा :

दूसरे के स्थान पर परीक्षा देते तीन मुन्ना भाई व छात्रा गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

सिरसा। मेजा क्षेत्र के सिरसा में लाला लक्ष्मी नारायण डिग्री कॉलेज सिरसा, प्रयागराज में प्रो0 राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज सम-सेमेस्टर परीक्षा 2023 के अन्तर्गत एलएलबी द्वितीय सेमेस्टर प्रथम पाली में प्रातः 08:00 बजे से 10:00 बजे तक की परीक्षा चल रही थी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 अखिलेश कुमार सिंह द्वारा संदिग्ध सूची महाविद्यालय को भेजी गयी थी उसमें से तीन छात्र एवं एक छात्रा सन्त सिंह लॉ कालेज, भुस्का, मेजा, प्रयागराज के दूसरे परीक्षार्थी के स्थान पर परीक्षा देते हुए पकड़े गये। जिसका नाम मुकेश द्विवेदी, सिद्वार्थ यादव के स्थान पर, दिव्यांक कुमार, यादराम के स्थान पर एवं दीक्षा सिंह, अरुणा सिंह के स्थान पर तथा सुरजीत सिंह, गवेन्द्र प्रताप सिंह के स्थान पर एलएलबी द्वितीय सेमेस्टर में परीक्षा दे रहे थे। इसमें एलएलबी द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा में कुल पंजीकृत 740 परीक्षार्थियों में 644 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी एवं शेष 96 छात्र अनुपस्थित थे उपस्थित परीक्षार्थियों में 08 परीक्षार्थी अनुचित साधन का प्रयोग करते हुए पकड़ा गया। इसके पूर्व दिनांक 03 जुलाई, 2023 को सुबह 06:00 बजे 10:00 बजे तक एलएलबी चतुर्थ सेमेस्टर में 07 परीक्षार्थियों को अनुचित साधन में पकड़ा गया। आज महाविद्यालय में सघन तलाशी के बाद इन 04 परीक्षार्थियों को कानूनी कार्यवाही करके पुलिस को सौप दिया गया। उक्त की जानकारी मीडिया प्रभारी डॉक्टर सच्चिदानन्द त्रिपाठी के द्वारा दिया गया। ये सभी परीक्षार्थी महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर महेन्द्र कुमार जायसवाल एवं सहायक केन्द्राध्यक्ष डॉ मनोज कुमार तिवारी के नेतृत्व में आन्तरिक सचल दल डॉक्टर सच्चिदान्द त्रिपाठी,डॉक्टर सुरेश कुमार द्विवेदी तथा डॉक्टर सिद्वार्थ तिवारी, डॉक्टर प्रकाश चन्द्र मिश्र एवं डॉक्टर दिव्या श्रीवास्तव के द्वारा गहन तलाशी में पकड़े गये।

मऊआइमा के दो अलग अलग गांवों में मार पीट कई घायल सात के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा थाना अंतर्गत दो अलग अलग गांव में पुरानी रंजिश को लेकर मार पीट में कई घायल हुए है ।पुलिस ने दोनों मामलों में सात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा के मरखामऊ गांव निवासी अच्छे अंसारी पुत्र रहमत उल्ला का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर उसके विपक्षी जब वह चाय की दुकान पर बैठा था। लाठी डंडे से मार कर जख्मी कर दिए। तथा जान से मारने की धमकी भी दी गई। अच्छे अंसारी ने मऊआइमा थाने में सालिम ,नाजिम ,गुलशन ,गुल्लू के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। उधर ग्राम घीनपुर तिलईबाजार निवासी यार मोहम्मद पुत्र अब्दुल वहाब का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर उसके विपक्षी धारदार हथियार से मार कर दिए। तथा मोबाइल तोड दिए। यार मोहम्मद ने मऊआइमा थाने में सब्बीर ,अरमान, सलमान के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

न्यूज झरोखा

रस्तीपुर से कांवरियों का दल जलाभिषेक हेतु बाबा बैद्यनाथ धाम प्रस्थान किया

जंघई। सावन के प्रथम दिवस मंगलवार को रस्तीपुर, गांव से बाबा बैद्यनाथ धाम में जलाभिषेक एवं पूजन अर्चन करने हेतु कांवरियों का दल गाजे बाजे ढोल नगाड़ों के साथ से प्रस्थान किया।आस्था व श्रद्धा का मास सावन में कावरियों द्वारा सर्व प्रथम सुल्तानगंज से गंगा स्नान के बाद बाबा का जलाभिषेक करने के लिए जल उठाकर बाबा बैद्यनाथ का जलाभिषेक कर दर्शन करेंगे। उसके बाद बाबा बासुकीनाथ का दर्शन के साथ ही राजगीर काशी विश्वनाथ वाराणसी दर्शन करके घर के लिए प्रस्थान करेंगे।विधि विधान व मंत्रोच्चारण के साथ पूजन करते हुए हर हर महादेव के गगनभेदी नारों के साथ भगवा मय कांवरियों ने काफी उत्साह व जोश के साथ घर परिवार गांव के सभी बड़ों का आशीर्वाद स्नेह लेकर प्रस्थान किया।कांवरियों में रस्तीपुर से रविशंकर पांडेय पत्नी सहित, मुकेश शर्मा, संतोष यादव, बबलू यादव, राजू, आशुतोष तिवारी, जयशंकर यादव, बनवारी लाल आदि लोग शामिल रहे।

सावन महीने के प्रथम दिवस पर कुंदौरा एवं चंद्रमौलेश्वर महादेव में हर-हर महादेव

जंघई। सावन महीने के पहले दिन कुंदौरा महादेव धाम एवं चंद्रमौलेश्वर महादेव धाम एवं क्षेत्र के अन्य शिवालयों में हर-हर महादेव, जय ओम शिवकारा की गूंज सुनाई दी। सुबह से ही श्रद्धालुओं की मंदिरों में भीड़ रही। वहीं शिव मंदिरों के साथ अन्य मंदिरों पर भी दिनभर भक्तों ने दर्शन पूजन अर्चन किया। सावन माह में शिवलिंगों का दूध, गंगाजल से अभिषेक किया जाता है शिवलिंगों को पुष्प, बेल पत्र, धतूरे से सजाकर महाआरती की जाती है। इस दौरान मंदिरों में घंटी, घडि?ाल, शंख व झालर के बीच भोलेनाथ के उद्घोष से माहौल भक्तिमय बना रहा। सावन माह में शिव महाभिषेक, महामृत्युंजय जाप तथा रुद्राभिषेक किया जाएगा। वहीं सावन मास में प्रत्येक शिव मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना का दौर चलेगा। इस बार सावन माह 4 जुलाई से 31 अगस्त तक चलेगा जिसमें सावन का पहला सोमवार 10 जुलाई को पड़ रहा है इस बार सावन में आठ सोमवार पड़ने वाले हैं 10 के बाद 17 जुलाई, 24 और 31 जुलाई, 7 अगस्त, 14 अगस्त, 21 और 28 अगस्त को सोमवार पड़ रहा है।

सहसों में पुराने बीडीओ की विदाई एवं नए का हुआ स्वागत

सहसों। विकास खण्ड सहसों के सभागार में मंगलवार को विकास खण्ड सहसों के खण्ड विकास अधिकारी श्याम नारायण चतुवेर्दी का स्थानांतरण जौनपुर होने पर विदाई समारोह कार्यक्रम आयोजित कर भावभीनी बिदाई किया गया। इसी के साथ अतिरिक्त प्रभार के रूप में विकास खण्ड-बहादुरपुर के खण्ड विकास अधिकारी देव कुमार यादव को सहसों विकास खण्ड की कुर्सी पर शोभायमान होते हुए उनका स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया कइस अवसर पर प्रमुख गीता सिंह ने पुराने वीडियो श्याम नारायण चतुवेर्दी को भावपूर्ण विदाई करते हुए नवागंतुक अतिरिक्त प्रभार का कार्यभार ग्रहण करने वाले खण्ड विकास अधिकारी बहादुरपुर देव कुमार यादव को सहसों में ब्लॉक की तरफ से शुभकामना एवं हार्दिक बधाई देते हुए पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस मौके पर राकेश बहादुर सिंह वरिष्ठ भाजपा नेता, प्रमुख प्रतिनिधि शिव नारायण सिंह गप्पू , नरेन्द्र दूबे एडीओ (पंचायत), संजय सिंह एडीओ, विजय कुमार कनिष्ठ सहायक, ग्राम पंचायत विकास अधिकारी राजेश सिंह, अश्वनी कुमार, ललिता यादव, मयंक मौल, शशी यादव, आसमा सिंह, राम बहादुर, अतुल त्रिपाठी, विवेक सिंह एवं अविनाश सिंह, कामरान, अंजनी,अजय कुमार , जयशंकर सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

सड़क बनी तालाब, समाजसेवी ने किया सड़क के गड्ढे में धान लगाने का ऐलान

जंघई। जंघई मछलीशहर मार्ग पर जंघई के प्रसिद्ध लड्डू वाले सीताराम चौरसिया के दुकान के सामने सड़क तालाब बनी पड़ी है इस पर ना ही किसी जनप्रतिनिधियों की नजर पड़ रही है और ना ही क्षेत्र के किसी सक्रिय समाजसेवी की। थाना मीरगंज की जंघई पुलिस चौकी, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया यहाँ से 100 मीटर से ज्यादा नही है और जंघई से मछलीशहर जाने का मुख्य मार्ग यही है।सरकार गड्ढा मुक्त सड़क होने का दावा पूरे प्रदेश में कर रही है लेकिन जनपद जौनपुर की अधिकतर सड़क गड्ढा युक्त ही दिखाई पड़ती है। भोगीपुर, सेमरी गांव निवासी समाजसेवी रोहित ब्राह्मण ने जंघई एवं क्षेत्रवासियों से निवेदन करते हुए कहा है कि इस विषय पर क्षेत्रवासियों को आगे आना चाहिए जनप्रतिनिधियों से उम्मीद ना करें। रोहित ने कहा कि जल्द ही इसी गड्ढे में धान लगाकर विरोध प्रदर्शन का कार्य मैं करूँगा और इस मुहिम में आप लोग मेरा सहयोग करें क्योंकि यह सार्वजनिक समस्या है व्यक्तिगत नहीं इसलिए सभी का सहयोग अपेक्षित है।

मनकामेश्वर धाम में शिव भक्तों ने किया जलाभिषेक

आस्था और भक्ति का प्रतीक है भगवान भूतेश का शिवलिंग

लालापुर। लालापुर क्षेत्र के मनकामेश्वर धाम में सावन माह के प्रथम दिन मंगलवार को 04 बजे भोर से ही शिव भक्तों ने जलाभिषेक किया। लालापुर क्षेत्र का सबसे प्राचीन शिव मंदिर है मनकामेश्वर धाम। शिव महापुराण के अनुसार भगवान राम ने वन गमन के समय मनकामेश्वर धाम शिवलिंग की स्थापना की थी। इस बार मंगलवार से सावन का पवित्र महीना शुरू होकर 31 अगस्त 2023 तक रहेगा। इसे शिव का महीना माना जाता है, क्योंकि सावन, दक्षिणायन में आता है। जिसके देवता शिव हैं, इसीलिए इन दिनों उन्हीं की आराधना शुभ फलदायक होती है। सावन के दौरान बारिश का मौसम होता है। पुराणों के मुताबिक शिवजी को चढ़ने वाले फूल-पत्ते बारिश में ही आते हैं इसलिए सावन में शिव पूजा की परंपरा बनी। स्कंद पुराण में भगवान शिव ने सनत्कुमार को सावन महीने के बारे में बताया कि मुझे श्रावण बहुत प्रिय है। इस महीने की हर तिथि व्रत और हर दिन पर्व होता है, इसलिए इस महीने नियम-संयम से रहते हुए पूजा करने से शक्ति और पुण्य बढ़ते हैं। कहा जाता है कि जो भक्त आस्था और भक्ति के साथ मनकामेश्वर धाम में पूजा अर्चना करता है, भगवान शिव उसकी सारी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

अध्यक्ष पद के पांच मंत्री पद के बिके तीन पर्चे

अध्यक्ष पद के दो लोगों ने तो मंत्री पद के लिए एक ने दाखिल किया नामांकन पत्र

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। बार एशोसिएशन तहसील कोरांव का चुनाव जैसे जैसे नजदीक आ रहा है, चुनावी सरगर्मी वैसे वैसे बढ़ रही है। बता दें कि बार एशोसिएशन तहसील कोरांव का चुनाव 17 जुलाई को सुनिश्चित है। जिसके क्रम में 4 जुलाई को पूर्व कोषाध्यक्ष योगेंद्र नाथ दुबे उर्फ राजू दुबे ने मंत्री पद हेतु अपना नामांकन पत्र सैकड़ो अधिवक्ताओ के साथ दाखिल किया। इन्होंने अधिवक्ताओ के बीच बैठक कर कहा कि अधिवक्ता हित हमारे लिए सर्वोपरि है। अधिवक्ताओ के मान सम्मान की लड़ाई मे हमेशा आगे रहूँगा। बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता रविन्द्र नाथ मिश्रा व संचालन सुनील कुमार पाण्डेय ने किया। इस मौके पर निर्वाचन अधिकारी अरुण मिश्रा बाबा ने बताया कि अध्यक्ष पद के लिए पांच नामंकन पत्रों की बिक्री हुई जिसमें विजय शंकर मिश्रा, व रामबहादुर सिंह ने अपना नामाकन पत्र दाखिल किया। इसी प्रकार मंत्री पद हेतु तीन नामांकन पत्रों की बिक्री हुई। जिसमें योगेंद्र नाथ दुबे ने पर्चा दाखिल किया। कोषाध्यक्ष पद हेतु तीन लोगों ने नामांकन पत्र खरीदा। जिसमें राजेश शुक्ला ने अपना पर्चा दाखिल किया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद हेतु तीन पर्चे बिके जिसमे महेंद्र प्रताप सिंह ने पर्चा दाखिल किया। आडिटर पद हेतु यादवेंद्र यादव ने एक पर्चा लिया पुस्तकालयाध्यक्ष पद हेतु एक पर्चा, वरिष्ठ कार्यकारिणी हेतु तीन व कनिष्ठ कार्यकारिणी हेतु आठ पर्चे बिके। निर्वाचन अधिकारी के साथ सहायक निर्वाचन अधिकारी बेचन लाल सिंह, श्री प्रकाश श्रीवास्तव मौजूद रहे। इस दौरान बार एशोसिएशन के अध्यक्ष उमाकांत तिवारी, श्री कांत मिश्रा, विनित मिश्रा, कृष्णा कांत पाण्डेय, देवकीनंदन मिश्रा, गणेश कुशवाहा, भास्कर यादव, शशि शेखर पाण्डेय, वेद प्रकाश प्रजापति, अशोक कुशवाहा, संतोष कुशवाहा, उमाशंकर शुक्ला समय लाल प्रजापति,पवन सिंह, रवि प्रकाश तिवारी, इन्द्र प्रकाश पाण्डेय, विवेक गौतम, अखिल दुबे आदि लोग मौजूद रहे।

गोष्ठी आयोजित कर मनाई गई स्वामी विवेकानंद की पुण्यतिथि

सहसों। अपनी तेजस्वी वाणी के जरिए पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का डंका बजाने वाले स्वामी विवेकानंद ने केवल वैज्ञानिक सोच तथा तर्क पर बल ही नहीं दिया, बल्कि धर्म को लोगों की सेवा और सामाजिक परिवर्तन से जोड़ा। उक्त विचार उमरी गांव स्थित शिव मंदिर के प्रांगण में मंगलवार को स्वामी विवेकानंद की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए युवा समाजसेवी अमन सिंह राजपूत ने लोगों के बीच व्यक्त किया। उन्होंने कहा स्वामी विवेकानंद पिता की मृत्यु के बाद अत्यंत गरीबी की मार से अपने चित्त को कभी डिगने नहीं दिया। संगीत, साहित्य और दर्शन में विवेकानंद को विशेष रुचि थी। तैराकी, घुड़सवारी और कुश्ती उनका प्रिय शौक था। उनके द्वारा मानवता की दिव्यता के उपदेश का स्वाभाविक, निर्भयता और व्यावहारिकता को अंग्रेजों ने स्वामीजी के जीवन की कई घटनाओं में इस निर्भयता का प्रत्यक्ष उदाहरण देखा था। स्वामी विवेकानंद के द्वारा दिए विचारों को लोगों ने आत्मसात भी किया। इस अवसर पर गोष्ठी में उपस्थित लोगों ने उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शत-शत नमन कर याद किया। गोष्ठी में प्रमुख रूप से प्रशांत सिंह, यीशु सिंह, अंकित राज, राजेन्द्र यादव, गगन शुक्ला, सोनू, रामबाबू, शिवकुमार सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

प्लास्टिक के थैलों इस्तेमान न करें, वितरण किया गया पांच सौ कपडे के झोले

नगर पंचायत में व्यसायिक एंव आवासीय क्षेत्रों में बांटे गए कपडे के झोले

मऊआइमा। मऊआइमा नगर पंचायत द्वारा इंटर नेशनल प्लास्टिक बैग फ्री दिवस पर सिंगल यूज प्लास्टिक रोकथाम के लिए भारी कदम उठाते हुए कपडे के झोले फ्री में वितरित किया गया। मऊआइमा नगरपंचायत में इन्टरनेशनल प्लास्टिक बैग फ्री दिवस पर सिंगल यूज प्लास्टिक रोक थाम के लिए प्रभावी कदम उठाते हुए। प्लास्टिक का किसी भी दशा में उपयोग न करने एंव कपडों के झोलों का प्रयोग करने की मुहिम चला कर आवासीय एंव व्यवसायिक क्षेत्रों में लगभग पांच सौ कपडे के झोले फ्री में वितरित किए। तथा कहा गया है कि शासन की ओर से प्लास्टिक के थैलों पर प्रतिबंध लगा है।तथा कहा गया कि सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग से पर्यावरण में खतरनाक दुष्परिणाम के बारे में अवगत कराया गया। । और आमजनमानस से अपील किया गया है वह सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग कत्तई न करें। इस अवसर पर नगर पंचायत मऊआइमा कार्यालय के ईओ प्रदीप कुमार मिश्रा, वरिष्ठ लिपिक हीरालाल,कम्प्यूटर ऑपरेटर आशीष कपूर ,वलीद अंसारी,रखशान आरिफ, कुल्लू ,शिव आदि कर्मचारी एंव अधिकारियों ने लगभग पांच सौ कपडे के झोले व्यवसायिक, आवासीय क्षेत्रों में फ्री वितरण किए।

अपने बरखा गीतों का लोकरंग सहेजना जरूरी

सावन व कजरी एक दूसरे के पर्याय : अशोक बेशरम

अखंड भारत संदेश

करछना। वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले लोकगीतों में कजरी का प्रमुख स्थान है। अपने में प्रकृति के समग्र को समाहित किए यही गीत आकाश में छाये कारे-कजरारे बादल और पुरवाई के झोंके में रिमझिम फुहार के बीच अपने अनूठे इन्द्रधनुषी रंगों के साथ हमारी लोक संस्कृति, सामाजिक परंपरा और माटी की सोंधी खुशबू के परिचायक हैं। हमें चाहिए कि बाग बगीचों में,खेतों सिवानों में और घर आंगन में अपने कजरी गीतों की गूंज का सिलसिला कायम रखें। यह बातें आकाशवाणी दूरदर्शन के ग्रामीण कार्यक्रमों की प्रस्तोता रहे,माटी के गीतों के बदलते लोकरंग पर शोध कर रहे चर्चित हास्य कवि और मंच संचालक अशोक बेशरम ने कही। उन्होंने बताया कि गहन ताप के संताप के व्याकुल प्रकृति के पोर-पोर को संतृप्त करती वर्षा की बूंदों के बीच हरियाली काआगाज करती नूतन सर्जना का यह उल्लास कजरी गीतों के साथ पूरे समाज को संतृप्त करता है। मूलतः पति वियोग और विरह का प्रतीक यह कजरी गीत अतीत से ही अपने देशज रंग को समेटे अपनी बोली बानी अनुरूप हमारे समाज में रचे-बसे हैं। कजरी का उद्भव स्थल उत्तर प्रदेश का मिजार्पुर जनपद माना जाता है जहां से चलकर अपने अनेक रूपों में लगभग 86 प्रकार के बोल,धुन,तर्ज पर लोक गायकों ने इस गीत की अनुरंजकता को सहेजे रखा। मिजार्पुर कइला गुलजार हो कचौड़ी गली सून कइला बलमू हरे रामा सावन माह सुहावन पिया परदेसवा छाए ना। रुनझुन खोला हो केवरिया,हम विदेशवा जाबइ ना। हमइ ना सवनवा सोहाय हो,पिया परदेसवा में छाए। पिया मेंहदी मंगा द मोती झील से,जाके साइकिल से ना। लक्ष्मन कहां जानकी हुइ हैं, घेरे विकट अंधेरिया ना। जैसे तमाम बोल के साथ बनारसी, चौलर, बेंगा, घसिया, बलियावटी मैनपुरिया, इलाहाबादी, एकलवरा, शायरी, सोनाही, झालरिया, ढुनमुनिया,जैसे अनेक प्रकारों को समाहित किए यह गीत हमारे घर आंगन को गुलजार करते रहे। खेतों-सिवानों में धान की रोपाई के समय गाये जाने वाले लगवही गीत के रूप में -ताने हुई हैं छतवा,पहिरे हुई हैं मोजवा हो ना,जैसे गीतों की गूंज सुनाई पड़ती थी। बागों में पेड़ों पर पड़े झूलों पर प्रायःगाये जाने वाले झूला गीत-पटरा बंद करा हो बनवारी,हम घर मारी जाबै ना,अब कम सुनाई पड़ते हैं। गांव की चौपालों में कभी जवाबी कजरी के आयोजन होते थे। आल्हा गाने वाले लोग भी इसी मौसम में मस्ती के साथ मल्हार और आल्हा गाकर मौसम का लुफ्त उठाते थे। हालांकि चार दशक पहले वाले गांव में रचा बसा कजरी गीतों का वह माहौल कम जरूर हुआ है किंतु अपने इन मौसमी गीतों को सहेजने के लिए आकाशवाणी, दूरदर्शन जैसे माध्यम एक बार फिर लोक कलाकारों के माध्यम से इस परंपरा को सहेजने में जुटे हैं।आज के बदलते दौर में रीमिक्स सॉन्ग को पसंद करने वाली युवा पीढ़ी को भी चाहिए कि अपने पुरखों की विरासत रहे कजरी गीतों की उस परंपरा को सहेजने में,इन्हें मंचों पर जीवंत करने में और इन गीतों का मर्म सीखने, सहेजने के लिए आगे आएं जिससे अपने मौसमी गीतों के इस दस्तावेज को संजोया जा सके और बरखा गीतों की मस्ती के साथ हमारी लोक परंपरा संस्कृतिऔर लोकगीतों का वह रंग अपनी विरासत और जीवन के उल्लास से तार -तार जुड़ा रहे।

मोदी सरकार ने लिए देश हित में ऐतिहासिक फैसले : सांसद

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। केंद्र की मोदी सरकार तथा विकास की नीतियों के 9 साल बेमिसाल के तहत भाजपाई लोगों के बीच पहुंचकर उपलब्धियां गिना रहे। लगातार भाजपाई क्षेत्रीय लोगों के बीच पहुंचकर 9 साल की उपलब्धियां गिनाते हुए पत्रक बांटकर 2024 में पुनः केंद्र में मोदी सरकार के हाथों को मजबूत करने के लिए लोगों से अपील किया। मंगलवार को सांसद डॉक्टर रीता बहुगुणा जोशी ने मेजारोड बाजार के व्यापार मंडल कार्यालय पर जन संपर्क करते हुए केंद्र सरकार के 9 साल की उपलब्धियां गिनाई। सांसद रीता बहुगुणा जोशी ने कहा कि केंद्र में मोदी तथा प्रदेश में योगी की सरकार जनता के हित के लिए काम कर रही। डबल इंजन की सरकार समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्तियों तक योजनाओं का लाभ पहुंचा रहे। जिन लोगों को डबल इंजन सरकार की योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा उन्हीं योजनाओं का लाभ देने के लिए जनसंपर्क किया जा रहा है किसी भी समस्या पर आप मुझे जानकारी दीजिए जिससे कि सरकार के द्वारा मिल रही योजनाओं के लाभ से वंचित न हो पाए। आगे कहा कि एक देश एक निशान एक प्रधान मिशन के तहत कश्मीर में लगा 370 धारा को हटाया गया बगैर बिचौलियों के किसानों के खातों में सीधा राशि पीएम किसान योजना के तहत पहुंच रहा। हर घर जल नल से कई गांव को लाभ मिला रोजगार के क्षेत्र में भी बढ़ावा दिया गया है। वही व्यापार मंडल अध्यक्ष पप्पू उपाध्याय ने व्यापारियों की समस्याओं को लेकर सांसद को अवगत कराया जिसमें प्रमुख समस्याएं बाजार में डस्टबिन, हैंड पंप, सुलभ शौचालय, स्ट्रीट लाइट, जल निगम की आपूर्ति बाधित तथा परिवहन विभाग की बसों के ठहराव न होने की बात को लेकर सांसद से शिकायत दर्ज कराई अध्यक्ष ने कहा कि व्यापारी हित में कोई भी ठोस कदम नहीं उठाया गया है जिससे व्यापारियों को परेशान होना पड़ता है वहीं सांसद ने अध्यक्ष को आश्वस्त करते हुए कहा कि जितनी भी समस्याएं हैं सारी समस्याओं का जल्द ही समाधान किया जाएगा सांसद ने व्यापारियों की बारी बारी से समस्याएं सुनी और पत्रक के माध्यम से मोदी सरकार की उपलब्धियां गिनाई। इस अवसर पर पूर्व विधायक आनंद पांडे उर्फ कलेक्टर पांडे, बाबा ओझा, राजेश द्विवेदी आशीष मिश्रा, अमरेश तिवारी, रिंकू ओझा, शिवम शुक्ला, समि शुक्ला, आकाश पाण्डेय, मुन्ना पाण्डेय, ओपी पाण्डेय, गाना गुरु, राम शिरोमणि तिवारी,कृष्ण प्रकाश उपाध्याय, मौलाना अब्दुल कलाम, नईम अहमद, कलजुग तिवारी नागर गुप्ता मनोज तिवारी सहित आदि लोग मौजूद रहे।

सिंगरामऊ गांव को विद्युत उपकेन्द्र थानापुर से जोड़ने पर उपभोक्ताओं में भारी आक्रोश

अखंड भारत संदेश

सहसों। विद्युत विभाग के अधिकारियों द्वारा सिंगरामऊ गांव को विद्युत उपकेन्द्र मलावां सहसों से अलग कर थानापुर विद्युत उपकेन्द्र से जोड़ा जा रहा है जिससे उपभोक्ताओं में खासा आक्रोश व्याप्त हैं। क्षेत्र के ग्राम सभा सिगरामऊ का विद्युत आपूर्ति का संचालन मलावां सहसों विद्युत उपकेन्द्र के बसमहुआ फिडर से होकर कई वर्षों से संचालित होता आ रहा है। जिससे उपभोक्ताओं में बिना कोई परेशानी के विद्युत सप्लाई मिल रही थी। परन्तु विभाग द्वारा सिंगरामऊ गांव को अलग करके थानापुर विद्युत उपकेन्द्र से जोड़ा जा रहा है। जिसके चलते सिंगरामऊ गांव के उपभोक्ताओं में विद्युत विभाग के प्रति नाराजगी के साथ भारी आक्रोश व्याप्त है। इस संबंध में क्षेत्रीय विधायक प्रवीण पटेल को अंदावां स्थित आवास पर जिला उपाध्यक्ष भाजपा किसान मोर्चा गंगापार भूपेन्द्र मिश्रा के नेतृत्व में उपभोक्ताओं ने पहुंचकर घेराव करते हुए समस्या से अवगत कराया गया। जिस पर क्षेत्रीय विधायक ने उपभोक्ताओं की समस्या के संबंध में फोन करके विभाग के ए सी, एसडीओ एवं जेई से बात करते हुए आदेशित किया कि सिंगरामऊ गांव को मलावां सहसों विद्युत उपकेन्द्र से ही जुड़ा रहने दें ताकि उपभक्ताओं को विद्युत सप्लाई में कोई असुविधा न हो सके। आश्वासन देते हुए क्षेत्रीय विधायक ने कहा सिंगरामऊ गांव की विद्युत सप्लाई मलावां सहसों विद्युत उपकेन्द्र से ही संचालित होता रहेगा। घेराव करने वालों में प्रमुख रूप से डॉक्टर धीरेन्द्र मिश्र, आशीष मिश्र, अधिवक्ता संदीप दूबे, ग्राम प्रधान राजेश खन्ना, आदर्श पांडे, अधिवक्ता ज्ञानेन्द्र मिश्र, नेब्बू मिश्र, विद्याधर पांडे, जिम्मी मिश्र, सत्यम श्रीवास्तव, कमलेश मिश्रा, राकेश मिश्र, रवि कुमार, वेदमणि तिवारी, शेष कुमार दूबे, आशू श्रीवास्तव, विवेक कुमार, संतोष कुमार, दीनदयाल एवं विनोद कुमार मिश्र सहित सैकड़ों उपभोक्ता शामिल रहे।

नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंघई में बीएड सेकंड सेमेस्टर की परीक्षा प्रारंभ

जंघई। नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंघई में पूर्वांचल विश्वविद्यालय द्वारा संचालित बीएड सेकंड सेमेस्टर के छात्र छात्राओं की परीक्षा मंगलवार से प्रारंभ हो गई ।प्राचार्य एवं केंद्राध्यक्ष प्रोफेसर राजीव मालवीय ने बताया कि हमारे महाविद्यालय में बीएड की परीक्षा का संचालन परीक्षा विभाग द्वारा शत प्रतिशत नकल विहीन कराई जा रही है। किसी भी छात्र, छात्राओं को नकल करने की इजाजत नहीं है जो भी नकल करते हुए पकड़ा जाएगा तत्काल उसको अनुचित साधन का प्रयोग करने का दंड मिलेगा। विभिन्न महाविद्यालयों के आये सेंटर सहित हमारे महाविद्यालय के छात्र छात्राओं को मिलाकर करीब 6 सौ से अधिक छात्र छात्राओं ने मंगलवार को बीएड सेकंड सेमेस्टर की परीक्षा दिया ।परीक्षा में महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी पूरी उर्जा से सहयोग में लगे हुए हैं।

खबर संक्षेप

मेजा में मुआवजे के लिए किसान से हजारों की ठगी

प्रयागराज। मेजा थाना क्षेत्र के कठौली गांव का एक किसान साइबर ठगों के चक्कर मे फंस गया। रेल विभाग द्वारा अधिग्रहित भूमि के मुवावजा देने की आड़ में खाते से पूरा पैसा निकाल लिया है। पीड़ित ने मेजारोड चौकी पर तहरीर देकर न्याय की मांग की है।कठौली में फ्रेट कॉरिडोर की वजह से यहां रेल गेट बंद कर गांव के लोगों के आवागमन के लिए नई सड़क का निर्माण कराया जा रहा है। सड़क के लिए किसानों की अधिग्रहित जमीन के मुआवजे का भुगतान नहीं हो पाया है।इसी की आड़ में किसी साइबर ठग का कठौली के युवा किसान आदर्श कुमार के मोबाइल पर सोमवार को फोन आया कि आपके जमीन का मुआवजा भेजना है। इसके लिए ठगों ने उनका बार कोड मांगा। आदर्श ने जैसे ही बार कोड भेजा उसके कुछ देर बाद पता चला कि ठगों ने खाते से बारह हजार आठ सौ पैंसठ रुपये पार कर दिया है। भुक्तभोगी के मोबाइल पर मैसेज आते ही उसके होश उड़ गए। भुक्तभोगी ने आज मेजारोड पुलिस चौकी पर साइबर ठगों के खिलाफ तहरीर देते हुए कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है। उक्त प्रकरण में मेजा रोड़ चौकी प्रभारी रामभवन वर्मा ने बताया कि पीड़ित किसान द्वारा तहरीर मिली है। इसकी गम्भीरता पूर्वक जांच कराई जा रही है। जल्द ही अभियोग दर्ज कर कठोर कार्यवाही की जाएगी।

समूह के कर्ज में डूबे मजदूर ने की-आत्महत्या

पत्नी ने स्वरोजगार के लिए लिया था कर्ज, लौटाने का था दबाव, लटक गया फांसी पर

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। घूरपुर थाना अंतर्गत मोहद्दीनपुर गांव में कर्ज में डूबे एक मजदूर ने मंगलवार शाम को फांसी लगाकर जान दे दी। घरवालों ने देखा तो रोना पीटना शुरू हो गया। सूचना पर पहुंची घूरपुर पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद उसकी लाश को कब्जे में लेकर कर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया।

समूह के लोग कर्ज वापसी के लिए बनाया गया दबाव

यमुनानगर के घूरपुर थाना अंतर्गत मोहद्दीनपुर गांव निवासी सुमित कुमार भारतीय उर्फ भैया (24) मेहनत मजदूरी कर पत्नी और तीन छोटे बच्चों का भरण पोषण करता था। उसकी पत्नी ने गांव में चल रहे माइक्रो फाइनेंस के समूह से रोजगार के लिए कर्ज ले रखा था, लेकिन रोजगार नहीं चला। जिससे वह कर्ज लौटा नही पाया। समूह से लिया गया कर्ज ब्याज सहित बढ़कर लगभग एक लाख के आसपास हो गया। समूह के लोग कर्ज वापसी के लिए सुमित और उसकी पत्नी पर लगातार दबाव बना रहे थे।

कमरे में फांसी लगाकर दे दी जान

पिछले तीन दिनों से वह कर्ज वापसी के लिए पैसे के इंतजाम में इधर-उधर हाथ पैर मार रहा था। मंगलवार की सुबह भी वह घर से पैसे की व्यवस्था करने की बात कहकर निकला था। दोपहर लौटकर आया तो उदास और गुमसुम था। सायं लगभग चार बजे परिवार के अन्य लोग घर के बाहर गए तो उसने कमरे में फांसी लगाकर जान देदी। एके घंटे बाद घर के लोग लौटे तो उसे फंदे पर झूलता हुआ पाया। सूचना पर पहुंची घूरपुर थाने की पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मजदूर की मौत से परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।थाना के प्रभारी इंचार्ज ताराचंद्र ने बताया कि कोई सुसाइड नोट नही मिला है। घरवाले जरूर कह रहे है कि वह समूह के कर्ज से परेशान था। मामले की जांच की जा रही है। अभी कोई तहरीर नहीं मिली है।

लोक सेवा आयोग ने 100 विशेषज्ञ को किया बाहर

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने सोमवार को बड़ी कार्रवाई की है। गुणवत्तापूर्ण कार्य नहीं करने वाले 100 विशेषज्ञों को पैनल से बाहर का रास्ता दिखा दिया है। ये विशेषज्ञ आयोग के गोपनीय कार्यों में लगातार लापरवाही कर रहे थे। आयोग ने गुणवत्ता सुधार के लिए पैनल में नए विशेषज्ञों को शामिल करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। आयोग की परीक्षाओं के यही विशेषज्ञ प्रश्नपत्र तैयार करते थे। इसके अलावा साक्षात्कार में भी इसी पैनल से विशेषज्ञों को लगाया जाता था। कॉपियों का मूल्यांकन भी इन्हीं के जिम्मे थे। लगातार शिकायतों के बाद आयोग ने परीक्षा प्रक्रिया में सुधार और पारदर्शिता के लिए विभिन्न विषयों से संबंधित विशेषज्ञों की सूची की समीक्षा कराई थी। इसके बाद गुणवत्तापूर्ण कार्य न करने वाले विशेषज्ञों को चिह्नित किया गया। समीक्षा के बाद आयोग ने 100 विशेषज्ञों को पैनल से बाहर कर दिया।उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग ने परीक्षा प्रक्रिया को और अधिक गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए पैनल में देशभर के विशिष्ट विशेषज्ञों को शामिल किया है।

आयोग ने कुछ समय से पीसीएस के साक्षात्कार में प्राथमिकता के आधार पर सेवानिवृत्त कुलपतियों, पूर्व न्यायाधीश कार्यरत व पूर्व आईएएस-आईपीएस अधिकारियों, सेना से रिटायर अफसरों को शामिल किया है।

न्यूज झरोखा

नैनी में यमुना का जलस्तर 24 घंटे में एक मीटर 41 सेमी बढ़ा

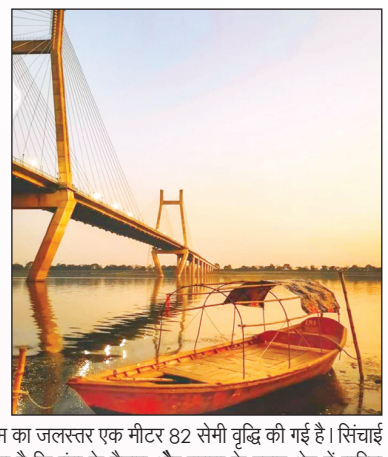

नैनी। नैनी में यमुना का जलस्तर 24 घंटे में एक मीटर 41 सेमी बढ़ा है। नैनी में मंगलवार सुबह आठ बजे यमुना का जलस्तर 74.43 मीटर दर्ज किया गया। फाफामऊ में गंगा का जलस्तर भी 24 घंटे में 63 सेमी बढ़ा गंगा-यमुना के जलस्तर में वृद्धि से सावन के शुरू में संगम क्षेत्र जलमग्न होने लगा है। गंगा-यमुना के साथ संगम का जलस्तर 96 सेमी बढ़ा है। गत दिवस संगम का जलस्तर 86 सेमी बढ़ा था। इस प्रकार दो दिन में संगम का जलस्तर एक मीटर 82 सेमी वृद्धि की गई है। सिंचाई विभाग के इंजीनियरों का कहना है कि गंगा के मैदान और यमुना के प्रवाह क्षेत्र में बारिश से प्रयागराज में संगम का जलस्तर तीन दिन तक बढ़ सकता है।

कटान से सड़क छतिग्रस्त मार्ग को पुलिस ने बंद कराया

झूंसी। कटान की चपेट में आने की वजह से शास्त्री ब्रिज के नीचे से छतनाग जाने वाले मार्ग पर मिट्टी डाल कर पुलिस ने मंगलवार की शाम मार्ग से हो रहे आवागमन को पूरी तरह से बंद करा दिया। कटान की वजह से स्थानीय लोगो मे भी दहशत का माहौल है। कुंभ व माघ मेले के साथ साथ अन्य दिनों में स्थानीय लोगो के आवागमन के लिए पुरानी जीटी रोड से शास्त्री ब्रिज के नीचे से छतनाग नागेश्वर मंदिर जाने के लिए इंटरलाकिंग सड़क का निर्माण कराया गया है। यह सड़क महीनों से हो रही गंगा की कटान की चपेट में है। कटान के कारण सड़क के किनारे सीवर लाइन की पाइप छतिग्रस्त हो चुकी है। पार्षद शिव नारायण यादव ने मामले की शिकायत जिलाधिकारी व सिंचाई विभाग से की पर कटान पर कोई ध्यान नही दिया गया। अब कई मीटर सड़क कटान की जद में है। अंगद यादव ने बताया कि कटान की वजह से सड़क के नीचे की मिट्टी बह गई है सड़क बैठ सकती है। पुलिस ने बताया कि खतरे को देखते हुए मार्ग पर आवागमन बंद करा दिया गया।

एमपी बिरला शिक्षा भवन में ईको क्लब प्रतियोगिता सम्पन्न

झूंसी। एमपी बिरला शिक्षा भवन एवं इण्टर कालेज में पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए सोमवार को ईको क्लब प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को मिट्टी के गमले में फूल का पौधा लगाकर और गमले को सजाकर लाया। प्रतियोगिता में सभी बच्चों ने बढ़-चढ़ कर प्रतिभाग किया। जिसमे कक्षा 6 की विधि तिवारी प्रथम, कक्षा

मुट्ठीगंज में मेडिकल कंपनी के एसीएम ने किया सुसाइड

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मुट्ठीगंज थाना अंतर्गत महावीरन गली में रहने वाले एक दवा कंपनी की एसीएम (एरिया सेल्स मैनेजर) ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। घरवालों के मुताबिक मोहल्ले की एक लड़की से 24 नवंबर को उसकी शादी होने वाली थी। उसी से वह फोन पर बात करता था। दोनों में सोमवार की फोन पर ही विवाद हुआ था। आशंका है कि उसी में उनके बेटे ने जान दी है। नगर के मुट्ठीगंज थाना अंतर्गत महावीरन गली मोहल्ला निवासी प्रदीप कुमार सिन्हा मोहल्ले में ही मेडिकल स्टोर चलाते हैं। जिसमें उनका बड़ा बेटा शेखर सिन्हा भी बैठता है। दूसरे नंबर का बेटा सत्यम सिन्हा (28) एक मेडिकल कंपनी में एरिया सेल्स मैनेजर (एसीएम) के पद पर कार्यरत था। भाई शेखर सिन्हा ने बताया कि सोमवार शाम को वह अपने काम से लौटा और फिर कही चला गया। रात में लौटा तो सीधे अपने कमरे में चला गया। सुबह जब काफी देर तक नहीं निकला तो 10.30 बजे के आस पास उसकी मां सीमा सिन्हा उसे जगाने गई। मां ने दरवाजा खोला तो अंदर सत्यम को फंदे से लटकते हुए पाया। यह देख मां की चीख निकल गई। घरवाले पहुंचे। उसे फंदे से उतारकर अस्पताल ले गए। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना पर मुट्ठीगंज पुलिस पहुंची और शव को कब्जे में लेकर सत्यम के कमरे की तलाशी ली। तलाशी के दौरान कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। पुलिस ने उसका मोबाइल अपने कब्जे में ले लिया है। उसके बड़े भाई शेखर सिन्हा ने बताया कि सत्यम की शादी तय हो गई थी। मोहल्ले की एक लड़की के साथ उसका 24 नवंबर 2023 को उन दोनों की शादी होनी थी। दोनों मोबाइल पर बातचीत करते थे। शेखर के मुताबिक हो सकता है कि फोन पर उन दोनों के बीच कोई विवाद हुआ हो। जिससे तैस में आकर उसने सुसाइड कर लिया हो। यह तो पुलिस की जांच में हो पता चलेगा। मुट्ठीगंज थाना प्रभारी आशीष चौबे ने बताया कि नवंबर में उसकी शादी होने वाली थी। उसका मोबाइल मिला है। कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। घरवालों ने उसकी होने वाले पत्नी से झगड़े होने की वजह से आत्महत्या करने के बाद बताई है। फिलहाल शव को पोस्टमार्टम हाउस भेजा गया है।

नैनी स्थित श्री सोमेश्वर महादेव मंदिर में सुबह से ही जलाभिषेक के लिये लगा तांता

नैनी। नैनी मंगलवार से सावन का महीना शुरू हो गया। इस बार शिवालयो मे 59 दिनो महादेव की गूंज रहेगी। जानकारो के मुताबिक 19 साल बाद यह अद्भुत संयोग आया है। सावन के पहले दिन श्री सोमेश्वर महादेव मंदिर में जलाभिषेक करने के लिए सुबह से ही भक्तों की कतारें मंदिरो के बाहर और अंदर देखने को मिली। इस दौरान पुलिस की चाक चौबंद व्यवस्था रही। सावन मास का प्रारंभ हो गया है। 19 साल बाद शिव भक्तों को महादेव की पूजा करने के लिए पूरे 59 दिन का यह अद्भुत सन्योग मिला है। मंगलवार को नैनी के अरैल घाट पर बने पौराणिक महत्व के श्री सोमेश्वर महादेव मंदिर पर सुबह से ही भक्तों का जलाभिषेक करने के लिये तांता लगा रहा। आपको बता दे की अग्निपुराण में वर्णित नैनी स्थित सोमेश्वर महादेव की अपनी महिमा चमत्कारिक है। गौतम ऋषि से श्राप मिलने के बाद चंद्रदेव ने इस शिवलिंग की स्थापना की थी। यहां की मान्यता है कि सावन मास में लगातार एक माह तक इस शिवलिंग का जलाभिषेक और दर्शन करने से कुष्ठ रोग ठीक हो जाता है। खास बात यह है कि हर माह के कृष्ण और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर मंदिर के शिखर पर लगा त्रिशूल की दिशा स्वयं बदल जाती है। श्री सोमेश्वर महादेव मंदिर के पुजारी शैल पूरी ने बताया कि इस बार का सावन बहुत खास है। नैनी के सोमेश्वर महादेव मंदिर में सुबह 4 बजे से ही भक्तों का जमावड़ा लगा हुआ है। शिवालय में हर हर महादेव के नारे गूंज रहे हैं। पहला सोमवार 10 जुलाई को है जिसको लेकर मंदिर प्रशासन ने विशेष तैयारी की है 19 साल बाद ऐसा संयोग बन रहा है कि सावन पूरे 59 दिन का मनाया जाएगा। इस सावन में जो भी भोले बाबा की पूजा-अर्चना पूरे मन से करेगा उसे मनवांछित फल मिलेगा।

धूमनगंज में 13 बीघे में की गई अवैध प्लाटिंग ध्वस्त

अखंड भारत संदेश

गयासुद्दीनपुर, विष्णुपुरी में चला बुलडोजर, बाउंड्रीवॉल तोड़ी, बड़ी संख्या में फोर्स रही तैनात

प्रयागराज। धूमनगंज थाना क्षेत्र में विकास प्राधिकरण पीडीए ने मंगलवार को एक बार फिर गयासुद्दीनपुर और धूमनगंज थानाक्षेत्र में की गई 13 बीघे अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त कर दिया। इन जमीनों पर बनाए गए बाउंड्री वॉल को भी बुलडोजर चलाकर ढहा दिया गया। इस दौरान एहतियातन बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स तैनात रही। प्रयागराज विकास प्राधिकरण शहर के चारो ओर बेतरतीब और अवैध रूप से की जा रही प्लाटिंग के खिलाफ अभियान चला रहा है। इसी कड़ी में 4 जुलाई को जोनल अधिकारी बीपी सिंह के नेतृत्व में जोन संख्या एक के उपजोन बी में की जा रही अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त करने का निर्णय लिया गया था। इसी कड़ी में उदय यादव पुत्र थारा सिह द्वारा एसटीपी के बगल में गयासुद्दीनपुर धूमनगंज में 3 बीघे में अवैध रूप से प्लाटिंग की जा रही थी। इसकी सूचना पीडीए के अधिकारियों को मिलने पर इसे ध्वस्त करने के लिए मंगलवार को तोड़ू दस्ता वहां पहुंच गया। मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस पफोर्स भी मौजूद रही। पीडीए के अधिकारियों की मौजूद्गी में इस अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त कर दिया गया। इसके अलावा विष्णुपुरी धूमनगंज में 10 बीघे में जैद द्वारा अवैथ रूप से प्लाटिंग की जा रही थी। इसकी जानकारी होने पर अवर अभियंता अशोक कुमार सिंह व पीडीए प्रवर्तन टीम की मौजूदगी में बुलडोजर चलाकर अवैध रूप से की गई प्लाटिंग को ध्वस्त कर दिया गया।

वृक्ष धरा का भूषण है करता दूर प्रदूषण है : प्रागी लाल वर्मा

अखंड भारत संदेश

सोरांव। सरकार ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी वन महोत्सव कार्यक्रम 1 जुलाई से 7 जुलाई तक मनाने के लिए वन विभाग को आदेशित कर दिया गया है इसी के तहत सामाजिक वानिकी वन प्रभाग प्रयागराज के नेतृत्व में वन विभाग रेंज सोरांव ने मंगलवार को सरायलाल खातून से जुड़ापुर दादूपुर मार्ग मे वन महोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। तथा पौधों का रोपण किया गया हालांकि इस कार्यक्रम में शीशम के 30 पौधे व कंजी के 15 पौधों को रोपित किया गया। इस कार्यक्रम में समाजसेवी हाजी इलियास खान ने उपस्थित सभी लोगों को वृक्ष लगाओ पानी बरसाओ तथा पेड़ लगाओ जीवन बचाओ का नारा देकर सभी को जागरूक भी किए। प्रत्येक ग्राम वासियों को कम से कम अपने आने वाली पीढ़ियों को सही ढंग से जीवन जीने के लिए एक-एक पौधों का रोपण करने के गुजारिश भी किए। इतना ही नहीं क्षेत्राधिकारी वन विभाग प्रागी लाल वर्मा ने कहा कि वृक्षारोपण के बुनियादी लाभों में से एक यह है कि वे जीवन देने वाली ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और जानवरों द्वारा छोड़ी गई कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं। हालांकि पेड़ न सिर्फ हमें ऑक्सीजन देते हैं बल्कि फल, लकड़ी, फाइबर, रबर आदि और भी बहुत कुछ प्रदान करते हैं। पेड़ पशुओं और पक्षियों के लिए आश्रय का भी काम करते हैं। इस मौके पर मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य सोरांव खिन्नी लाल व उसरही ग्राम प्रधान पति अवधेश कुमार,मो0 इलियास खां एवम सोरांव रेंज के वन क्षेत्राधिकारी सोरांव प्रागी लाल, वन दरोगा शैलेश कुमार, वन रक्षक सोनी,अनुश्रवण एवम मूल्यांकन इकाई प्रयागराज एवम अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

सुनील कुमार को सौंपी गई मेजा ऊर्जा निगम की कमान

अखंड भारत संदेश

सुरक्षा समय बद्धता और अनुशासन के मूल्यों पर निगम को नई ऊंचाइयों पर ले जाना ही प्राथमिकता

मेजा। सुरक्षा समयबद्धता एवं अनुशासन के मूल्यों को अपनाते हुए मेजा ऊर्जा निगम को उत्कृष्टता के साथ विकास की नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। क्योंकि प्रयास करने से मंजिल एक न एक दिन अवश्य मिलती है। उक्त बातें मेजा ऊर्जा निगम के नए मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील कुमार ने मंगलवार को निगम की कमान संभालने के पश्चात अधिकारियों कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कही। उल्लेखनीय है कि बी आई टी मेसरा से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री धारक सुनील कुमार को एन टी पी सी के कार्य में 37 वर्षों का अनुभव है। वे सिंगरौली दादरी लारा एस एस सी विंध्याचल तथा दक्षिणी क्षेत्र के मुख्यालयों में विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे हैं। मेजा ऊर्जा निगम की कमान संभालने के पूर्व वह एन टी पी सी रामगुंडम व तेलंगाना इकाइयों में बतौर कार्यकारी निदेशक तैनात रहे। उनका मानना है कि किसी भी मंजिल को पाने के लिए निरंतर प्रयास करना आवश्यक है। निगम के सभी अधिकारी कर्मचारी सुरक्षा समयबद्धता और अनुशासन के मूल मंत्रो अपनाए तथा निगम को उत्कृष्टता के साथ साथ समग्र विकास नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए मेहनत और ईमानदारी के साथ कार्य करें। इस मौके पर महाप्रबंधक (वो एंड एम) सरित माहेश्वरी (महाप्रबंधक आपरेशन) अजीत बसाक (महाप्रबंधक मेंटिनेंस) जी पी सिंह (महाप्रबंधक सी एंड एम) पी के साबत (महाप्रबंधक प्रोजेक्ट) एस बी सिंह तथा अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) अखिल पटनायक के अलावा निगम के कई अन्य अधिकारियों कर्मचारियों ने नवागंतुक मुख्य कार्यकारी अधिकारी से रूबरू होकर स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

जयकारों के साथ बाबा अमरनाथ यात्रा के लिए रवाना हुआ 57 श्रद्धालुओं का जत्था

अखंड भारत संदेश

महापौर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना की बस, शिव भक्तो में उत्साह

नैनी। नैनी संगम नगरी से शिवभक्तों का जत्था सोमवार को बाबा अमरनाथ का दर्शन करने के लिए यात्रा पर निकला। हर-हर महादेव के जयकारों के बीच शिवभक्त बस द्वारा दर्शन करने के लिए रवाना हुए। हर-हर महादेव के उद्घोष से वातावरण गूंज उठा। जिससे पूरा पूरा माहौल शिवमय हो गया 17 जुलाई को शिवभक्त दर्शन कर प्रयागराज वापस आएंगे। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी माँ मधुरी वेलफेयर फाउंडेशन के तत्वाधान में यात्रा नैनी के कॉटन मील तिराहा से बड़े ही धूमधाम के साथ बाबा बफानीं के दर्शन हेतु यात्रा निकली। जिसके बाद माँ मासुरिया माई मंदिर किडगंज जैसे ही पहुंची वैसे ही स्थानीय लोगो ने बाबा बफानीं की जय, जय माता दी, हर हर महादेव के जयकारों से पूरा माहौल भक्ति मय हो गया। इसके पूर्व बतौर मुख्य अतिथि के रूप में महापौर गणेश केसरवानी ने हरी झण्डी दिखाकर यात्रा को रवाना किया। इस मौके उन्होने कहा बाबा बफानीं की कृपा सब पर बनी रहे। यात्रियो के लिए मंगलकामना करता हूँ। जिसके बाद डीजे की धुन पर थिरकते हुए यात्री अपने गतंव्य मार्ग की ओर बढ़ने लगे। समाजसेवीयों द्वारा जगह - जगह प्रसाद का वितरण भी किया गया। यात्रा संयोजक श्याम बहादुर श्रीवास्तव ने बताया कि यह यात्रा प्रयागराज से शुरू होकर कड़े धाम, ताजमहल, मथुरा, वृन्दावन, बाके बिहारी मन्दिर, बरसाना, प्रेम मन्दिर, गोवर्धन, स्वर्ण मन्दिर, जलियावाला बाग, बाबा अमरनाथ, माता वैष्णो देवी, हरिद्वार, नैमिसारण्य होते हुए प्रयागराज वापस होगी। माँ माधुरी वेलफेयर फाउण्डेशन के अध्यक्ष देवाशीष श्रीवास्तव ने कहा कि प्रत्येक वर्ष यात्रा निकाली जाती है, इस वर्ष दो बार यात्रा निकाली जा हरी है, एक जत्था आज रवाना हुआ है दुसरा जत्था फाउण्डेशन कि ओर से 09 जुलाई को अमरनाथ के लिए रवाना होगा। फाउण्डेशन का उदेश्य भारतीय संस्कृति व धार्मिक स्थलों के बारे में आम जनमानस को अवगत कराना है। इस अवसर पर मुख्य रूप पर मोनू गुप्ता, सौम्या श्रीवास्तव, मानसी श्रीवास्तव, सनी अनुज, राहुल जायसवाल, वीरु, शिवदानी प्रजापति, अरुन सिंह, विशाल जायवाल सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

सड़क पर घायल बेजुबानों का इलाज करती हैं सौम्या

अखंड भारत संदेश

जानवरों को मारने वालों पर दर्ज कराती हैं एफ आई आर स्कूटी में रखती हैं बेजुबानों के लिए दवा और खाना

प्रयागराज। शिवपुरी मोहल्ले की रहने वाली सौम्या पांडेय सड़क पर पड़े ऐसे बेजुबानों का इलाज करती हैं जिन्हें कोई नहीं पूछता। कहीं जाते समय यदि रास्ते में ऐसे बेजुबान घायल अवस्था में पड़े दिख गए तो वह अपनी स्कूटी रोककर उसमें से पट्टी, मरहम, इंजेक्शन व अन्य दवाइयां निकालती हैं। उनके इलाज में जुट जाती हैं। उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाती हैं, इतना नहीं जब तक वह ठीक नहीं हो जाता है तब तक वह उसकी देखभाल और इलाज करती हैं। सौम्या को इन पशु पक्षियों से इस तरह का लगाव है कि यदि उन्हें कोई मार भी दे तो वह उसका विरोध करती हैं और एफ आई आर भी दर्ज करा देती हैं। सौम्या ने बताया के पशु पक्षी बोल नहीं सकते हैं लेकिन उन्हें भी तो दर्द होता है। अमूमन देखा जाता है कि लोग कुत्ते, गाय व अन्य पशु पक्षियों को वाहन से कुचलते हुए भाग निकलते हैं जबकि उन्हें इलाज कराना चाहिए। कुछ दिन पहले घर के बाहर बैठी एक बीमार कुतिया को कुछ लोगों ने कछार में फेंक दिया था। कुछ दिन पहले उसका इलाज सौम्या कर रही थीं। जब वह उन लोगों से कुतिया के बारे में जानकारी ली तो लोगों ने सही जानकारी नहीं दी। काफी खोजबीन के बाद पता चला कि उसे कछार में फेंक दिया गया और उसकी मौत हो गई है। इस पर सौम्या तत्काल शिवकुटी थाने पर पहुंच गई और मीट दुकानदार सांवत, उसके साथी सोन, विकास और धर्मवीर के खिलाफ पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज करा दिया।

प्रतापगढ़ संदेश

भयहरण नाथ धाम के सावन मेले का हुआ आगाज

सुबह से शाम तक शिव भक्तों का लगा तांता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडवकालीन भयहरण नाथ धाम मे सावन मेला का आगाज आज मंगलवार मेला से हुआ। परम्परागत प्रत्येक मंगलवार का मेला होने के कारण सावन के पहले दिन ही हजारो श्रद्धालु भक्तों से गुलजार रहा। पुलिस व प्रबंध समिति के कार्यकर्ता की उत्तम सुव्यवस्था रही जिससे श्रधालु भक्तों को सुविधा हुई। सभी जरूरी व्यवस्था के लिए जिला प्रशासन द्वारा सभी सम्बंधित विभागों को आवश्यक निर्देश दिये गए हैं।

धाम के महासचिव समाज शेखर ने बताया कि सुबह से ही श्रद्धालु भक्तों का जलाभिषेक हेतु आगमन शुरू हुआ। प्रात 4 बजे से मुख्य मंदिर मंदिर मे स्थित देवाधिदेव भयहरण महादेव का भव्य महागौरी पूजन कर पुजारी भोला नाथ तिवारी ने कपाट जनता के दर्शन पूजन हेतु खोल दिया गया। धाम स्थित सभी मंदिरों में भक्तों ने बारी बारी से दर्शन पूजन किया। मेला नियंत्रण कक्ष मे पुलिस व कार्यकर्ता की पर्याप्त भागीदारी से सभी गातिविधियो मे सतर्क दृष्टि रखते हुए जरूरी सेवाएं सुबह से शाम तक जारी रही। मेला प्रबंधक बबन सिंह व उप प्रबंधक राज किशोर मिश्र, नगर पंचायत अध्यक्ष कटरा गुलाब सिंह के प्रतिनिधि अखिल सिंह पिंटू व कार्यालय प्रभारी नीरज मिश्र, वरिष्ठ सदस्यगण गंगा पांडेय, भानू सिंह, धर्मेन्द्र पटेल आदि ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। थानाध्यक्ष अभिषेक सिरोही के मार्गदर्शन मे चैकी प्रभारी कटरा गुलाब सिंह राजीव तोमर के नेतृत्व मे पुलिस की उत्तम व्यवस्था रही। भयहरण नाथ धाम मे जल जन विकास अभियान की शुरूवात 5 जुलाई को धाम के महासचिव सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर व नगर पंचायत अध्यक्ष मुन्ना यादव द्वारा होगी। धाम स्थित प्राचीन शिव गंगा तालाब के लघु स्वरूप की साफ सफाई करके वर्षा जल संचयन हेतु तैयार किया जायेगा।

भयहरणनाथ धाम में लगा शिव भक्तों का तांता।

कर्तव्य निष्ठा से जनता की सेवा करना एक पुनीत कार्यः हरिप्रताप

रिटायर टैक्स कलेक्टेर की नपा कर्मियों ने दी भावभीनी विदाई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका के टैक्स कलेक्टर के पद से रिटायर हुए मोहम्मद उमर की आज नगर पालिका के सभागार में कर्मचारी तथा अधिकारियों ने भावभीनी विदाई दी। इस अवसर पर नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने कहा कि मो0 उमर ने अपने कर्तव्यनिष्ठा से जिस प्रकार नगर पालिका की साख को बढ़ाया है, उससे अन्य कर्मचारियों को प्रेरणा लेनी चाहिये।

उन्होंने कहा कि कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारियों की सेवा करना एक पुनीत कार्य है। इसमें सभी का सहयोग भी मिलता है। समारोह में उपस्थित अधिषाषी अधिकारी राम अचल कुरील ने कहा कि जनता की सेवा मो0 उमर की तरह सभी कर्मचारियों को करनी चाहिये। समारोह में कई सभासद तथा नगर पालिका के सभी कर्मचारी व अधिकारी उपस्थित रहे। सभासदों में धर्मषील शुक्ल, विजय कुमार, तुषार, पूर्व सभासद अनिल सिंह के अलावा नगर पालिका के आरआई लाल बहादुर सिंह व राजेष बिंद, मिथिलेष सिंह, प्रषांत सिंह, सफाई निरीक्षक एसके सिंह के अलावा सभी कर्मचारी व अधिकारी मौजूद रहे।

रिटायर टैक्स कलेक्टर को सम्मानित करते नपाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह।

धान विक्रय हेतु आनलाइन धान रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शुरू

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला खाद्य विपणन अधिकारी अजीत कुमार त्रिपाठी ने बताया है कि खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में मूल्य समर्थन योजना के अन्तर्गत आनलाइन धान रजिस्टेज्शन की प्रक्रिया 01 जुलाई से प्रारम्भ हो गयी है। धान विक्रय हेतु इच्छुक कृषक खरीद प्रारम्भ होने से पूर्व ही पंजीकरण कराये एवं न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना का लाभ उठाये। धान का समर्थन मूल्य कॉमन रुपए 2183 प्रति कुन्तल एवं ग्रेड-ए रुपए 2203 प्रति कुन्तल होगा। धान विक्री हेतु ओ0टी0पी0 आधारित पंजीकरण की व्यवस्था है। कृषक पंजीकरण हेतु वर्तमान मोबाइल नम्बर ही अंकित करायें। कृषक का बैंक खाता आधार सीडेड (अर्थात बैंक खाता से आधार से जुड़ा हो) एवं बैंक द्वारा एनपीसीआई पोर्टल पर मैप एवं सक्रिय होना आवश्यक है। धान के मूल्य का भुगतान पीएफएमएस के माध्यम से सीधे किसानों के आधार लिंक बैंक खाते में करने की व्यवस्था है। रजिस्टेज्शन के समय कृषक अपना आधार कार्ड, विक्रय करने वाले सदस्य के आधार कार्ड, भूजोत सम्बन्धी अभिलेख, सत्यापित खतौनी एवं आधार से मोबाइल नम्बर द्वारा रजिस्टेज्शन करा सकते है। खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में गेहूँ व धान खरीद हेतु पूर्व में पंजीकरण करा चुके कृषकों को धान विक्रय हेतु पुनः पंजीकरण कराने की आवश्यकता नहीं, किन्तु पंजीकरण को संशोधन कर पुनः लॉक करना होगा। धान विक्रय हेतु खाद्य तथा रसद विभाग की वेबसाइट अथवा विभाग के मोबाइल ऐप ह्यह्ययूपी किसान मित्रह्लह्ल पर कृषक पंजीकरण करा सकते हैं।

बारिश के दौरान गिरा ब्लाक मुख्यालय मे गिरा जर्जर पेड़

परियावां, प्रतापगढ़। ब्लाक मुख्यालय कालाकाकर परिसर मे सोमवार की सुबह हुई जोरदार वारिस के चलते एडीओ पंचायत कार्यालय के आने जाने वाले रास्ते मे एक जर्जर पेड़ अचानक जड़ सहित गिर गया संयोग अच्छा रहा कि ब्लाक मे रविवार को छुट्टी थी। सोमवार की सुबह कोई चहल पहल नही थी यदि सुबह के अलावा किसी समय 10 बजे के बाद गिरता तो कोई न कोई बड़ा हादसा होने से इंकार नही किया जा सकता क्योकि जिस जगह पेड़ गिरा है। वहा पर ग्राम प्रधान पंचायत सचिव व ब्लाक के कर्मचारियों का आवागमन रहता है पेड़ के आस पास दो पहिया गाड़ी के साथ लोग खड़े भी रहते है। पेड़ के सहारे बिजली की केबिल व इंटर नेट के तार पेड़ के नीचे दब गये है जिससे बिजली आपूर्ति ठप हो गई है।

एसडीएम कोर्ट ने लालगंज के धर्मशाले पर अतिक्रमण को लेकर दिया बेदखली का आदेश

थानाध्यक्ष एवं तहसीलदार को अतिक्रमण हटवाने को लेकर भी कोर्ट ने तलब की आख्या

अखंड भारत संदेश

लालगंज प्रतापगढ़। लालगंज एसडीएम कोर्ट ने मंगलवार को लालगंज स्थित प्राचीन धर्मशाले पर अतिक्रमण को अवैध करार दिया है। एसडीएम कोर्ट ने धर्मशाले पर अतिक्रमण की बेदखली का आदेश पारित करते हुए एसडीएम उदयभान सिंह ने फैसले के प्रभावी बनाए जाने को लेकर लालगंज थानाध्यक्ष तथा तहसीलदार को पन्द्रह दिवस के अंदर धर्मशाले से अवैध कब्जा हटवाये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित कर कोर्ट को आख्या दिये जाने के निर्देश दिये है।

लालगंज के रायबरेली-प्रतापगढ़ रोड पर दीवानी गेट के समीप प्राचीन धर्मशाले को लेकर एसडीएम कोर्ट में मुकदमा दाखिल हुआ। सरकार बनाम विजय कुमार कौशल के मुकदमे मे कोर्ट मे तहसीलदार लालगंज द्वारा दिनांक तीन फरवरी, 2023 को सौपी गयी जांच आख्या मे कहा गया है कि ग्राम शीतलमऊ में एक प्राचीन धर्मशाले का निर्माण कराया गया था। इस पर अतिक्रमणी पर आरोप है कि उसने धर्मशाले को व्यवसायिक तथा रिहायशी मकान के रूप में प्रयोग करते हुए अवैध कब्जा कर लिया। मुकदमें में नगर पंचायत की ओर से अधिवक्ता ज्ञानप्रकाश शुक्ल तथा शेष तिवारी ने बहस में कोर्ट के सामने धर्मशाले से जुडे विधिक एवं व्यवहारिक तथ्य रखे। अधिवक्ता प्रदीप सिंह ने सहयोगी अधिवक्ता के रूप में सार्वजनिक धर्मशाले का मसौदा तैयार किया। वरिष्ठ अधिवक्ता ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने कोर्ट को बताया कि लगभग सौ वर्ष पूर्व यह धर्मशाला सनातन धर्म और सनातन संस्कृति के प्रति आस्था रखने वालों के द्वारा सार्वजनिक सहयोग से निर्मित कराया गया था। कोर्ट ने आरोपी पक्ष के गवाहान का भी परीक्षण कराया। एसडीएम उदयभान सिंह ने मामले की सुनवाई करते हुए मंगलवार को इस पर फैसला सुनाते हुए प्राचीन धर्मशाले से उत्तर प्रदेश लोक परिसर अप्राधिकृत अध्यासियों को बेदखली के 1972 के प्राविधानों के तहत अतिक्रमण को हटवाये जाने का आदेश पारित कर दिया।

भांगयुक्त औषधि की बिक्री पर होगी कार्यवाही

प्रतापगढ़। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डा0 सरोज शंकर राम ने जनपद के समस्त आयुर्वेदिक औषधि निमार्ता/विक्रेताओं को निर्देशित किया है कि भांगयुक्त औषधि (मुनक्का वटी/मुनक्का गोली/मुनक्का चूर्ण) का निर्माण एवं विक्री पूर्णरूप से प्रतिबन्धित है। इसके सेवन से युवाओं के साथ-साथ छोटे-छोटे बच्चे व स्कूली छात्र भी नशे के आदी हो रहे है तथा इसके सेवन से व्यक्ति के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने बताया है कि यदि भांगयुक्त औषधि का निर्माण एवं विक्री करते हुये पाये जाने पर नियमानुसार विधिक कार्यवाही की जायेगी।

गौशाला की स्थिति देख भड़के बीडीओ, सुधार लाने का दिया निर्देश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी ब्लाक में तेज तर्रार अधिकारी आने से हलचल दिख रही है जैसा कि अपने पहले ही वार्ता में बीडीओ मधुकर शुक्ला ने स्पष्ट कर दिया था की वे जनहित के कार्यों में शिथिलता बर्दास्त नहीं करेंगे उसी क्रम में सोमवार को ब्लाक क्षेत्र के उसरौली गाँव स्थित गौशाला का निरीक्षण किया. उन्होंने मवेशियों की संख्या, भूसा, स्टॉक सहित चारे-पानी की व्यवस्थाओं को देखा और गौशाला में कार्यरत सूरज को शासन के निदेर्शानुसार गोवंश को समय से हरा चारा और पानी की पर्याप्त व्यवस्था कराने के साथ ही साफ सफाई रखने के निर्देश दिए. बीमार पशुओं के उपचार के लिए पशुचिकित्सकों को निर्देशित किया तथा उन्हें अलग से रखे जाने की व्यवस्था किए जाने का निर्देश दिया। उन्होंने प्रधान व सचिव को गौशाला में संरक्षित गौवंशों के सापेक्ष पर्याप्त मात्रा में भूसा की उपलब्धता व गौशाला की रिक्त पड़ी भूमि को समतल कराकर गौवंशों के लिए हरे चारे की व्यवस्था करने के निर्देश दिए. ऐसा न करने पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी।

ब्लाक प्रमुख के खिलाफ धोखाधड़ी व रंगदारी मांगने का मामला दर्ज

पट्टी, प्रतापगढ़। ब्लाक प्रमुख बाबा बेलखरनाथ धाम सुशील सिंह के खिलाफ पुलिस ने धोखाधड़ी जान से मारने की धमकी तथा रंगदारी मांगने का मामला दर्ज किया है। पुलिस ने उनके अन्य पांच साथियों के विरुद्ध भी मामला दर्ज किया है। पट्टी नगर के रहने वाले यासीन पुत्र खुदाबख्श निवासी रायपुर ने इस मामले में बीते रविवार को तहरीर देकर बताया कि उनकी जमीन पर उनके बगल के रहने वाले एक व्यक्ति ने फर्जी ढंग से बीबीपुर गांव के रहने वाले संतोष सिंह पुत्र रामकृपाल का फर्जी ढंग से एग्रीमेंट कर दिया उसके बाद मामले में बाबा बेलखरनाथ धाम के ब्लाक प्रमुख सुशील सिंह ने हस्तक्षेप करना शुरू किया। पीड़ित ने आरोप लगाया कि शनिवार को ब्लाक प्रमुख में पीड़ित को अपने आवास पर बुलाया और कहा कि जिस जमीन का विवाद है वह हमारे संज्ञान में आया है अगर उस जमीन पर कब्जा करना चाहते हो तो 15 लाख रुपए ले कर दो नहीं तो ऐसे ही मुकदमा लड़ते रहोगे और कब्जा नहीं कर पाओगे। पीड़ित ने उनकी टीम में शामिल हरीश जायसवाल निवासी लालगंज संतोष सिंह पुत्र रामकृपाल निवासी बीबीपुर, अजय सिंह उर्फ टक्कू निवासी चरैया के विरुद्ध मामला दर्ज कराते हुए आरोप लगाया है कि सभी लोग धन उगाही करके क्षेत्र में रंगदारी मांगने का काम करते हैं।

तीनों पालियों की बीटीसी परीक्षा में 1052 परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

विज्ञान में 352, गणित में 366 तथा सामाजिक अध्ययन में 2125 परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। डीएलएड (बीटीसी) प्रशिक्षण प्रथम सेमेस्टर परीक्षा के दूसरे दिन तीन पालियों में शहर के छह परीक्षा केन्द्रों पर परीक्षा हुई। पहली पाली में विज्ञान, दूसरी पाली में गणित तथा तीसरी पाली में सामाजिक अध्ययन की परीक्षा सम्पन्न हुई।

पहली पाली विज्ञान में 352, दूसरी पाली गणित परीक्षा में 366 तथा तीसरी पाली में सामाजिक अध्ययन की परीक्षा में 2125 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। इस प्रकार विज्ञान में 2615, गणित में 2907 तथा सामाजिक अध्ययन में 2459 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। तीनों पाली में शहर के राजकीय इंटर कालेज, राजकीय बालिका इंटर कालेज, के पी हिंदू इंटर कालेज, लोकमान्य तिलक इंटर कालेज, अबुल कलाम आजाद इंटर कालेज के अलावा प्रतापगढ़ सिटी स्थित पीबी इंटर कालेज में डीएलएड की परीक्षाओं में से परीक्षार्थियों की भीड़ इस कदर थी कि शहर में जाम की स्थिति दिन भर बनी रही। सुबह से ही परीक्षा केन्द्रों पर हजारों परीक्षार्थी आ गये थे जिससे परीक्षा केन्द्रों के सामने पहली पाली के समाप्त, दूसरी पाली के समाप्त होने तथा तीसरी पाली के समाप्त होने से भारी भीड़ से जाम लगा रहा।

कालेज से परीक्षा देकर निकलती छात्राएं।

प्रवेश जागरुकता शिविर में मौजूद प्राचार्य व अन्य।

एमडीपीजी में अब इग्नू से पीजी डिप्लोमा की सुविधा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कालेज स्थित इग्नू अध्ययन केन्द्र प्रतापगढ़ में आज एक प्रवेश जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिसमे इग्नू के विभिन्न पाठ्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र ने बताया कि इग्नू एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जो छात्रों को घर पर रहकर पढ़ाई करने में मदद करता है।

इसमें डिप्लोमा, बैचलर डिग्री, मास्टर डिग्री और सर्टिफिकेट के कई विषयों पर कोर्स उपलब्ध हैं। इसकी डिग्री और डिप्लोमा यूजीसी द्वारा पूर्णतः मान्य हैं। अध्ययन केंद्र प्रतापगढ़ के समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह ने बताया कि इस विश्वविद्यालय ने उन लोगों को शिक्षा प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जो रेगुलर विश्वविद्यालयों में शामिल नहीं हो सकते है। इग्नू प्रतापगढ़ के पत्रकारिता पीजी डिप्लोमा के काउन्सेलर डॉ सी एन पांडेय ने बताया कि कोई भी स्नातक छात्र पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा कर किसी भी जन संचार के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकता है। शिविर में अन्य विषय विशेषज्ञों ने प्रवेश के लिए आवेदन प्रक्रिया, शैक्षणिक विधि एवं मूल्यांकन विधियों की विस्तृत जानकारी दी। विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिए छात्र आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

एलायंस क्लब अपने सेवा कार्यों से जनमानस को जोड़ेंः डॉ0 तृप्ता

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब इंटरनेशनल की इंटरनेशनल बोर्ड की बैठक होटल क्लार्क वाराणसी में संपन्न हुई। बैठक में क्लब के डायरेक्टर रोशनलाल उमरवैश्य ने किए जा रहे कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की वर्तमान में क्लब पौधरोपण/पौध वितरण कर रहा है एवं पशु पक्षियों को बचाने के लिए मिट्टी के छोटे बर्तन बाँटकर जनमानस को जागरूक कर रहा है जिसे इंटरनेशनल प्रेसिडेंट डॉ0 तृप्ता कौर जुनेजा ने सराहा और क्लब के सभी पदाधिकारी से अनुरोध किया कि अनाथ बच्चों को गोद लेकर मुख्यधारा से जोड़ने का अभियान चलाएं। एलायंस क्लब अपने सेवा कार्यों से 23 देशों में पहचान बनाई है। सभी बोर्ड के मेंम्बर से अनुरोध है कि अपने सेवा कार्य से जनमानस को जोड़ें और सेवा कार्यों का और विस्तार करें। पूर्व प्रेसिडेंट भूपेंद्र चाहवाला ने कहा कि सभी मेंबर पर्यावरण को बचाने में पौधरोपण अवश्य करें। फाउंडर प्रेसिडेंट डॉ0 सतीश लखोटिया ने कहा कि 5 सितंबर को स्थापना दिवस मुख्य तरीके से मनाया जाए। क्लब को और बढ़ाने के लिए कमाल लखोटिया, डॉ मनमीत सिंह ने अपील की। क्लब के कार्यों की सराहना होने पर क्लब के पदाधिकारियों ने खुशी जताते हुए क्लब के डायरेक्टर रोशनलाल उमरवैश्य को बधाई दी। बधाई देने वालों में शिवेश शुक्ला, परमानंद मिश्रा, संतोष कुमार, छेदीलाल, देवानंद, राजीव कुमार आर्य, डॉ0 दयाराम मौर्य, अर्चना खंडेलवाल, सुधा अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, पूनम गुप्ता आदि रहे।

कलेक्ट्रेट में जलभराव को लेकर डीएम को सौंपा ज्ञापन

इण्डिया रुलर बार एसोसिएशन ने निजात दिलाये जाने की उठाई मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला कलेक्ट्रेट परिसर में हुए जल जमाव को लेकर आल इण्डिया रूलर बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने मंगलवार को जिला अध्यक्ष अंजनी सिंह बाबा एडवोकेट के अगुवाई में डीएम को ज्ञापन सौंप समस्या से निजात दिलाये जाने की मांग की है।

डीएम को सौंपे गये ज्ञापन में कलेक्ट्रेट परिसर में जलभराव व व्याप्त गंदगी तथा जगह-जगह जल निकासी की समस्या को लेकर डीएम को सौंपे गये ज्ञापन में अधिवक्ताओं ने डीएम को सौंपे गये ज्ञापन में अति शीघ्र कलेक्ट्रेट में जलभराव तथा परिसर में गंदगी की सफाई व्यवस्था सुनिश्चित कराए जाने की जोरदार मांग की। सौंपे ज्ञापन में कहा कि कलेक्ट्रेट परिसर में बरसात की वजह से जगह जगह काफी जलभराव है जिसके चलते अधिवक्ताओं को अपने शैडो में बैठने वह न्यायालय में कार्य हेतु जाने में समस्या हो रही है। ज्ञापन सौंपने के दौरान जूनियर के पूर्व महामंत्री जयप्रकाश मिश्र, जितेंद्र सिंह भोले, दिवाकर सिंह, सचिंद्र सिंह, आशीष श्रीवास्तव, अमजद खान, कौशलेंद्र सिंह, रतन, शिवम सिंह, उत्तम सिंह चंद्रिका यादव, प्रवीण चतुवेर्दी आदि अधिवक्ता उपस्थित थे।

जिलाधिकारी को ज्ञापन देते इण्डिया रुलर बार एसोसिएषन के पदाधिकारी

पानी की टंकी खराब, विद्युत महकमे का टांसफार्मर बना रोड़ा

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी नगर रायपुर रोड पर नगर पंचायत की तरफ से लगाई गई पानी की टंकी खराब हो चुकी है। वहीं पानी की टंकी के ऊपर है लगाया गया ट्रांसफार्मर रोड़ा बन गया है। एक तरफ लोगों को शुद्ध पेयजल के लिए इधर-उधर भटकना पड़ रहा है वहीं दूसरी तरफ ओवरलोड की समस्या के कारण ट्रांसफार्मर का वहां से हटाया जाना भी आवश्यक है। पट्टी नगर रायपुर रोड पर चमन चैक पर नगर पंचायत की तरफ से एक पानी की टंकी लगाई गई है जिसका उद्देश्य था कि लोगों को स्वच्छ जल सुलभ तरीके से मिल सके लेकिन पानी की टंकी क्या खराब हुई विद्युत विभाग के अधिकारियों ने उसके ऊपर 100 केवीए का ट्रांसफार्मर रख दिया। कभी नगर पंचायत ने पानी की टंकी को ठीक कराने के लिए विचार भी किया तो ट्रांसफार्मर उनके रास्ते में रोड़ा बन गया अब एक तरफ वहां के नगर वासियों का मांग है कि लोगों को स्वच्छ जल उपलब्ध हो तो वहीं दूसरी तरफ ओवरलोड ट्रांसफॉर्मर की क्षमता बढ़ाने के लिए भी मांग चल रही है इस संबंध में विद्युत विभाग के जेई मुकेश साहनी से बात करने पर उन्होंने बताया कि एक सप्ताह के भीतर पानी की टंकी के ऊपर लगाया गया ट्रांसफार्मर हटा दिया जाएगा उसके बाद उसे कोई दूसरा सपोर्ट दिया जाएगा वही नगर पंचायत अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल से बात करने पर उन्होंने कहा कि मामला संज्ञान में है जल्दी पानी की टंकी का ध्वस्तीकरण कराया जाएगा।

गोड़े में एसी एवं फ्रिज रिपेयरिंग की प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ शुभारंभ

पीबीपीजी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ0 बृजभान सिंह ने किया उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। युवाओं में उद्यमशीलता और स्वरोजगार की भावना को गति प्रदान करने के उद्देश्य से बडौदा स्वरोजगार विकास संस्थान, गोंड़े, प्रतापगढ़ में आज से एसी एवं फ्रिज रिपेयरिंग की प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन पीबीपीजी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉक्टर बृजभान सिंह द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

आरसेटी के नाम से जानी जाने वाली, बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा संचालित, गोड़े स्थित इस संस्थान में इस सत्र में अब तक 10 विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्ण किए गए हैं। आज वीमेंस टेलरिंग प्रशिक्षण का समापन भी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र देने के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ. बृजभान सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को उद्यमशीलता और स्वरोजगारी, हुनरमंद बनने के लाभ बताते हुए कहा की, किसी भी देश के आर्थिक व तकनीकी विकास में ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों से सीखे हुए विद्यार्थियों को स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भरता बढ़ जाती है, जिससे उनमें आत्मविश्वास भी बढ़ता है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए एफएलसीसी शिशिर खरे ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अभी तक अनेकों शिक्षार्थियों की सफलता की बातें नये शिक्षार्थियों को बताया। इस अवसर पर प्रशिक्षक बबीता सिंह, लखनऊ से आए प्रशिक्षक शोएब अंसारी, अमृता दुबे, संजीव कुमार, शांतनु शेखर सिंह आदि उपस्थित रहे।

प्रशिक्षक कार्यशाला का उद्घाटन करते पूर्व प्राचार्य डा0 बृजभान सिंह।

खबर संक्षेप

सर्पदंश से 8 वर्ष के बालक की मौत

हर्रायपुर कौशाम्बी संदीपन घाट थाना अंतर्गत हर्रायपुर चौकी क्षेत्र के मोहनापुर ग्राम सभा के हथियाभीट के 8 वर्षीय बालक बाराती पुत्र अंकित कुमार सोमवार की दोपहर में घर के बगल में खेल रहा था खेलते वक्त बालक को अचानक सांप ने काट लिया परिजनों को मामले की जानकारी मिलते ही आनन फानन में बालक को इलाज के लिए ले जा रहे थे लेकिन रास्ते में उसकी मौत हो गई है बालक की मौत होते ही परिवार में कोहराम मच गया है।

अज्ञात पुरुष का मिला शव

कौशाम्बी सिराथू जीआरपी थाना छेत्र में 4 जुलाई को रेल लाइन के पास एक अज्ञात पुरुष लगभग उम्र 60 वर्ष का शव मिला है रेल लाइन के पास शव पड़े होने की जानकारी मिलने के बाद आसपास के लोगों की भीड़ मौके पर एकत्रित हो गई काफी प्रयास के बाद शव की शिनाख्त नहीं हो सकी है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त के लिए पोस्टमार्टम हाउस में सुरक्षित रख दिया है।

बारिश में भरभरा कर गिरी कच्चे घर की दीवार दंपत्ति घायल

अखंड भारत संदेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवास योजना के पारदर्शिता की उड़ती दिखाई पड़ रही है धज्जियां

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी। 3 दिन के बारिश में ही कच्चे घर की दीवार भरभरा कर गिर पड़ी है जिससे दंपत्ति दीवार के मलबे के नीचे दब गए और गंभीर रूप से घायल हो गए हैं आनन-फानन में आसपास के ग्रामीणों ने गिरी दीवार के मलबे को हटाकर दंपत्ति को बाहर निकाला और इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया है 3 दिन की बरसात के बाद कच्चे घर की दीवार भरभरा कर गिर जाने के बाद एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवास योजना के पारदर्शिता की धज्जियां उड़ती दिखाई पड़ रही है। जानकारी के मुताबिक सिराथू तहसील के ग्राम पंचायत गनपा के मजरा महेशपुर में सोमवार की रात बारिश के चलते राम लखन सरोज के कच्चे मकान की दीवार भरभरा कर अचानक गिर पड़ी राम लखन सरोज एवं उसकी पत्नी संगीता रात में घर के अंदर बैठकर खाना खा रहे थे अचानक दीवार गिर जाने से दंपत्ति उसके मलबे के नीचे दब गए चीख पुकार मच गयी होहल्ला चीख पुकार सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे गिरी दीवाल का मलबा हटाकर लहूलुहान दंपत्ति को बाहर निकाला और इलाज के लिए दंपत्ति को अस्पताल में भर्ती कराया कच्चे घरों को पक्के घर में बदलने का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सपना दिखाया था जिसके चलते गरीब कमजोर मजलूम लोगों को प्रधानमंत्री से एक उम्मीद जागी कि उनके घर को पक्का बनाने में आवास योजना के तहत उन्हें सरकार से मदद मिलेगी लेकिन आवास योजना भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई अपात्रो ने आवास योजना का जमकर लाभ उठाया लेकिन गरीब कमजोर दबे कुचले जरूरतमंद पात्र लोगों को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ नहीं मिल सका इसी का नतीजा रहा कि 3 दिन की बरसात में गरीब के कच्चे घर की दीवार भरभरा कर गिर पड़ी जिसमें दंपत्ति दब गए और गंभीर रूप से लहूलुहान हो गए हैं दंपत्ति को आवास ना दिए जाने के मामले की उच्चस्तरीय जांच कराई गई तो ग्राम पंचायत से लेकर खंड विकास अधिकारी कार्यालय तक के जिम्मेदारों के गुनाह उजागर होना तय है।

दबंगो द्वारा किसान की जमीन पर जबरन कब्जा तहसीलदार से शिकायत, दिए जांच के आदेश

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के ग्राम फरीदपुर सुलेम गांव के ही कुछ दबंग किस्म के लोगो द्वारा जबरन एक किसान की जमीन को कब्जा करने का मामला सामने है। जिसकी शिकायत किसान ने तहसीलदार चायल से की तहसीलदार ने मामले को गंभीरता से लेते हुए चरवा थाना प्रभारी को मामले की जांच का आदेश दिया। जानकारी के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के ग्राम फरीदपुर सुलेम निवासी गोविन्द प्रसाद पुत्र बद्री प्रसाद अपनें हिस्से की जमीन पर खेती किसानी करता है । उस जमीन पर गांव के दबंग छेदी लाल पुत्र कल्लू गोविन्द प्रसाद के हिस्से पर जबरन कब्जा कर जमीन को जोत रहा है। जब गोविन्द प्रसाद अपने हिस्से की जमीन को जोतने से माना करने गया तो विपक्षी दबंग गोविन्द प्रसाद को गाली गलौज करने लगे गाली गलौज का विरोध करने पर उक्त दबंग मार पीट पर आमादा हो जाते हैं। गोविन्द प्रसाद ने उक्त मामले की शिकायत चायल के तहसीलदार से करते हुए संबंधित भूमि को लेखपाल द्वारा चिन्हित करवाने और दबंगों से कब्जा मुक्त करवाने की मांग की है।

पुलिस महकमे में बड़े पैमाने पर किया गया फेरबदल

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक बृजेश श्रीवास्तव ने पुलिस महकमे में बड़े पैमाने पर फेरबदल किया है पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक मंझनपुर कोतवाली में तैनात अतिरिक्त निरीक्षक महेश सिंह को महिला हेल्प डेस्क स्थानांतरित किया है उपनिरीक्षक बिपलेश को करारी थाना से कौशांबी थाना भेजा गया है सिंघिया चौकी प्रभारी धर्मेंद्र कुमार वर्मा को चौकी से हटाते हुए पुलिस लाइन भेज दिया गया है भरवारी पुलिस चौकी प्रभारी राम नारायण सोनकर को भरवारी चौकी से हटाते हुए सिंधिया पुलिस चौकी का दायित्व सौंपा गया है दीवार कोतारी पुलिस चौकी इंचार्ज दीपक मिश्रा को पुलिस चौकी से हटाते हुए पुलिस लाइन भेजा गया है और उनके स्थान पर पुलिस लाइन से बृजेश कुमार को दीवर कोतारी पुलिस चौकी प्रभारी बनाया गया है अफजलपुर वारी चौकी प्रभारी राजेंद्र कुमार वर्मा को सराय अकिल थाना भेजने के निर्देश दिए गए हैं और उपनिरीक्षक अशोक कुमार को पुलिस लाइन से हटाते हुए अफजलपुर वारी पुलिस चौकी का प्रभारी बनाया गया है।

लापरवाही पर 2 पुलिस चौकी इंचार्ज भेजे गए पुलिस लाइन

जिले के कई उपनिरीक्षक भेजे गए गैर जनपद

कौशांबी। लंबे समय से कौशांबी जिले में तैनात कई उप निरीक्षकों का स्थानांतरण पड़ोसी जनपद प्रतापगढ़ फतेहपुर आदि में कर दिया गया है और पड़ोसी जनपद फतेहपुर प्रतापगढ़ के तैनात रहे कई उप निरीक्षकों को स्थानांतरित करते हुए कौशांबी जनपद भेजा गया है।

प्रतापगढ़ और फतेहपुर भेजे गए कौशांबी के दो दर्जन से अधिक उपनिरीक्षक

कौशाम्बी। कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखने के उद्देश्य से पुलिस महकमे में बड़े फेरबदल किए गए हैं पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक कौशांबी जनपद में तैनात उपनिरीक्षक जयप्रकाश द्विवेदी प्रतापगढ़ कैलाश सिंह और रामजी यादव प्रतापगढ़ यदु राज सिंह और गामा फतेहपुर श्याम बहादुर और भारत लाल यादव फतेहपुर शशि प्रकाश मिश्रा प्रतापगढ़ सभाजीत तिवारी और राजबहादुर सरोज फतेहपुर स्थानांतरित किए गए हैं। इसी प्रकार उपनिरीक्षक रंजीत यादव और राकेश कुमार फतेहपुर जनपद तथा राजेंद्र कुमार पांडेय और संतोष कुमार राय प्रतापगढ़ जनपद स्थानांतरित किए गए हैं उपनिरीक्षक उमेन्द्र प्रताप सिंह और चंद्रप्रकाश फतेहपुर जनपद भेजे गए हैं उप निरीक्षक सत्य प्रकाश पाठक प्रतापगढ़ और बिरेंद्र कुमार शुक्ला फतेहपुर स्थानांतरित किए गए हैं उपनिरीक्षक राम निवास यादव और शिवानंद यादव प्रतापगढ़ भेजे गए हैं जब कि उपनिरीक्षक हरीश चंद्र शुक्ला और सूर्यनारायण को फतेहपुर भेजने के निर्देश दिए गए हैं उपनिरीक्षक विजय कुमार यादव वा अभिलाष तिवारी और भवानी सिंह को प्रतापगढ स्थानांतरित किए जाने के निर्देश दिए गए हैं।

दहेज को लेकर विवाहिता के साथ मारपीट

करारी कौशांबी। प्रयागराज जिले के मलावा बुजुर्ग थाना झूसी निवासी शेर अली पुत्र इंद्राज खा की बहन दोनों आंख से अंधी है और उनके बहनोई की मृत्यु हो चुकी है जिस पर उन्होंने अपनी बहन की पुत्री गुलप्सा का लालन-पालन किया और गुलप्सा की शादी मुस्लिम रीति रिवाज से 1 वर्ष पूर्व करारी थाना क्षेत्र के सनई पर निवासी अकबर खान के साथ किया था लेकिन शादी के बाद से ही दहेज में मोटरसाइकिल की डिमांड को लेकर गुलप्सा को उसके ससुराली जन परेशान करने लगे आए दिन उसके साथ मारपीट गाली गलौज की जाने लगी ससुराली जनों ने विवाहिता की हत्या करने की धमकी दी है गुलप्सा के मामा शेर अली ने करारी थाना पुलिस को शिकायती पत्र देकर सास ननद पति आदि पर आरोप लगाते हुए तहरीर देकर कार्यवाही किए जाने की मांग की है।

ट्रक ने ई रिक्शा में जोरदार मारी टक्कर दो घायल : हर्रायपुर कौशांबी संदीपन घाट थाना क्षेत्र के चंदवारी मोड़ के पास ट्रक ने ई-रिक्शा को टक्कर मार दिया है जिससे 2 लोग घायल हो गए है बताया जा रहा है कि कानपुर की तरफ से आ रही ट्रक ने सांदीपन घाट थाना क्षेत्र के चन्दवारी मोड़ के पास ई रिक्शा में पीछे से टक्कर मार दिया जिससे ई रिक्शा में बैठी महिला रीना पुत्री राजाराम वा एक अन्य घायल हो गए है लोगों ने घायलों को इलाज के लिए हॉस्पिटल में भर्ती करा दिया है।

समतली करण के नाम पर बीस हजार रुपये मांग रहा घूस मनरेगा जेई

घूस का वीडियो वायरल फिर भी नहीं हो रही कार्रवाई

कौशांबी। सिराथू ब्लाक के बिदन पुर आमद करारी के अर्जुन प्रसाद पांडे समतली करण योजना के अंतर्गत अपने खेतों का समतली करण कराने हेतु अपने गाँव के रोजगार सेवक के साथ जाकर सिराथू ब्लाक में प्रार्थना पत्र देकर मनरेगा जेई से जब संपर्क किया तो मनरेगा जेई ने समतली करण का एस्टिमेट बनाने के लिए बीस हजार रुपये घूस की माँग किया जिसे देने से जब कृषक ने इंकार किया तो मनरेगा जेई ने साफ तौर पर कहा कि बगैर पैसा के कुछ नहीं होगा जहाँ शिकायत करना हो कर दीजिए जिसका वीडियो भी बनाया गया जिसमें जेई की आवाज हाथ अँगूठी सब दिखाई दे रही है पीडित द्वारा इसकी शिकायत सक्षम अधिकारियों से की गयी लेकिन अभी तक कार्य वाही नहीं हुई पीडित द्वारा तहसील दिवस में शिकायती पत्र मुख्य विकास अधिकारी कौशांबी को दिया जिस पर सीडीओ कौशांबी ने कार्यवाही का आश्वासन दिया है परन्तु अभी तक कोई कार्य वाही न होने से जहाँ जेई मनरेगा सिराथू का हौसला बुलंद है वही पीडित कृषक अपने खेतों के समतली करण कराने हेतु परेशान है उक्त घूस खोर मनरेगा जेई पर कार्य वाही की मांग के लिए किसान दर दर अधिकारियों के चौखट के चक्कर काटने पर मजबूर है।

झूठा आरोप लगाकर मां बेटा को दबंगो ने किया लहूलुहान

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के हौसी गांव की सुनीता देवी पत्नी भोला सिंह यादव का लड़का बब्लू सोमवार की दोपहर खेत की तरफ मवेशी चरा रहा था! गांव के ही राम जी व लक्ष्मन पुत्र बाबू लाल व दो महिलाएं ने पीड़ित के लड़का के ऊपर झूठा आरोप लगाकर गाली गलौज करते हुए कहने लगे कि हमारी धान की बियाढ़ में तुम क्यों घुसे हो पीड़ित महिला के लड़का ने गाली का विरोध करते हुए कहा कि गाली मत दो मैं आपकी धान की बियाढ़ में नहीं घुसा इतनी सी बात में विपक्षियों ने एकजुट होकर कर लाठी डंडा से मारने पीटने लगे ! शोर सुनकर कर पीड़ित महिला मौके पर पहुंच कर बीच बचाव करने लगी तो विपक्षियों ने जान लेवा हमला करते हुए बुरी तरह से मारे पीटे। लहूलुहान पीड़ित महिला ने अपने लड़का के साथ चरवा थाना पहुंच कर चार नामजद लोगों के विरुद्ध लिखित शिकायती प्रार्थना पत्र दिया। तहरीर पाते ही चरवा पुलिस जांच में जुट गई है।

तिरपाल गट्ठर लदा ट्रक अनियंत्रित होकर पलटा, चालक घायल

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशांबी। गुजरात से त्रिपाल लादकर झारखंड जा रहा ट्रक अनियंत्रित होकर सैनी कोतवाली के अझुवा ससुर खदेरी नदी के पुल के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर पलट गया हादसे में ट्रक चालक ट्रक के नीचे दब दब गया जिससे उसे चोटें आई हैं सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने सड़क से ट्रक हटवाते हुए रास्ता खाली कराया और घायल ट्रक चालक को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया है। जानकारी के अनुसार बिहार के कर्मा निवासी जालंधर यादव गुजरात से ट्रक में तिरपाल लादकर झारखंड जा रहा था जैसे ही ट्रक चालक अझुवा ससुर खदेरी नदी पुल के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर पहुँचे अचानक अनियंत्रित होकर ट्रक पलट गया जिसमें ड्राइवर को चोट आई है खलासी बाल बाल बच गया है मौके पर पहुंची पुलिस ने राष्ट्रीय राजमार्ग को खाली करवाते हुए मार्ग को सुचारू रूप से संचालन कराया है। और घायल चालक को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया है हादसे की जानकारी ट्रक मालिक को फोन के जरिए पुलिस ने दे दी है।

हाईवे पर तीन ट्रक टकराई, एक पलटी

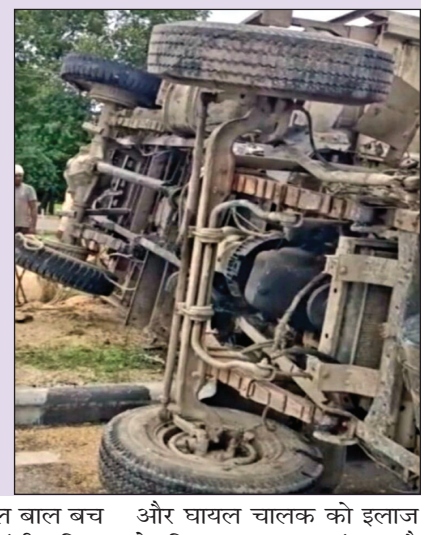

कौशाम्बी। जिले में नेशनल हाइवे पर तेज रफ्तार का कहर देखने को मिला है जहा तीन तेज रफ्तार ट्रके आपस में जबरदस्त टकरा गई,टक्कर के बाद एक ट्रक पलट पुलिस का कहना है कि नीमत रही कि तीनों ट्रक के चालक बाल बाल बच गए। घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के कल्यानपुर रिलायंस पेट्रोल पंप के पास भूसा लेकर जा रही एक ट्रक का टायर फट गया था जिसे चालक ने सड़क किनारे खड़ी कर रखी थी,तभी तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी,घटना के तुरंत बाद पीछे लगी हुई तीसरी ट्रक ने दूसरी ट्रक को टक्कर मार दी और पलट गई।घटना की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने हाइवे का रास्ता क्लियर कराया और आवागमन सुचारू रूप से चालू कराया। पुलिस का कहना है कि ट्रक की टक्कर और और ट्रक के पलट जाने के बाद कोई भी घायल नहीं हुआ है सभी लोग बाल-बाल बच गए हैं ग्रामीणों की मानें तो तीन ट्रकों के टक्कर और ट्रक के पलट जाने के बाद आधा दर्जन लोग घायल हुए हैं सूचना पर पहुंचे ट्रांसपोर्टर और वाहन स्वामियों ने घायलों को इलाज के लिए दूसरे शहरों में भर्ती कराया है हालांकि खबर लिखने तक घायलों का नाम पता नहीं मिल सका है।

तालाब नदी बनी तिल्हापुर मोड़ से लोधौर बाजार जाने वाली सड़क

अखंड भारत संदेश

अभिलेखों में सड़क गड्ढा मुक्त कर अफसरों ने निकाल लिया खजाने से

तिल्हापुर कौशाम्बी। अभिलेखों में सड़क मरम्मत कर अफसरों ने करोड़ों का बजट सरकारी खजाने से निकाल लिया है जिससे सड़के गड्ढा मुक्त नहीं हो सकी हैं और बरसात होते ही सड़कों पर जलभराव होने लगा और सड़कें तालाब और नदी का शक्ल ले चुकी है सड़कों पर आने जाने में लोगों को दिक्कतें होती है लेकिन अफसर मौज मस्ती करते दिखाई देते हैं जिले की तमाम सड़कें बरसात होते ही तालाब नदी बन गई हैं और आम जनमानस को सड़कों पर निकलने में दिक्कतों से जूझना पड़ता है बीते दिनों योगी सरकार ने सड़कों को गड्ढा मुक्त करने का निर्देश दिया था करोड़ों का बजट खजाने से निकल गया लेकिन सड़क गड्ढा मुक्त नहीं हुई है यदि योगी सरकार ने गड्ढा मुक्त योजना में सड़कों की मरम्मत कराए जाने के मामले की फिर से जांच कराई तो विभाग के अफसरों का जेल जाना तय है। चायल तहसील के तिलहापुर मोड़ से तिलगोड़ी आलमपुर होते हुए लोधउर बाजार तक जाने वाली सड़क पूरी तरह से गड्ढे में परिवर्तित हो गई है तालाब और नदी का स्वरूप यह सड़क ले चुकी है लेकिन सांसद विधायक से लेकर किसी अधिकारी ने इस सड़क की मरम्मत कराए जाने के लिए पहल नहीं किया है बरसात होते ही पूरी सड़क में जलभराव हो गया है सड़क में बड़े-बड़े गड्ढे हैं जिनमें पानी भर जाने से दुर्घटनाएं होती हैं पूरी सड़क गड्ढा युक्त हो जाने से लोगों को आने जाने में दिक्कतों से जूझना पड़ता है आवागमन के दौरान ग्रामीण सड़क पर गिरकर चोटिल हो रहे हैं लेकिन उसके बाद भी सड़क मरम्मत कराने की ओर अधिकारियों ने पहल नहीं की है कुछ महीने पहले सड़कों को गड्ढा मुक्त करने का निर्देश योगी सरकार ने दिया था लेकिन यह सड़क गड्ढा मुक्त नहीं हो सकी है हालांकि अभिलेखों में लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों ने भले ही सड़क को गड्ढा मुक्त कर सरकारी खजाने से करोड़ों का बजट निकालकर हिस्सा बांट कर लिया हो लेकिन हकीकत में मौके पर सड़क गड्ढा मुक्त नहीं हुई है जिले में सड़क मरम्मत में करोड़ों का बजट खर्च हो रहा है लेकिन किस सड़क पर बजट खर्च कर सड़क की मरम्मत कराई जा रही है यह बताने को कोई भी अधिकारी तैयार नहीं है इलाके के लोगों ने योगी सरकार का ध्यान आकृष्ट कराते हुए सड़क निर्माण में हेराफेरी करने वाले अफसर की गिरफ्तारी करा कर जेल भेजने और सड़क मरम्मत कराए जाने की मांग की है।

करोड़ों खर्च के बाद भी नगर पालिका भरवारी की सड़कें बनी नदी तालाब

हरायपुर कौशांबी योगी सरकार नगरों गांव के विकास के लिए कृत संकल्पित है और शासन से विकास के नाम पर बड़ा बजट भेजा जा रहा है लेकिन बजट में अफसरों की गंदी निगाह लग गई है जिससे नगर पालिका परिषद भरवारी क्षेत्र में विकास योजनाएं केवल अभिलेखों में संचालित हो रही है विकास के नाम पर कर्मचारी से लेकर अफसर मालामाल हो रहे हैं लेकिन देखने वाले अफसर भी चुप हैं आम जनता खामियाजा भुगत रही है शिकायतों के बाद भी नगर पालिका परिषद भरवारी में कुछ होता नहीं दिख रहा है नगर पालिका परिषद भरवारी की सड़कें तालाब और नदी बन चुकी है लोगों को आवागमन में दिक्कत होती है। नगर पालिका परिषद भरवारी के वार्ड नम्बर 19 वा 25 जिल्ला पर धर्मराज नगर की सड़कें नगर पालिका परिषद भरवारी को मुंह चिढ़ा रही है पूरी सड़क गड्ढे में तब्दील है पहली बारिश होते ही पूरी सड़क में पानी भर गया है वैसे तो इस रास्ते में पूरे वर्ष पानी भरा रहता है लोगों को आने जाने में दिक्कतें होती हैं मोहल्ले के लोगों द्वारा सड़क मरम्मत कराए जाने की बार बार मांग के बाद भी अफसर सड़क मरम्मत कराने को कतई तैयार नहीं है यह सड़क तालाब और नदी का शक्ल ले चुकी है जिस पर आने जाने में लोगों को दिक्कतों से जूझना पड़ रहा है पानी भर जाने के बाद सड़कों पर वाहन निकलने से मोहल्ले के लोगों के घरों में गंदे पानी के छीटे पड़ती हैं जिससे खाने पीने के सामान सहित घर के सामान गंदे हो जाते हैं जिससे ग्रामीणों में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है लेकिन अफसर मौज मस्ती करने में लगे हैं नगर पालिका परिषद भरवारी में बीते 2 वर्षों के दौरान विकास कार्यों के नाम पर करोड़ों खर्च किए जाने के मामले की योगी सरकार ने उच्चस्तरीय जांच कराई तो नगर पालिका परिषद भरवारी के भ्रष्टाचार की कलाई उजागर होगी और अफसरों की गिरफ्तारी तय है नगर पालिका परिषद भरवारी में नए अध्यक्ष के चुने जाने के बाद लोगों को उम्मीद जागी की समस्याओं का समाधान होगा लेकिन महीनों बीत जाने के बाद भी नगर पालिका में समस्याओं का समाधान नहीं हो सका है।

न्यूज झरोखा

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन की टीम को मनरेगा जेई योगेंद्र सिंह ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

टेढ़ी मोड़ कौशांबी सिराथू तहसील के अंतर्गत ब्लॉक कड़ा में राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन नमामि गंगे के तहत जांच टीम को हरी झंडी दिखाकर जेई मनरेगा योगेंद्र सिंह ने रवाना किया है ग्रामीण जल पूर्ति विभाग उत्तर प्रदेश जल जीवन मिशन के तहत संज्ञान संस्था के माध्यम से खंड विकास भवन कड़ा में कार्यशाला का आयोजन किया गया कार्यक्रम के दौरान शुद्ध जल उपयोग करने और अशुद्ध जल की पहचान के बारे में लोगों को बताया गया कार्यक्रम में प्रशिक्षक सुदामा त्यागी राधेश्याम यादव ने बताया कि हमारा जल दूषित कैसे होता है उन्होंने कहा कि दिन प्रतिदिन जल कम होते जा रहे हैं शुद्ध जल 3 प्रतिशत बचा है जिसमें पीने योग्य पानी मात्र 1 प्रतिशत बचा है जबकि भारत में.006 प्रतिशत है कार्यक्रम में एडीओ पंचायत राज किशोर भारती ग्राम पंचायत सचिव ग्राम प्रधान डी पी सी अंकुश सिंह,एडीपीसी विनोद कुमार विकास सिंह राजेश मणी धर्मेंद्र आदि लोग उपस्थित रहे योगेंद्र सिंह मनरेगा जेई ने हरी झंडी दिखाकर जांच टीम को रवाना किया।

शिकायत के बाद छप्पर झोपड़ी को अधिकारियों ने कराया तहस-नहस

करारी कौशांबी मंझनपुर तहसील अंतर्गत करारी थाना क्षेत्र के बैशकाटी गांव की सरकारी आराजी पर कुछ गरीब लोगों ने झोपड़ी और छप्पर डालकर सरकारी जमीन का उपयोग शुरू कर दिया था मामले की शिकायत आईजीआरएस के जरिए शासन तक ग्रामीणों ने की जांच के दौरान शिकायत सही पाई गई मंझनपुर तहसील के अधिकारियों के निर्देश पर स्थानीय लेखपाल पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंची बैश कांटी गांव की सरकारी भूमि पर बने छप्पर और झोपड़ी को राजस्व लेखपाल ने हटवाते आते हुए सरकारी जमीन को कब्जे से मुक्त कराया है सरकारी जमीन पर अवैध तरीके से बने झोपड़ी और छप्पर को हटाए जाने के बाद ग्रामीणों के बीच दहशत का माहौल है।

2 महीने में 22 गौवंश की मौत ने खड़े कर दिए विभाग पर सवाल

गौ संरक्षण केंद्र में लगातार हो रही गोवंश की मौत पर विश्व हिंदू परिषद पदाधिकारियों ने व्यक्त किया आक्रोश

करारी कौशाम्बी मंझनपुर तहसील क्षेत्र के कौशांबी ब्लाक के म्योहर ग्राम सभा गौशाला में गौवंशो के मरने का सिलसिला नही थम रहा है। 2 माह के अंदर 22 गौवंशो की मौत ने पशु चिकित्सा विभाग की पोल खोल दिया है, तो वहीं गौवंशो को हरा चारा नही खिलाया जा रहा है। सोमवार को इलाज के अभाव में फिर एक गौवंश की मौत हो गई, गाय के मृत देह को कुत्ते नोच रहे थे। मामले की सूचना विश्व हिंदू परिषद पदाधिकारियों व कार्यकताओं को हुई तो गौशाला पहुंच गए। गौशाला की स्थिति देख विहिप के लोगों में आक्रोश व्याप्त हो गया कुत्ते के नोचने से मृत गाय के देह में घाव था। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि बलराम सिंह मौके पर थे। विहिप के सवाल पर ग्राम प्रधान ने बताया की 2 माह पूर्व गौशाला में 142 गाय थी लेकिन मौजूदा समय गौशाला में 120 ही गाय हैं। इस पर विहिप के पदाधिकारियों ने नाराजगी जाहिर करते हुए गौशाला में लगे तीनों केयर टेकर को हटाने की मांग किया। 120 गौवंशो की देखरेख के लिए तीन कर्मचारी रामचंद्र, मन्नी लाल व जगजुबही देवी लगे हैं। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने कार्रवाई का आश्वासन दिया। इस मौके पर विहिप के जिला संगठन मंत्री विकास विहिप गौ रक्षा प्रमुख रूपेंद्र शर्मा, बजरंग दल नगर अध्यक्ष करारी, करन सिंह, गणेश वर्मा व राम सरन मौजूद रहे।

विशेष लोक अदालत का आयोजन 08 जुलाई एवं 12 अगस्त को

कौशाम्बी उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशन में 08 जुलाई 2023 को मोटर दुर्घटना प्रतिकर वाद एवं 12 अगस्त 2023 को एनआईएक्ट के मामलों के निस्तारण के लिए विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जायेंगा। यह जानकारी प्रभारी सचिव/अपर जनपद न्यायाधीश, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने देते हुए बताया कि विशेष लोक अदालत में मोटर दुर्घटना, दावा याचिका एवं चेक बाउन्स से सम्बन्धित मामलों का निस्तारण किया जायेगा।

तबीयत खराब होने पर विवाहिता को रखने से पति ने किया इनकार

कौशांबी सात जन्म तक साथ रहने की कसम खाने वाले पति ने पत्नी के बीमार होते ही उसे रखने से इंकार कर दिया है शादी के कुछ दिनों तक सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था लेकिन विवाहिता की तबीयत खराब हो जाने से अब पति उसे साथ रखने से इंकार कर रहा हैं। जानकारी के मुताबिक संदीपन घाट थाना क्षेत्र के सैता गांव के लल्लू पुत्र पितम्बर ने अपनी बेटी की शादी प्रयागराज के पुरामुफ्ती थाना क्षेत्र के मीरापुर गांव के सुनील कुमार पुत्र कल्लू के साथ एक वर्ष पहले की थी शादी के कुछ महीनो तक सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था लेकिन कुछ महीनो बाद बीमार होते ही विवाहिता के साथ मारपीट गाली गलौज करना शुरू कर दिया मायके से विवाहिता जब ससुराल पहुंची तो उसे ससुराल में रहने नहीं दिया जा रहा है जिस पर महिला ने मामले की जानकारी पुलिस को दी।

संपादकीय

देश की जरूरत, समान नागरिक संहिता

अब वह समय आ गया है कि भारत में समान नागरिक संहिता लागू कर दी जाए। एक लम्बे अरसे से देश की जनता को इसकी जरूरत महसूस हो रही है। एक देश दो कानून वैसे भी लोकतंत्र के खिलाफ है। समान नागरिक संहिता के खिलाफ दुष्प्रचार इसीलिए किया जा रहा है क्योंकि आम लोगों को इसका भान नहीं है कि उसमें क्या और कैसे प्रविधान होंगे? इसे देखते हुए उचित यह होगा कि विधि आयोग लोगों के सुझाव प्राप्त कर यथाशीघ्र समान नागरिक संहिता का कोई मसौदा देश की जनता के विचारार्थ पेश करे। इससे ही समान नागरिक संहिता को लेकर दुष्प्रचार करने वालों पर लगाम लगेगी।विधि आयोग की ओर से समान नागरिक संहिता पर लोगों से सुझाव मांगने के बाद भोपाल की एक सभा में प्रधानमंत्री का यह कहना उल्लेखनीय है कि यह संहिता समय की मांग है। इसका अर्थ है कि उनकी सरकार समान नागरिक संहिता के निर्माण को लेकर प्रतिबद्ध है। यह अच्छा हुआ कि उन्होंने इसका उल्लेख किया कि कुछ राजनीतिक दल समान नागरिक संहिता को लेकर मुसलमानों को भड़काने का काम कर रहे हैं। यह काम वास्तव में हो रहा है।अनेक राजनीतिक दल और कुछ सामाजिक-धार्मिक संगठन जिस तरह समान नागरिक संहिता के खिलाफ खड़े होते दिख रहे हैं, वह शुभ संकेत नहीं। समान नागरिक संहिता के खिलाफ उठ रही आवाजें न केवल संविधान निमार्ताओं के सपनों के विरुद्ध हैं, बल्कि महिलाओं के अधिकारों की अनदेखी करने वाली भी हैं। इसके अतिरिक्त ये एक देश में दो विधान की स्थिति बनाए रखने वाली भी हैं।विश्व के किसी भी पंथनिरपेक्ष देश में अलग-अलग निजी कानून नहीं हैं, लेकिन भारत में वे इसके बाद भी बने हुए हैं कि संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में यह लिखा गया है कि राज्य देश के सभी लोगों के लिए एक समान कानून बनाएगा। क्या यह विचित्र नहीं कि हिंदुओं के निजी कानूनों को तो संविधान लागू होने के कुछ समय बाद ही संहिताबद्ध कर दिया गया, लेकिन अन्य समुदायों के निजी कानून बने रहने दिए गए। निःसंदेह ऐसा वोट बैंक की सस्ती राजनीति के कारण किया गया। इसका कोई मतलब नहीं कि सात दशक बाद भी अलग-अलग समुदाय भिन्न-भिन्न निजी कानूनों के जरिये संचालित होते रहें और वे भी तब, जब उनके कारण महिलाओं के अधिकारों की उपेक्षा होती हो और वे अन्याय का शिकार बनती हों। समान नागरिक संहिता को लेकर लोगों को किस तरह गुमराह किया जा रहा है, इसका पता इससे चलता है कि कुछ राजनीतिक दल यह प्रचारित करने में लगे हुए हैं कि इससे विभिन्न समुदायों की धार्मिक आजादी में हस्तक्षेप होगा।यह निरा झूठ है। समान नागरिक संहिता से किसी समुदाय की धार्मिक रीतियों में कोई हस्तक्षेप नहीं होने वाला। वह तो केवल सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में सहायक होगी। जैसे बाल विवाह, तीन तलाक की कुप्रथा खत्म करने की जरूरत थी, वैसे ही उन कुरीतियों को भी खत्म किया जाना चाहिए, जिनके कारण महिला अधिकारों का हनन होता है। वास्तव में इसी कारण कई बार विभिन्न उच्च न्यायालय और यहां तक कि सर्वोच्च न्यायालय भी समान नागरिक संहिता की आवश्यकता जता चुका है। समान नागरिक संहिता के खिलाफ दुष्प्रचार इसीलिए किया जा रहा है, क्योंकि आम लोगों को इसका भान नहीं है कि उसमें क्या और कैसे प्रविधान होंगे ? इसे देखते हुए उचित यह होगा कि विधि आयोग लोगों के सुझाव प्राप्त कर यथाशीघ्र समान नागरिक संहिता का कोई मसौदा देश की जनता के विचारार्थ पेश करे। इससे ही समान नागरिक संहिता को लेकर दुष्प्रचार करने वालों पर लगाम लगेगी।समान नागरिक संहिता के मामले में यदि विपक्षी दलों के साथ-साथ कांग्रेस के पास कहने को कुछ है तो केवल यही कि आखिर उसकी पहल इसी समय क्यों की जा रही है ? यह कुछ वैसा ही कुतर्क है जैसा अयोध्या मामले में सुप्रीम कोर्ट के समक्ष दिया गया था। तब यह कहा गया था कि इस मामले की सुनवाई आम चुनाव के बाद की जानी चाहिए। कुछ विपक्षी दलों ने समान नागरिक संहिता पर जिस तरह सकारात्मक और तार्किक रवैया अपना लिया है, उससे कांग्रेस की दुविधा बढ़ जाना स्वाभाविक है। कई विपक्षी नेताओं के साथ कांग्रेस के भी कुछ नेता समान नागरिक संहिता को समय की मांग बता रहे हैं। कांग्रेस को वोट बैंक की सस्ती राजनीति के कारण वैसी कोई भूल करने से बचना चाहिए, जैसी उसने शाहबानो मामले में की थी। इसकी कीमत केवल उसे ही नहीं, देश को भी चुकानी पड़ी।यदि शाहबानो मामले में राजीव गांधी की सरकार कट्टरपंथी तत्वों के आगे झुकने के बजाय संविधानसम्मत फैसला करती और सुप्रीम कोर्ट के फैसले के साथ खड़ी होती तो आज स्थिति दूसरी होती। समान नागरिक संहिता का निर्माण लंबित रहना एक तरह से संविधान निमार्ताओं के सपनों को जानबूझकर न पूरा करना है। कांग्रेस को इसकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि जवाहरलाल नेहरू ने तमाम विरोध के बाद भी हिंदू कोड बिल के मामले में किस तरह दृढ़ रवैया अपनाया था। यूनिफॉर्म सिविल कोड का अर्थ होता है समान नागरिक संहिता। संविधान में भारत में रहने वाले सभी नागरिकों के लिए एक समान कानून का प्रावधान है ,फिर चाहे वह किसी भी जाति,धर्म, समुदाय से संबंधित हो।समान नागरिक सहिंता में शादी, तलाक और जमीन जायदाद के हिस्से में सभी धर्मों के लिए केवल एक ही कानून लागू किया गया है। न्दपवितउ ब्यअपस ब्वकम का अर्थ स्पष्ट है सभी नागरिकों के लिए एक कानून। इसका किसी भी समुदाय से कोई संबंध नहीं है। इस कोड के तहत राज्य में निवास करने वाले लोगो के लिए एक समान कानून का प्रावधान किया गया है। यानी की धर्म के आधार पर किसी भी नागरिक को विशेष लाभ नहीं मिलेगा।भारत में अभी सिर्फ एक राज्य है जहाँ यूनिफार्म सिविल कोड लागू है वह राज्य है गोवा। गोवा में पुर्तगाल सरकार के समय से ही यूनिफार्म सिविल कोड को लागू किया गया था। वर्ष 1961 में गोवा सरकार यूनिफार्म सिविल कोड के साथ ही बनी थी। भारतीय संविधान के भाग 4 में अनुच्छेद 44 के अंतर्गत भारतीय राज्य को देश में सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता का निर्माण करने को कहा गया है जो पुरे देश में लागू होता हो।

महाराष्ट्र के बाद अब बिहार में भी कुछ बड़ा होने वाला है !

अशोक

महाराष्ट्र में हुई राजनीतिक उथल - पुथल के बाद के बाद लगता है कि बिहार में भी कुछ बड़ा होने वाला है क्योकि जॉब के लिए जमीन घोटाले मामले में सीबीआई ने बिहार के डिप्टी मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव समेत कई अन्य के खिलाफ चार्जशीट दाखिल कर दी हैं । दिल्ली के राउज एवेन्यू कोर्ट में चार्जशीट दाखिल करने के बाद एक बार फिर से बिहार में सियासी हलचल तेज हो गई है। साल 2017 में भी जब सीबीआई ने आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव, उनकी पत्नी राबड़ी देवी और तत्कालीन डिप्टी मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव समेत 11 लोगों को आरोपी बनाया गया था, उस वक्त भी तेजी से राजनीतिक परिस्थितियां बदली थी। एक बार फिर राजनीतिक हलचल बढ़ गई है।

लोगों को फिर छह साल पहले की ऐसी ही घटना याद आने आने लगी है। उस समय भी सीबीआई ने आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव, उनकी पत्नी राबड़ी देवी और तत्कालीन डिप्टी मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव समेत 11 लोगों को आरोपी बनाया गया था जिसके बाद नीतीश कुमार ने न सिर्फ तेजस्वी को इस्तीफा देने के लिए कहा बल्कि बाद में राजद के साथ गठबंधन भी तोड़ दिया और भाजपा के साथ फिर से सरकार बना ली । अब एक बार फिर बिहार में वही स्थिति है.जॉब के लिए जमीन घोटाले में तेजस्वी यादव के खिलाफ चार्जशीट दाखिल कर दी गई है, तो लालू परिवार पर गिरफ्तारी की तलवार लटक गई है जिसके बाद राजनीतिक विश्लेषक यह अनुमान लगाने में व्यस्त हैं कि वर्ष 2017 की तरह मुख्यमंत्री नीतीश फिर से तेजस्वी यादव को कोई सलाह देंगे, या फिर इस बार वे चुप्पी साधे रखेंगे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एक ऐसे राजनेता माने जाते हैं, जो करप्शन के खिलाफ कार्रवाई करने से नहीं चूकते हैं फिर चाहे वह अधिकारियों के खिलाफ हो या अपने मंत्रियों के विरुद्ध।यही कारण है कि वर्ष 2017 में जब सीबीआई ने रेलवे होटल टेंडर मामले में तेजस्वी यादव समेत 11 लोगों को आरोपी बनाया था तो उन्होंने तेजस्वी यादव से जवाब मांगा था। नीतीश कुमार का तब भी यह कहना था कि सारी बातें जनता के डोमेन में आनी चाहिए लेकिन जब तजस्वी यादव सभी सवालों का जवाब बिन्दुवार देने में असमर्थ रहे तो नीतीश कुमार ने महागठबंधन की सरकार से नाता तोड़ कर भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाई। बिहार में सीबीआई और ईडी की सक्रियता अचानक बढ़ गई थी । इसे लेकर खुद तेजस्वी यादव ने भी सार्वजनिक तौर पर कहा था कि पुराने मामले में उनके खिलाफ आरोप पत्र भी दाखिल हो सकता है। अब राजनीतिक विश्लेषकों की ओर से यह आशंका जताई जा रही है कि कहीं भाजपा की यह सुनियोजित योजना तो नहीं है।

हाल ही में हुई राजभवन में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और भाजपा सांसद सुशील मोदी के बीच हुई मुलाकात को भी राजनीतिक दृष्टिकोण से काफी अहम माना जा रहा है हालांकि सुशील मोदी ने बाद में इसे अचानक हुई मुलाकात करार दिया। वहीं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस मुलाकात पर कुछ नहीं कहा लेकिन राजभवन की ओर से इसे शिष्टाचार भेंट करार दिया गया। अब जब जिस तरह से तेजी से राजनीतिक घटनाक्रम में बदलाव हो रहा है, उसे देखते हुए आने वाले कुछ दिनों में बड़े राजनीतिक परिवर्तन की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।वहीं राजभवन से लौटने के दो दिन बाद ही नीतीश कुमार ने अपने सभी विधायकों और सांसदों को घर पर मिलने के लिए बुलाया। बताया गया कि वह सभी से चुनाव को लेकर फीडबैक ले रहे थे लेकिन तेजस्वी पर चार्जशीट दायर होने के बाद अब इस मुलाकात के मायने भी सामने आ गए हैं। बताया जाता है कि लालू परिवार पर चार्ज शीट दाखिल होना भाजपा के लिए बिल्ली के भागों छींका टूटने वाली कहावत को चरितार्थ करता है । जातिगत समीकरणों में उलझी बिहार की राजनीति में भाजपा को अकेले दम पर कुछ नहीं कर पाएगी, इस हकीकत से पार्टी के नेता पूरी तरह परिचित हैं। लेकिन भाजपा यहां आसानी वॉक ओवर दे देगी यह भी मानना बड़ी भूल है। भाजपा ने पूरा ध्यान हिंदी पट्टी के इस बड़े राज्य पर केंद्रित कर दिया है क्योंकि इस राज्य में लोकसभा की 40 सीटें हैं। लोकसभा चुनाव 2019 में भाजपा और नीतीश कुमार की पार्टी ने मिलकर 39 सीटें जीत ली थीं लेकिन अब नीतीश कुमार आरजेडी के साथ हैं। आरजेडी और जेडीयू कुल वोट बैंक भाजपा से बहुत ज्यादा है।

एक तरफ लालू यादव के परिवार पर चार्जशीट दाखिल होने की हलचल के बीच दूसरी तरफ गृह मंत्री अमित शाह लगातार बिहार की रैली कर रहे हैं। अभी कुछ दिन पहले ही वो चंपारण के चनपटिया गए थे और उसके बाद लखीसराय गए। शाह का दौरा पिछले हफ्ते पटना में 15 विपक्षी दलों के 32 नेताओं की बैठक के बाद हुआ।

शाह की रैली में बिहार भाजपा अध्यक्ष सम्राट चौधरी और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह सहित राज्य में पार्टी के सभी शीर्ष नेता मौजूद थे। लखीसराय मुंगेर लोकसभा क्षेत्र के अंदर आता है जिसका प्रतिनिधित्व जेडीयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह करते हैं।

सभी दौरों में अमित शाह ने नीतीश कुमार पर जमकर हमला करते रहे। ऐसे में ये सवाल उठने लगा है कि कहीं भाजपा की नजर नीतीश कुमार पर तो नहीं है या फिर महाराष्ट्र की तरह बिहार में भी बिसात बिछाए जाने की तैयारी है। दरअसल विपक्षी एकता के लिए कवायद नीतीश कुमार के साथ ही शरद पवार भी कर रहे थे। भाजपा ने महाराष्ट्र में एनसीपी को तगड़ा झटका दे दिया है। इस घटनाक्रम के बाद शरद पवार कमजोर हो गए हैं लेकिन अभी नीतीश कुमार की ओर से चुनौती बरकरार है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 29 जून को लखीसराय दौरे पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए उन्हें 'पलटू बाबू' करार दिया, उन्होंने कहा कि नीतीश लालू प्रसाद की आंखों में धूल झोंक रहे हैं। शाह ने नीतीश कुमार के बारे में कहा, 'पलटू बाबू नीतीश कुमार पूछ रहे थे कि नौ साल में (केंद्र द्वारा) क्या किया गया। कम से कम उन लोगों के लिए कुछ सम्मान रखें जिनके साथ आप बैठे और जिनकी वजह से आप मुख्यमंत्री बने। नीतीश के बारे में अमित शाह के इस बयान के बाद ये कयास लगाए जा रहे हैं कि क्या भाजपा की नजर नीतीश कुमार पर है।

बताया जाता है कि ये तो साफ है कि बिहार पर गृह मंत्री अमित शाह खास ध्यान दे रहे हैं। अमित शाह के तेवर से ये साफ हो गया है कि पार्टी 2024 लोकसभा के चुनाव की तैयारी कर रही है। अमित शाह ने जिस तरह विपक्ष पर निशाना साधा वो ये साफ बता रहा था कि महाविपक्ष के जुटान को भाजपा गंभीरता से ले रही है। हो सकता है कि भाजपा बिहार में भी जेडीयू को भी तोड़ दे।केन्द्रीय गृह मंत्री ने 27 मिनट के अपने भाषण में 8 बार नीतीश कुमार का नाम लिया। ये इस बात की तरफ इशारा है कि भाजपा नीतीश पर ध्यान दे रही है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि भाजपा नीतीश को भाजपा में लाना चाहेगी, इससे पार्टी को नुकसान के सिवाए नफा नहीं होगा। वो नीतीश की पार्टी को तोड़ना चाह रही है, भाजपा का मकसद नीतीश की पार्टी को तोड़ कर विपक्षी एकता को कमजोर करना है। कुछ जानकारों ने बताया कि भाजपा ने राजनीति के लिए कुछ मॉडल बनाए हैं, जिसमें से एक हिंदू राष्ट्र बनाना है। भाजपा लोकसभा 2024 से पहले इसी का इस्तेमाल कर रही है। समान नागरिक संहिता इसी का एक उदाहरण है। जिन राज्यों में इस कानून की मुखालफत की जा रही है भाजपा पहले इन्हीं राज्यों को टारगेट कर रही है। भाजपा एनसीपी के मॉडल को नष्ट करने के लिए पूरी कोशिश कर रही है। इसी तरह जेडीयू भी भाजपा के निशाने पर है। लोकसभा चुनावों से पहले भाजपा बिहार में नीतीश को अप्रसांगिक बनाना चाहती है।

विपक्षी एकता को झटका

ललित गर्ग

वर्ष 2024 के चुनाव से पूर्व भारतीय राजनीति के अनेक गुणा-भाग और जोड़-तोड़ भरे दृश्य उभरेंगे। महाराष्ट्र में ताजा राजनीतिक घटनाक्रम को देखते हुए तो ऐसा ही लगता है। वहां जो हुआ है उससे विपक्ष में खलबली है, घबराहट एवं बेचैनी स्पष्ट देखी जा सकती है, जो पटकथा महाराष्ट्र में लिखी गयी है, वही बिहार में भी लिखी जा सकती है। राजनीतिक दलों के भ्रष्टाचार को दबाने के लिये, सत्ताकांक्षा एवं आंतरिक असंतोष के चलते ऐसे समझौते, दलबदल एवं उल्टी गिनतियां अब आम बात हो गयी है। कल तक सत्ता पक्ष को कोसने वाले अजित पवार अपनी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) से बगावत कर डिप्टी सीएम बन गए हैं। राजनीति के चाणक्य माने जाने वाले शरद पवार की पार्टी का यह हश्र आश्चर्यकारी ही नहीं, बल्कि एक बड़ा विरोधाभास एवं विपक्षी एकता का संकट भी है। एक तरफ इस तरह के घटनाक्रम को राजनीतिक दलों में आंतरिक असंतोष व गुटबाजी से जोड़ा जा सकता है तो दूसरी तरफ सत्ता के उस स्वाद की आकांक्षा से भी, जिसे हर कोई पाना चाहता है। राजनीतिक दलों में बगावत का ऐसा दौर जब भी होता है इस बात को जोर-शोर से प्रचारित किया जाता है कि उनके दल में लोकतंत्र नहीं रहा इसलिए वे अपने विरोधियों से हाथ मिला रहे हैं। बड़ा प्रश्न है कि इस तरह राजनीतिक दलों से लोकतंत्र गायब होता रहा है, तो ऐसे अलोकतांत्रिक दल कैसे देश के लोकतंत्र को हांक सकेंगे? आजकल राजनीति में उल्टी गिनती एक ह्वसूचकह्व बन गई है, ह्वकिसी महत्वपूर्ण राजनीतिक ऊटापटक या घटनाक्रम की शुरूआत के लिएह्व। विभिन्न राजनीतिक दलों में ऐसी कई उल्टी गिनतियां चल रही हैं। कई कद्दावर नेताओं के सार्वजनिक/भावी जीवन की उल्टी गिनतियां चल रही हैं। करोड़ों-अरबों के घोटाले और रोज कोई न कोई उसमें और पलीता लगाने वालों के नाम जुड़ रहे हैं। इन पर ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स की कार्रवाई की गिनती शुरू हो रखी है। किसी की भी हालत ठीक नहीं है। ये उल्टी गिनतियां परिचायक हैं कोई नया पर्दा उठने की, किसी नए विस्फोट की। भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे नेताओं की कई उल्टी गिनतियां हुई, फलस्वरूप कई सरकारें गिरीं/बनीं/पर टिकी नहीं। अबकी बार कितनी दूर जाएगी-यह गिनती, पूरी होने पर ही मालूम होगा। पर कांप अभी से कई नेता रहे हैं। इसीलिये ऐसे बेमैल गठबंधन एवं ऊटापटक देखने को मिल रही है, आम चुनाव आने तक ऐसे तरह-तरह के परिदृश्य उभरेंगे। ऐसे में देखना होगा कि जांच एजेंसियां इन नेताओं के कथित भ्रष्टाचार के मामलों में आगे क्या करती हैं। बहरहाल, दलबदल भले ही महाराष्ट्र में हुआ हो, इसकी सबसे बड़ी चोट राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी एकता पर पड़ी है। शरद पवार विपक्ष के सबसे कद्दावर नेताओं में हैं और विपक्षी एकता के प्रयासों में अहम भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे में उनके पैरों के नीचे से उनकी लगभग पूरी पार्टी को खींच कर भाजपा ने यह संदेश दिया है कि विपक्षी नेता जो भी दावे करें, उनकी पार्टी ही उनके काबू में नहीं है। यह बहुत बड़ा संदेश है, जिसका जबाव तलाशना भी विपक्षी दलों के लिए जरूरी है।भाजपा एक सक्षम एवं ताकतवर पार्टी है, नरेन्द्र मोदी एवं अमित शाह करिश्माई राजनेता है, अनेकानेक विशेषताओं वाले इन दोनों नेताओं की एक बड़ी विशेषता यह है कि ये अपने साथ दगा करने, धोखा देने या विश्वासघात करने वालों को कभी माफ नहीं करते। मौका आने पर ये ऐसे लोगों को सबक जरूर सिखाते हैं, महाराष्ट्र में सियासी उठापटक ऐसा ही सबक है। चुनाव पूर्व गठबंधन को नकारते हुए 2019 में शिवसेना ने अपने सहयोगी दल भाजपा से संबंध तोड़ जिस तरह सरकार बनाई और उसके जबाव में बाद में भाजपा ने जो दांव खेला, किसी से छिपा नहीं नहीं है। विधानसभा चुनाव के दौरान तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष रहे अमित शाह को चुनाव परिणाम बाद उद्धव ठाकरे ने धोखा दे दिया था। इसी कारण एकनाथ शिंदे शिवसेना से बगावत कर सीएम बनने में कामयाब हुए। दरअसल महाराष्ट्र में राकांपा के साथ जो कुछ भी हुआ उसका एक बड़ा कारण यह भी है कि शरद पवार चुनाव परिणाम के बाद भाजपा के साथ सरकार बनाने को राजी होकर भी तीन-चार दिनों में ही उन्होंने पलटी मार ली थी। इस तरह से शरद पवार ने भी अमित शाह को धोखा दिया था। एक चीज साफ नजर आती है कि भाजपा को धोखा देने वाले नेता अथवा पार्टी को अमित शाह राजनीतिक रूप से माफ नहीं करते। अमित शाह उस नेता या पार्टी को राजनीतिक सबक सिखाने के लिए बस सही समय का इंतजार करते हैं।

ताजा घटनाक्रम के लिए विपक्षी दल भाजपा को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं, भाजपा इसे राकांपा का अंदरूनी मामला बता रही है तो एनसीपी के बागी नेता किसी दबाव से इनकार करते हुए विकास के लिए शिंदे सरकार का साथ देने की बात कह रहे हैं। राजनीतिक जोड़-तोड़ के माहिर खिलाड़ी रहे राकांपा प्रमुख शरद पवार के लिए यह निश्चित ही बड़ी राजनीतिक मात साबित हुई है। ऐसे वक्त में जब समूचे भारतीय राजनीति में पवार खुद विपक्षी एकता के प्रयासों में जुटे थे, उनकी ही पार्टी में यह विभाजन महाराष्ट्र की नई राजनीतिक इबारत लिखने वाला होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। लेकिन अहम सवाल यही उठता है कि देश की राजनीति आखिर सत्ता की खातिर ऐसे रास्ते पर क्यों चलने लगी है? पृथक चुनाव चिह्न पर जीत कर आने वाले आसानी से विरोधियों से हाथ क्यों मिलाने लगे हैं? देखा जाए तो धनबल के सहारे सत्ता पाना और सत्ता के सहारे धनबल हासिल करना आज की राजनीति की विकृति एवं विसंगति बन गया है। महाराष्ट्र में राकांपा के अंदर मची उठापटक के बाद उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी, बिहार में जनता दल युनाइटेड और झारखंड में झारखंड मुक्ति मोर्चा को पार्टी में टूट का खतरा सताने लगा है। ऐसा ही डर कुछ और छोटी पार्टियों को भी है। लेकिन सबसे ज्यादा घबराहट जनता दल युनाइटेड खेमे में देखी जा रही है। जनता दल युनाइटेड की यह घबराहट स्वाभाविक भी है क्योंकि उसने भाजपा को जो धोखा दिया था उसका जवाब अब तक भाजपा ने नहीं दिया है। इन विपक्षी दलों की यह घबराहट सत्ता-लोलुपता की प्रवृत्ति के साथ किये गये भ्रष्टाचार के कारण है। शायद यही वजह है कि विपक्षी पार्टियों की बेंगलुरु में प्रस्तावित बैठक टलने की चर्चा भी शुरू हो गयी, लेकिन कांग्रेस ने यह स्पष्ट कर दिया कि बैठक बेंगलुरु में ही 17 और 18 जुलाई को ही होगी। कांग्रेस नेताओं ने यह बताना भी जरूरी समझा कि महाराष्ट्र में हुई घटनाओं का विपक्षी दलों के एकता के प्रयासों पर कोई असर नहीं पड़ने वाला। मगर पार्टी में सेंध लगने के बाद इन दलों के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने राजनीतिक धरातल को बनाए रखने का है। सवाल यह खड़ा हुआ है कि क्या नेताओं के साथ-साथ पार्टी का वोट आधार भी दूसरे खेमे में चला गया है। विपक्षी दलों की एकता से पहले ही उनके बिखरने की घटनाएं आश्चर्यकारी होने के साथ ही राजनीतिक दलों के कमजोर मनोबल की परिचायक है।एक और बड़ा प्रश्न है कि भारतीय राजनीति की शुचिता एवं आदर्श की रक्षा कैसे हो पायेगी? क्योंकि उभर रही सबसे बड़ी विडम्बना एवं विसंगति यही है कि जनता जिसको सत्ता से बाहर रखना चाहती है वह ऐसे अनचाहे घटनाक्रम से सत्ता हथिया लेता है। दलबदल कानून की धज्जियां उड़ती हुई देखकर भी अदालतों से लेकर चुनाव आयोग तक ज्यादा कुछ नहीं कर पा रहे। चुनाव बाद होने वाले गठबंधनों में सत्ता-लोलुपता की प्रवृत्ति तब ही रुकेगी जब संवैधानिक प्रावधानों में जरूरी बदलाव हों। गैर लोकतांत्रिक गठबंधनों को रोकने के लिये राजनीतिक दलों को सशक्त आचार-संहिता से बांधना भी जरूरी है। भारत की जनता को भी राजनीतिक श्रेष्ठ की लम्बे समय से प्रतीक्षा है।

फ्रांस को नस्लीय भेदभाव खत्म करने की आवश्यकता !

सुनील कुमार महला

इन दिनों फ्रांस नफरत की आग में जल रहा है। वहां हिंसा पर हिंसा हो रही है। हमें यहां यह जानने समझने की जरूरत है कि आखिर फ्रांस के नफरत की आग में जलाने के पीछे आखिर कारण क्या हैं ? तो इस संबंध में जानकारी देना चाहूंगा कि हाल ही में फ्रांस की राजधानी पेरिस के पास 17 वर्षीय एक युवक नाहेल को ट्रैफिक पुलिस की ओर से ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने पर गोली मार दी गई और इसके बाद वहां हिंसा भड़क उठी। मीडिया के हवाले से जानकारी मिली है कि पुलिस ने जिस 17 वर्षीय नाहेल को गोली मारी, वो अपनी मां की इकलौती संतान था। ` वो डिलीवरी ब्वॉय का काम करता था और रग्बी का लीग प्लेयर था। वास्तव में, यह बहुत ही संवेदनशील और गंभीर है कि फ्रांस में घटना के बाद जगह-जगह आगजनी हो रही है। लोगों में इतना गुस्सा है कि उन्होंने शहर की अनेक इमारतों, यहां तक कि दुकानों और वाहनों तक को आग के हवाले कर दिया है। बहुत नुक्सान हुआ है। आंकड़ों के मुताबिक 1350 गाड़ियों और 234 इमारतों को आग के हवाले कर दिया गया। सार्वजनिक जगहों पर आग लगाने की 2,560 घटनाएं हुई हैं।फ्रांस में अनेक स्थानों पर आज पथराव हो रहा है। स्थिति बहुत ही गंभीर बनी हुई है। जानकारी देना चाहूंगा कि ट्रैफिक जांच के दौरान नाहेल की हत्या का एक वीडियो भी सामने आया है। इस विडियो में यह देखा गया कि ट्रैफिक नियम का उल्लंघन करने पर पुलिस वाला 17 साल के नाबालिग नाहेल को गोली मार देता है, जिसके बाद नाहेल की मौत हो जाती है। इसके बाद भड़के दंगों में पुलिस ने अब तक हजारों लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है। हालांकि दोषी पुलिस अफसर को भी गिरफ्तार कर लिया गया है, लेकिन हिंसा है कि थमने का नाम नहीं ले रही है। बताया जा रहा है कि पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़पों का सिलसिला लगातार जारी है। इन दंगों में पुलिस के 70 से अधिक लोग घायल हुए हैं।जानकारी मिलती है कि फ्रांस में हिंसा की चौथी रात स्थिति पर काबू करने के लिए सरकार ने करीब 45 हजार पुलिस अफसरों को तैनात किया गया है। वास्तव में,फ्रांस के हालात इतने खराब हो चुके हैं कि बीते पांच दिनों में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों दो बार इस घटनाक्रम को लेकर आपातकालीन बैठक बुला चुके हैं। स्थिति को संवेदनशील देखते हुए कई शहरों में कर्फ्यू लगाया गया है।इस बीच फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने जर्मनी का अपना दौरा तक टाल दिया। जानकारी देना चाहूंगा कि तेईस साल में पहली बार फ्रांस के राष्ट्रपति जर्मनी का आधिकारिक दौरा करने वाले थे और वर्तमान में जर्मनी के दौरे के लिए अगली तारीख का अब तक एलान नहीं किया गया है।

फ्रांस के गृह मंत्री ने यहां तक कहा है कि वह आपातकाल की आशंकाओं को भी खारिज नहीं कर रहे हैं। कई शहर आगजनी की घटनाओं के बाद धू-धू कर जल रहे हैं। हालांकि सरकार सुरक्षा बलों की अधिक तैनाती कर रही है। दरअसल, फ्रांस में आज भी नस्लवाद की समस्या है।फ्रांसीसी समाज में कई लोग नस्लवाद को एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे के रूप में मानते हैं। फ्रांस में यहूदी-विरोधी, साथ ही ईसाई धर्म और इस्लाम से जुड़ी नस्लों के प्रति पूर्वाग्रह का एक लंबा इतिहास रहा है और कुछ लोग इस घटना को नस्लवाद के चश्मे से देख रहे हैं, जो कि ठीक नहीं ठहराया जा सकता है। किशोर की मौत के बाद संयुक्त राष्ट्र ने भी यह बात कही है कि फ्रांस को अपनी पुलिस में नस्लीय भेदभाव के गहरे मुद्दों का समाधान करना चाहिए।उल्लेखनीय है कि अल्जीरियाई मूल के 17 वर्षीय किशोर की पुलिस की गोली से हुई मौत के बाद पूरे देश में भड़की हिंसा की आग थमी नहीं है।

सच तो यह है कि इस हिंसा ने पूरे फ्रांस को हिलाकर रख दिया है। इस घटना की जितनी भी निंदा की जाए, वह कम है। वास्तव में, हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं होता है, इसलिए जल्द से जल्द हिंसा पर लगाम लगनी चाहिए।समस्या का समाधान जोर जबरदस्ती या पुलिसिया कार्रवाई से भी नहीं हो सकता है। इसलिए सरकार को सौहार्दपूर्ण तरीके अपनाकर फ्रांस में हो रही हिंसा पर लगाम लगाने की जरुरत है।

सब के लिए हितकारी है सामान नागरिक संहिता

विवेक रंजन श्रीवास्तव

भारतीय संविधान विश्व के चुनिंदा आदर्श डाक्यूमेंट्स में से एक है . हमारे संविधान निमार्ताओ ने बड़े सोच विचार के उपरांत इसमें यह प्रावधान तो किया कि हमें देश में यूनिफॉर्म सिविल कोड अपनाना है, किन्तु अन्य कई मामलों जैसे राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी , आरक्षण , काश्मीर या पूर्वोत्तर के मसलों पर लचीली व्यवस्थाओ के अंतर्गत वउउ को भी तुरंत अपनाया नहीं गया और न ही इसके लिये भी कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की गई . परिणाम यह हुये कि वोट की तुष्टीकरण की राजनीति ने अपने पैर पसार लिये और विविधता का हवाला देकर इस अति आवश्यक कार्य को सरकारों द्वारा लगातार टाला जाता रहा . पहले जब पूर्ण बहुमत की सरकारें थीं तो उन्होने अपने वोट बैंक को बनाये रखने के लिये कामन सिविल कोड नहिं अपनाया , फिर बीच में संविद सरकारें बनी तब तो इसे लागू करना वैधानिक तरीके से संभव ही नहीं था . अब जब बी जे पी की पूर्ण बहुमत की सरकार है तब भी अन्य मुद्दों की प्राथमिकता के चलते अब तक यह लागू नहीं किया गया है . अब जब देश में समन्वय , समरसता के लिये इसे लागू करने के प्रयास शुरू हुये हैं तो एक पेंडिग बड़े कार्य को बहुमत के समर्थन के बाद भी विरोधी दलों में से कोई इसे ध्रुवीकरण का बहाना कह रहा है तो कोई इसे जैसा चल रहा है वैसे चलते रहने की सलाह देता है . कुछ कट्टर पंथियों में बेवजह एक आदर्श व्यवस्था में उनकी जड़ता की वजह से खतरा लग रहा है . फिलहाल समान नागरिक संहिता भारत में नागरिकों के लिए एक समान कानून को बनाने और लागू करने का एक प्रस्ताव है जो सभी नागरिकों पर उनके धर्म, लिंग पर बराबरी से लागू होना है . वर्तमान चलतू विवादास्पद स्थिति यह है कि धर्मनिरपेक्ष होते हुये भी हमारे देश में विभिन्न धार्मिक नियमों के अनुसार कुछ धर्मों के लोग संचालित हो रहे हैं . देश में समान नागरिक संहिता लागू हो जाने पर सच्चे अर्थों में भारत में धर्म निरपेक्षता लागू हो सकेगी जब सभी नागरिको के साथ हर स्थिति में समान कानूनी व्यवहार होगा . भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25-28 भारतीय नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है , अतः कानूनी रूप से सभी नागरिको पर समान नियम लागू हो जाने से धार्मिक स्वतंत्रता पर किसी तरह का कोई डर बेवजह है . संविधान का अनुच्छेद 44 भारतीय राज्य से अपेक्षा करता है कि वह राष्ट्रीय नीतियां बनाते समय सभी भारतीय नागरिकों के लिए राज्य के नीति निर्देशक तत्व और समान कानून को लागू करे।

राजकीय बालिका इंटर कालेज में हैं सभी सुविधायें

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज कर्वी की प्रधानाचार्य श्रीमती पुष्पा वर्मा ने बताया कि राजकीय बालिका इंटर कॉलेज कर्वी में शिक्षण कार्य कक्षा 12 तक चल रहा है। लोक सेवा आयोग से चयनित शिक्षिकाएं कार्यरत हैं। मानविकी वर्ग में हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत इतिहास, नागरिक शास्त्र, गृह विज्ञान, अर्थशास्त्र, कला, कंप्यूटर एवं वैज्ञानिक वर्ग में रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित तथा व्यवसायिक वर्ग के विषय परिधान, रचना एवं सज्जा, फैशन डिजाइनिंग के साथ प्रवीण योजना के तहत ब्यूटी एंड वैलनेस रिटेल मार्केटिंग का भी अध्ययन कार्य कराया जाता है।

मंगलवार को उन्होंने बताया कि सभी विषय रोचक एवं पूर्ण मनोयोग से पढ़ाएं जाते हैं। विद्यालय का परीक्षा फल प्रतिवर्ष प्रगति कर रहा है। बोर्ड परीक्षा में भी परिणाम अच्छे आ रहे हैं। बोर्ड परीक्षा वर्ष 2022-23 में हाईस्कूल का 94.50 और इंटरमीडिएट का 86.6 फीसदी रहा है। प्रदेश में हाईस्कूल की छात्रा प्रियांशी सिंह का 90 प्रतिशत एवं इंटर में प्रिया सिंह का 89.6 प्रतिशत था। विद्यालय में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगितायें भी होती हैं। बच्चों को पुरस्कृत भी किया जाता है। स्पोर्ट्स में बच्चे हिस्सा लेते हैं। विद्यालय में इसके लिए अलग से कक्षाएं चलाई जाती हैं, विद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया चल रही है।

शासनादेशों का उल्लंघन कर रहे डॉक्टर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले के सीएचसी व पीएचसी में तैनात डॉक्टर अंगद की तरह पैर जमाए हैं। शासनादेश हैं कि डॉक्टर को पांच वर्ष बाद जिले तथा आठ वर्ष बाद मंडल स्तर पर तबादला किया जाए। जिले में तमाम डॉक्टर ऐसे हैं जो लिपिक से मिलीभगत कर सूची में अपना नाम न भेजकर किसी अन्य का भेज देते हैं।

मंगलवार को डॉक्टरों के जिले में जमे होने की खबर मिली। डॉक्टर खुद सीएचसी में जमे हैं। मंडल स्थानांतरण को ऐसे डाक्टरों की सूची भेजी गई है जो पहले से ही पीजी करने चले गए हैं। सीएचसी में पैर जमाए डॉक्टर के तौर पर लखन स्वरूप गर्ग, डॉ शैलेंद्र सिंह, डा शेखर वैश्य, डा राजेश सिंह आदि अन्य डाक्टर जिले में आठ साल से जमे हैं।

ऐसे डॉक्टरों का तबादला जिला स्तर व मंडल स्तर पर नहीं हो रहा है। आखिर किसकी मेहरबानी से शासनादेशों का डॉक्टर उल्लंघन कर रहे हैं।

दस तक करें आवेदन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद के निदेशक ने तीन जुलाई के निर्देश के क्रम में नोडल प्रधानाचार्य राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान मानिकपुर मानसिंह भारती ने बताया कि प्रवेश सत्र अगस्त को आवेदन की अन्तिम तिथि दस जुलाई रात 12 बजे तक बढ़ा दी गयी है। इच्छुक अभ्यर्थियों से कहा कि आवेदन परिषद की वेबसाइट पर आनलाइन निर्धारित तिथि तक कर सकते हैं।

छह को होगी भवन मानचित्र बैठक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण की सचिव वंदिता श्रीवास्तव ने बताया कि प्राधिकरण क्षेत्र के तहत मंजूरी को प्राप्त भवन मानचित्रों के जल्द निस्तारण को प्राधिकरण ने मानचित्र समाधान दिवस छह जुलाई को सवेरे दस से अपरान्ह दो बजे तक प्राधिकरण कार्यालय में होगा।

मंगलवार में उन्होंने बताया कि संबंधित भवन मानचित्र प्रस्तुतकर्ता संबंधित विभाग एवं अनुज्ञा प्राप्त मानचित्रकार/आर्किटेक्ट मौजूद रहेंगे। संबंधित भवन मानचित्र की आपत्तियों का तत्काल निस्तारण कर भवन मानचित्र मंजूरी की कार्यवाही की जायेगी। सभी संबंधित छह जुलाई कसे समय से पहुंचकर सुविधा का लाभ उठायें।

वेबसाइट पर लोड करें क्लेम बिल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज कर्वी की प्रधानाचार्य श्रीमती पुष्पा वर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा एनएमएमएस 2023-24 में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के प्रमाण पत्र जनपदीय नोडल विद्यालय राजकीय बालिका इंटर कॉलेज के कार्यालय से प्राप्त करें। प्रमाण पत्र के आधार पर ही क्लेम बिल डाटा अपलोड होगा। 2022-23, 2021-22 एवं 2020-21 में सफल छात्रवृत्ति के नवीनीकरण को लाभार्थी संबंधित वेबसाइट पर क्लेम बिल डाटा अपलोड कर सकते हैं।

मोपेड पे सवार पति पत्नी को हाइवा ट्रक ने रौंदा, मौत

वाराणसी। लंका थाना क्षेत्र के लौटूबीर पुलिया के समीप हाईवे पर सोमवार की दोपहर में पति से साथ मोपेड से जा रही रीता (35) की हाइवा ट्रक की चपेट में आने से मौत हो गई। उसका पति उमा बच गया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

जानकारी के अनुसार जंसा क्षेत्र के कुंडरिया गांव का उमा पत्नी रीता के साथ रोहनिया क्षेत्र के लाठियां गांव में रिश्तेदार के घर जा रहा था। इसी दौरान हाइवे पर पीछे से आ रहे हाइवा ने मोपेट में टक्कर मार दी। इसके बाद दम्पती मोपेड समेत अनियंत्रित होकर गिरे।पत्नी सड़क पर और पति उमा किनारे गिरा। इतने में हाइवा ने रीता को रौंद दिया। दुर्घटना देख शोर मचाते लोग दौड़े चालक मौके पर हाइवा छोड़कर भाग निकला सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा पुलिस ने हाइवा को कब्जे में ले लिया है।

यूपी एटीएस ने आतंकी संगठन अंसार गजवत-उल-हिंद के दो सदस्यों को पकड़ा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने खुफिया एजेंसियों से मिले इनपुट के बाद अल-कायदा की सहायक इकाई आतंकी संगठन अंसार गजवत-उल-हिंद (एजीयूएच) के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है।

गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान 38 वर्षीय सद्दाम शेख और 23 वर्षीय रिजवान खान के रूप में की गई है।

विशेष पुलिस महानिदेशक, कानून एवं व्यवस्था, प्रशांत कुमार ने कहा कि गोंडा का मूल निवासी सद्दाम बेंगलुरु में एनटीसी नामक कंपनी में ड्राइवर के रूप में काम करता था।

कुमार ने कहा, "सोशल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक निगरानी के दौरान, यह सामने आया है कि सद्दाम शेख कट्टरपंथी था और पाकिस्तान में आतंकवादियों के संपर्क में था। "

सद्दाम ने यह भी कहा कि ओसामा बिन लादेन, जाकिर मूसा, रियाज नाइकू, नावेद जट्ट, समीर टाइगर जैसे आतंकवादी उसके आदर्श थे और उसके फोन में इन आतंकवादियों से संबंधित तस्वीरें और वीडियो भी बरामद हुए हैं।

दूसरा आरोपी जम्मू-कश्मीर के पुंछ का रहने वाला रिजवान खान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आतंकवाद का प्रचार कर रहा था। वह फिलहाल बिहार में सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी कर रहा था।

दूसरे दिन प्रभारी मंत्री ने देखे जिले के विकास कार्य

-मंत्री ने अधूरे कार्यों को जल्द पूरा करने के दिये निर्देश- अपात्रों को घर देने की डीएम से की जांच की मांग

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सूबे के राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग/जिला प्रभारी मंत्री नरेंद्र कश्यप ने दौरे के दूसरे दिन कई परियोजनाओं का स्थलीय निरीक्षण किया। निमार्णाधीन देवांगना एयरपोर्ट व हर घर जल नल योजना का समय से कार्य पूरा न होने पर नाराजगी जताई। अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण कार्य तेजी से करने के निर्देश दिये। रैपुरा के गुन्ता बांध वाटरप्लांट का निरीक्षण किया। उन्होंने यूसीसी कानून पर कहा कि ये बीजेपी के संकल्प पत्र में था। यूसीसी देश में लागू करने को सरकार तैयार है। एक देश-एक संविधान-एक झंडा देश के लिए महत्वपूर्ण है।

मंगलवार को जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र कश्यप ने देवांगना एयरपोर्ट में टर्मिनल बिल्डिंग, अप्रोच रोड, बाउंड्री वॉल, एयरपोर्ट के छोटे रनवे, बड़े रनवे को देखा। मैनेजिंग डायरेक्टर ने उन्हें बताया कि 31 अक्टूबर तक कार्य पूरा हो जाएगा। मंत्री ने कहा कि अधूरे कार्य जल्द पूरा करायें। मानिकपुर ब्लाक के बघौड़ा के पम्भिया तालाब को देखकर आउटलेट-इनलेट की जानकारी ली। डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह को निर्देश दिए कि इसमें पानी भराए, पानी का लेबल ऊपर रहेगा तो ग्रामीणों को लाभ मिलेगा। तालाब में मत्स्य पालन भी हो सकता है। मंत्री ने मानिकपुर ब्लाक के रैपुरा बोड़ी पोखरी में सरकार की योजनाओं के बारे में ग्रामीणों से चर्चा की। वहां बने शौचालय, मुख्यमंत्री आवास व पानी के बारे में कुछ महिलाओं ने आपत्ति जताई कि पात्रों को घर नहीं मिले, अपात्रों को मिले हैं। मंत्री ने

जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द से अपात्रों की जांच को कहा। अधिकारियों-कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई को कहा, अगली बैठक में रिपोर्ट देखने की बात कही। मंत्री ने गुंता बांध में बन रहे 81 गांव के पानी को इंटेकवेल, वाटर ट्रीटमेंट प्लांट देखा। मंत्री ने वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण कर कार्यदाई संस्था से कहा कि मैनपावर बढ़ाकर समय से कार्य पूरा करायें। मंत्री ने वृक्षारोपण भी किया। मंत्री ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रैपुरा को देखा। कृषि विभाग ने किसान देवदत्त, परमदीन, वृंदावन, महेंद्र सिंह, रामकिशन आदि को मिनी किट बीज अरहर, सावा, कोदो बांटे। वाटर ट्रीटमेंट प्लांट से अगरहुडा गांव में पाइप लाइन से पानी देने का निरीक्षण किया। उन्होंने जिलाधिकारी से कहा कि प्रधान, लेखपाल, जल जीवन मिशन के अधिकारी-कर्मचारी की बैठक कराकर प्रचार कराकर लोगों की भ्रांतियां दूर करें।

निरीक्षण में सांसद आरके सिंह पटेल, विधायक मानिकपुर/मऊ अविनाशचंद्र द्विवेदी, भाजपा जिलाध्यक्ष चंद्र प्रकाश खरे, जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द, सीडीओ अमृतपाल कौर, एडीएम कुंवर बहादुर सिंह, एडीएम नमामि गंगे सुनंदू सुधाकरन, एसडीएम कर्वी राजबहादुर, मानिकपुर एसडीएम प्रमेश श्रीवास्तव, सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, पीडी ऋषिमुनि उपाध्याय, डीडीओ आरके त्रिपाठी, डीडीए कृषि राजकुमार, जिला कृषि अधिकारी आरपी शुक्ला, बीडीओ मानिकपुर धनंजय सिंह, सांसद प्रतिनिधि शक्ति प्रताप सिंह तोमर, भाजपा नेता देव त्रिपाठी, रोहित अग्रवाल, बाबूलाल पटेल समेत संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

छात्र-छात्राओं को मिलेगा निःशुल्क कोचिंग सुविधा का लाभ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। केंद्रीय विद्यालय अभिभावक संघ के अध्यक्ष/समाजसेवी राजकिशोर शिवहरे ने बेरोजगार युवक-युवतियों का भविष्य संवारने को निःशुल्क अभ्युदय कोचिंग सुविधा देने को भागीरथ प्रयास कहा है। यहां के मेधावियों का भविष्य संवारने को शासन-प्रशासन से पैरवी कर कोचिंग सुविधा देने में अहम भूमिका निभाई है। मंगलवार को योगी सरकार

ने निःशुल्क अभ्युदय कोचिंग सुविधा हर जिले में दी थी। जिले के छात्र-छात्राओं को कोचिंग को बांदा जाने में निःशुल्क अभ्युदय कोचिंग महंगी साबित हो रही थी। छात्र-छात्राएं ऑनलाइन विकल्प को भी अपनाते थे। मोबाइल रिचार्ज महंगा पड़ता था। नेटवर्क की प्रॉब्लम होती थी। समस्याओं से निजात दिलाने को जिले के छात्र-छात्राओं को समर्पित शिक्षा के प्रहरी राजकिशोर शिवहरे ने निःशुल्क कोचिंग का लाभ दिलाने को पहल की थी।

उन्होंने जिले में शुरू कराने को प्रयास किए थे। नतीजतन कोचिंग शुरू तो हुई, छात्रों को यहां भी असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा था। जिले में अव्यवस्थाओं के शिकार पुस्तकालय को हाईटेक एवं अभ्युदय कोचिंग चलाने को मार्च 2022 से समाज कल्याण विभाग से मिलकर खामियां बताई। जिलाधिकारी को भी जानकारी दी। जिला विद्यालय निरीक्षक से जिलाधिकारी ने पुस्तकालय समेत हाल की जानकारी मांगी।

सीओ प्रज्ञान की अगुवाई में हुई न्यायालय की जांच

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी की देखरेख में पुलिस उपाधीक्षक प्रज्ञान अनुज मिश्र की अगुवाई में निरीक्षक सूर्यकांत अरूण राय व न्यायालय सुरक्षा टीम की मौजूदगी में न्यायालय परिसर की जांच की गई।

मंगलवार को पुलिस टीम व एलआईयू तथा डॉग स्क्वायड की

संयुक्त टीम ने सुरक्षा एवं सतर्कता के मद्देनजर न्यायालय परिसर कर्वी की जांच की। प्रवेश द्वार से जाने वाले लोगों की जांच की गयी। गेट पर ड्यूटी में तैनात पुलिस बल को दिशा-निर्देश दिये। न्यायालय परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरे भी चेक किये गये।

पुलिस टीम को न्यायालय की जांच में कोई संदिग्ध व्यक्ति या संदिग्ध वस्तु नहीं मिली। पुलिस ने ये जांच एहतियातन की है।

घर न गिराने की ग्रामीणों ने लगाई गुहार

सांसद का पत्र जिलाधिकारी को दिखाया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय से सटे कालूपुर पाही गांव के वाशिंदो ने प्रर्दशन कर घर न गिराने की मांग की है। ग्रामीणों ने कहा कि जिला प्रशासन ने मत्स्य विभाग के पास काफी अरसे से बने घरों को ढहाने के आदेश दिये हैं।

मंगलवार को ग्रामीण रघुवीर प्रजापति, बाबूलाल प्रजापति, मेवालाल, कैलाश, सोहन, फूलचंद्र, गणेश, प्रेम, मुन्नालाल, राजकरण, गोविंद, राजेंद्र, इंदु

कुमार, धर्मराज व चुनबाद ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर जिलाधिकारी सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा। मांग किया कि वे 55 वर्षों से मत्स्य विभाग कार्यालय के पास घर बनाकर रह रहे हैं। मत्स्य विभाग ने नोटिस जारी कर घर गिराने को कहा है। सांसद आरके सिंह पटेल से भी वे लोग मिले थे। सांसद का लिखा पत्र जिलाधिकारी को दिखाया। सांसद आरके सिंह पटेल ने जिलाधिकारी से न्याय पूर्ण कारवाई को कहा है। सांसद ने गरीबों के घर न गिराने या अन्यत्र प्रशासन की ओर से जमीन व मकान उपलब्ध कराने को कहा है।

कुछ सरकारी विभाग पूरी तरह उत्पीड़न में लगे : गुप्ता

रामपुर। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश को उद्योग प्रदेश बनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों में कुछ सरकारी विभाग बाधा उत्पन्न कर रहे है। यह विचार आज आई आई ए रामपुर चैप्टर में जनरल बॉडी मीटिंग में चेयरमैन विपिन गुप्ता ने ब्यक्त किए ।उन्होंने कहा कि सरकारी विभागों को अपना सहयोगी ब्याबहार रखना चाहिए। होटल रेडियन्स पार्क में आयोजित मीटिंग में चेयरमैन द्वारा पुनः श्रीष गुप्ता को सचिब ,एवं शेष कमेटी को भी दोबारा वही दायित्व दिए गए। अंकुर रस्तोगी को वाईस ट्रैसरार घोषित किया।मीटिंग में नए सदस्यों का भी स्वागत किया गया।

मीटिंग में कई सदस्यों द्वारा कुछ सरकारी विभागों द्वारा नए उद्योगो को लगाने में विभागों द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न की शिकायतें रखी।जिनमे बिजली , जी एस टी, पॉल्युशन ,धारा 80 से संबंधित मामले मुख्य निशाने पर थे।

आई आई ए के सचिव श्रीष गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि केंद्र सरकार, प्रदेश सरकार,

एवं जिले के उच्च अधिकारी जिले में औद्योगिकरण करण के लिए पूर्ण प्रतिबद्ध है।और काफी सहयोगी प्रयास कर रहे है काफी कड़ा रुख अपना रहे है।लेकिन कुछ सरकारी विभाग पूरी तरह उत्पीड़न में लगे है। भ्रष्टाचार की शिकायत आज रखी गई है।इनकी जांच कर उच्चाधिकारियों को अबगत कराया जाएगा और यदि काबू नही हुआ को मुख्यमंत्री जी को भी अबगत कराया जाएगा।मीटिंग को पूर्व चेयरमैन एस के गुप्ता ने भी संबोधित किया और रामपुर चैप्टर को उद्योगो की लड़ाई लड़ने के लिए बधाई दी और भविष्य के लिए शुभकामनाएं अर्पित की। मीटिंग में मुन्नन खान,बबलू खान,जितेंद्र जैन,सुनील भगत, आदर्श अग्रवाल, इमरान शम्सी,परितोष चाँदीवाला, मनोज गर्ग,दीपक गोयल,उमेश अग्रवाल,रमेश अग्रवाल,प्रदीप गुप्ता, मनोज तिवारी,राजू गुप्ता, अमृत कपूर आदि मेंबर उपस्थित रहे।

जिला अस्पताल चैकी प्रभारी ने तमंचे में एक दबोचा, 15 लीटर शराब समेत सरधुआ पुलिस ने दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपराधियो के खिलाफ जारी अभियान में चैकी प्रभारी जिला अस्पताल मुन्नीलाल की टीम ने बुद्दा उर्फ नसीम पुत्र रहीश निवासी गत्ता वाली गली मिशन अस्पताल के पीछे भरतपुरी कोतवाली कर्वी को एक तमंचा 315 बोर व कारतूस समेत गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ कोतवाली में आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। टीम में प्रभारी जिला अस्पताल मुन्नीलाल, सिपाही जयनारायण पटैरिया, सिपाही बहोरन शामिल रहे।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र सिंह की अगुवाई में दरोगा दिनेश कुमार पाण्डेय की टीम ने भुल्लू साहू पुत्र स्व पीताम्बर साहू निवासी भानपुर के कब्जे से 15 लीटर महुआ शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा दिनेश कुमार पाण्डेय, सिपाही अतुल मिश्रा शामिल रहे।

जमहिल के ग्रामीणों ने उठाई सडक की मांग

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बुन्देली आवाज किसान विकास समिति के अध्यक्ष विशाल भाई की अगुवाई में किसानों ने जिलाधिकारी को सौंपे ज्ञापन में पहाडी ब्लाक के जमहिल के नारायण दलित बस्ती मेनरोड से पांच सौ मीटर विद्यालय तक सडक बनवाने की मांग की है।

मंगलवार को बुन्देली आवाज किसान विकास समिति के अध्यक्ष विशाल भाई की अगुवाई में किसानों ने जिलाधिकारी को सौंपे पत्र में कहा कि पहाडी ब्लाक के जमहिल गांव के नारायण दलित बस्ती मेनरोड से पांच सौ मीटर विद्यालय तक सडक बनवाने को कई बार पत्र लिखे गये हैं। पत्र लिखने के बाद भी अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने कोई ध्यान नहीं दिया है। सडक न होने से लोगों को भारी परेशानी उठानी पड रही है।

उन्होंने कहा कि बस्ती में पचास घरों के लोग रहते हैं। बस्ती की आबादी सात सौ से ज्यादा है। कई बार अधिकारियों से सडक की मांग की गई है। आज तक किसी ने ध्यान नहीं दिया है। सडक न होने से लोगों को भारी परेशानी हो रही है। इस मौके पर ग्रामीण धर्मराज, अजय, देवराज, छोटा, कल्लू, विजय, बिहारी, शिवकुमार, वीरेन्द्र, शकुन्तला, उर्मिला, धीरेन्द्र, रोहित आदि मौजूद रहे।

बिना चोटहिल हुए नहीं जा सकते गोबरिया गांव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कर्वी ब्लाक के बेडीपुलिया पेट्रोल पम्प के सामने गोबरिया मार्ग जाना काफी दुष्कर है। इस मार्ग से जाने को लोगों को भारी परेशानी उठानी पडती है। मार्ग से आवागमन को बिना चोटहिल हुए नहीं कर सकते।

मंगलवार को गोबरिया गांव के ग्रामीणों ने बताया कि गोबरिया गांव तक पहुंचने को भारी मशक्कत करनी पडती है। जिला मुख्यालय से सटा होने के बाद भी गोबरिया गांव तक आवागमन करने में लोगों के पसीने छूट जाते हैं। बरसात में तो लोगों का आवागमन बन्द ही हो जाता है। गांव तक जाने को लोगों को दलदल व पानी भरी सडक से गुजरना पडता है।

ग्रामीणों ने मांग किया कि गोबरिया गांव की सडक का निर्माण जल्द कराया जाये। गांव का प्रधान गोविन्द निषाद सडक निर्माण कराने में कोई रुचि नहीं ले रहा है। इससे ग्रामीण काफी परेशान हैं।

पश्चिमी नेपाल में भूस्खलन, तीन बच्चों की मौत

काठमांडू। पश्चिमी नेपाल के अरघाखांची जिले में देमंगाल्वर को भूस्खलन में तीन बच्चों की मौत हो गई है। इनमें दो लड़के और एक लड़की है। अरघाखांची जिला पुलिस कार्यालय ने जानकारी दी

कि यह घटना पाणिनि ग्रामीण नगर पालिका में सुबह 5:00 बजे हुई। घटना के वक्त घर के अन्य सदस्य खलिहान में काम करने गये थे। घटना के वक्त चार बच्चे सो रहे थे। इनमें से तीन की मौत हो गई और एक बच्चा घायल हो गया। नेपाल में बारिश का मौसम शुरू होते ही बाढ़ और भूस्खलन से जानमाल का नुकसान हो रहा है।

सत्तारूढ़ गठबंधन का फैसला, नेपाल के कोशी प्रांत में कांग्रेस के उद्धव थापा होंगे मुख्यमंत्री उम्मीदवार

काठमांडू। नेपाली कांग्रेस के उद्धव थापा को कोशी प्रांत का मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार बनाने का फैसला किया गया है। काठमांडू में हुई सत्ता गठबंधन की बैठक में थापा को मुख्यमंत्री पद

के उम्मीदवार बनाने का फैसला किया गया। सत्ता गठबंधन की बैठक में शामिल हुए जनता समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष उपेन्द्र यादव ने बताया कि कांग्रेस के उद्धव थापा को मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार बनाने पर सहमति बन गयी है। कोशी प्रांत में सीपीएन (यूएमएल) के नेतृत्व वाली सरकार गिरने के बाद नई सरकार के गठन का आह्वान किया गया है। नेपाल के कोशी क्षेत्र में किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं है। कोशी राज्य में स्पीकर के वोट जोड़कर सत्तारूढ़ गठबंधन के पास बहुमत है। यूएमएल के 40, नेपाली कांग्रेस के 29, सीपीएन माओवादी सेंटर के 13, आरपीपी के 6, सीपीएन एस के 4 और जनता समाजवादी पार्टी के 1 सांसद हैं।

नंगा पर्वत की चोटी पर पर्वतारोही स्नो ब्लाइंडनेस की वजह से फंसा, बचाव दल बोला- 6500 मीटर से नीचे आना होगा

कराची। पाकिस्तानी पर्वतारोही आसिफ भट्टी दुनिया की नौवीं सबसे ऊंचे पर्वत के 8,126 मीटर चोटी स्नो ब्लाइंडनेस की वजह से फंसे हुए हैं। अल्पाइन क्लब ऑफ पाकिस्तान (एसीपी) के महासचिव करार हैदरी ने इस बात की जानकारी देते हुए बताया कि आसिफ भट्टी 7,500-8,000 मीटर की ऊंचाई पर कैंप 4 में फंसे हुए हैं और उन्हें मदद की जरूरत है। पर्वतारोही आसिफ भट्टी इस्लामाबाद के एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं। हैदरी के अनुसार वह चोटी के अंतिम शिखर पर पहुंचने के दौरान वह फंस गए। उन्होंने बताया कि भट्टी के कुछ दोस्तों ने उनके स्नो ब्लाइंडनेस से पीड़ित होने का संकेत दी है। एसीपी के महासचिव ने कहा, पर्वतारोही भट्टी के बचाव के लिए हेलिकॉप्टर का इंतजाम किया जाएगा, लेकिन इसके लिए उन्हें 6,000-6,500 मीटर नीचे की तरफ आने की जरूरत है। पाकिस्तानी मीडिया से बातचीत करते हुए हैदरी ने कहा कि पर्वतारोही के साथ उनके अन्य साथी लेफ्टिनेंट कर्नल (आर) डॉ. जब्बार, डॉ. नवीद, साद मुहम्मद और फहीम पाशा भी अभियान के लिए निकले थे, लेकिन उन्होंने अभी तक अपना अंतिम शिखर सम्मेलन शुरू नहीं किया। पाकिस्तान के एक अन्य संगठन काराकोरम क्लब ने जानकारी दी है कि शिमशाल में भट्टी को बचाने के लिए बचाव कार्य शुरू कर दिया है।

नेपाल में संसदीय समितियों के गठन के मुद्दे पर बनी सहमति

काठमांडू। नेपाल के प्रमुख राजनीतिक दलों के शीर्ष नेताओं और प्रतिनिधि सभा के स्पीकर देवराज घिमिरे के बीच मंगलवार को हुई बैठक में विभिन्न संसदीय समितियों के गठन पर सहमति बनी। बैठक के बाद कानून मंत्री धनराज गुरुंग ने पत्रकारों को बताया कि संसदीय समितियों के गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने पर सहमति बन गई है। बैठक के दौरान स्पीकर देवराज घिमिरे ने कहा था कि यदि संसदीय समितियों के गठन के मुद्दे पर सहमति नहीं बनी तो इसके लिए चुनाव प्रक्रिया को आगे बढ़ाएंगे।

बैठक में प्रधानमंत्री एवं सीपीएन (एमसी) के अध्यक्ष पुष्पकमल दाहाल 'प्रचंड', नेपाली

कांग्रेस के अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा, सीपीएन (यूएमएल) के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली, कानून मंत्री धनराज गुरुंग समेत कई प्रमुख नेता मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि नेपाल में पिछले साल 20 नवंबर को संसदीय चुनाव हुआ, लेकिन अब तक संसदीय समितियों का गठन नहीं हो सका है। इससे संसद का कामकाज प्रभावित हो रहा है।

सैन फ्रांसिस्को में खालिस्तान समर्थकों ने भारतीय वाणिज्य दूतावास में लगाई आग

सैन फ्रांसिस्को। खालिस्तान समर्थकों ने यहां भारतीय वाणिज्य दूतावास को आग के हवाले कर दिया। हालांकि स्थानीय अग्निशमन विभाग की तत्परता से इमारत को सुरक्षित बचा लिया गया। सैन फ्रांसिस्को औपचारिक रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य का प्रमुख सांस्कृतिक और वाणिज्यिक केंद्र है। खालिस्तान समर्थकों ने दो जुलाई को दूतावास को राख के ढेर में तब्दील करने की कायराना हरकत की।

इस घटना में कोई बड़ी क्षति या कर्मचारियों को नुकसान नहीं पहुंचा है। आग को समय रहते बुझा लिया गया। स्थानीय, राज्य और संघीय अधिकारियों को इसकी सूचना दी गई है। अमेरिका के विदेश विभाग ने इसकी कड़ी

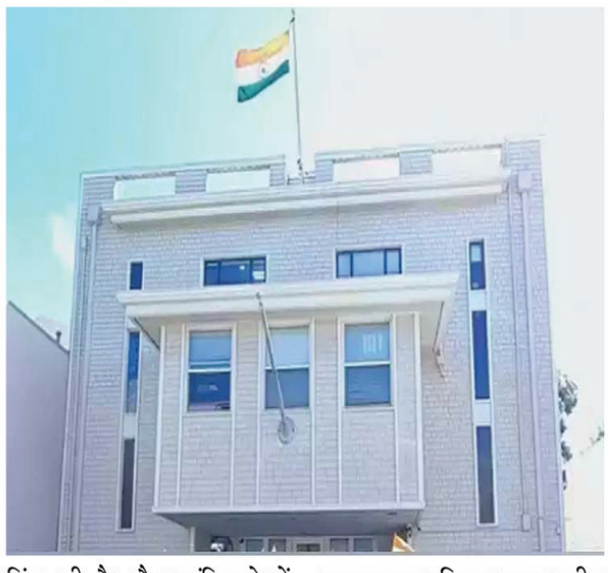

निंदा की है। सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास पर पांच महीने में दूसरा हमला है। ताजा हमला स्थानीय समयानुसार रविवार सुबह करीब 1:30 बजे हुआ। खालिस्तान समर्थकों ने दूतावास की इमारत में आग लगा दी।

कनाडा सरकार खालिस्तान समर्थकों की भारत विरोधी गतिविधियों से चिंतित

-विदेश मंत्री मेलानी जोली ने कहा, ओटावा में आठ जुलाई को भारतीय उच्चायोग के सामने प्रस्तावित खालिस्तान फ्रीडम रैली अस्वीकार्य

ओटावा। कनाडा में खालिस्तान समर्थकों की भारत विरोधी गतिविधियों ने प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो सरकार की नाक में दम कर दिया है। कनाडा में इस समय भारत विरोधी पोस्टर्स चर्चा में हैं। इनमें लिखा है 'किल इंडिया'। इन पोस्टर्स में भारतीय उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा और टोरंटो में भारत की महावाणिज्य दूत अपूर्वा श्रीवास्तव पर खालिस्तानी हरदीप सिंह निज्जर

की हत्या का आरोप लगाया है।इस बीच खालिस्तान समर्थक संगठनों ने ओटावा स्थित भारतीय उच्चायोग के समक्ष आठ जुलाई को खालिस्तान फ्रीडम रैली करने की घोषणा कर जस्टिन सरकार को चिंता में डाल दिया है। यह पोस्टर्स इसी रैली के लिए तैयार किए गए हैं।

इस पर कनाडा की विदेश मंत्री मेलानी जोली ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने खालिस्तान फ्रीडम रैली को लेकर ट्वीट किया है। जोली ने कहा है- 'कनाडा राजनयिकों की सुरक्षा के संबंध में वियना कन्वेंशन के संकल्प और अपने दायित्व के प्रति गंभीर है। इस रैली के संबंध में ऑनलाइन प्रसारित कुछ प्रचार सामग्री पर कनाडा भारतीय अधिकारियों के साथ निकट संपर्क में है। यह बिल्कुल अस्वीकार्य है।'

सऊदी अरब में एक साथ पांच अपराधियों को फांसी की सजा, पूजा स्थल पर हमला करने के पाए गए थे दोषी

दुबई। सऊदी अरब ने एक साथ पांच अपराधियों को मौत की सजा दी, जो इस साल की सबसे बड़ी सामूहिक फांसी है। मारे गए लोगों में चार सउदी और एक मिस्र का नागरिक शामिल था। यह सभी एक पूजा स्थल पर घातक हमले में शामिल पाए गए थे, जिसमें पांच लोगों की मौत हो गई थी और अनगिनत घायल हुए थे। फिलहाल ये नहीं बताया गया है कि पूजा स्थल पर हमला कब और कैसे हुआ था। बता दें, अधिकारियों ने इस बात का खुलासा नहीं किया है कि फांसी कैसे दी गई। अगर हम सऊदी अरब का इतिहास देखें तो यह एक साथ फांसी चढ़ने वालों की सबसे बड़ी संख्या है। पांच लोगों को सामूहिक फांसी दिए जाने के साथ ही इस साल सऊदी अरब द्वारा मौत की सजा दिए जाने की कुल संख्या 68 तक पहुंच गई है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि आतंकवाद से संबंधित अपराधों के लिए मई की शुरुआत से अबतक 20 से अधिक फांसी दी जा चुकी हैं। मई के अंत में, अधिकारियों ने आतंकवाद के दोषी दो बहरीनियों को मौत की सजा दी थी। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, पिछले साल सऊदी अरब ने कुल 147 लोगों को फांसी दी गई थी। जबकि साल 2021 में 69 लोगों को मौत की सजा दी गई थी। 2022 के आंकड़े में आतंकवाद से संबंधित अपराधों के लिए मार्च में एक ही दिन में 81 लोगों को फांसी दी गई थी।

पाकिस्तान में पेट्रोलियम की किल्लत से तेजी से बंद हो रहे हैं उद्योग-धंधे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में तेजी से बंद हो रहे उद्योग-धंधों के बीच सरकार ने पेट्रोलियम पदार्थों की सप्लाई सुधारने के उपायों की घोषणा की है। इसके तहत इन पदार्थों की जमाखोरी रोकने का इरादा जताया गया है। इसके पहले तेल कंपनियों की संस्था ऑयल कंपनीज एडवाइजरी काउंसिल (ओसीएसी) ने सरकार को चेतावनी पत्र भेजा था। इसमें कहा गया था कि कस्टम बॉन्डेड स्टोरेज सिस्टम के जरिए विदेशी कंपनियों से हो रहा आयात देश की अर्थव्यवस्था के लिए बड़ा खतरा पैदा कर रहा है। इससे घरेलू तेल कंपनियों को भी भारी नुकसान हो रहा है। कुल नतीजा यह हो रहा है कि उद्योग-धंधे बंद हो रहे हैं।ओसीएसी के अध्यक्ष वकार सिद्दिकी ने पेट्रोलियम मंत्री मुसादिक मलिक को यह पत्र भेजा था। उसके बाद ही मलिक ने नए कदम उठाने की घोषणा की। पत्र में कहा गया- 'हमारी यह ठोस राय बनी है कि मौजूदा सिस्टम से देश में तेल की मुक्त आपूर्ति बुरी तरह प्रभावित होगी, जिससे उद्योग क्षेत्र तबाह हो जाएगा।' तेल कंपनियों के अधिकारियों ने मीडिया से कहा है कि सरकार ने यह सिस्टम विदेशी मुद्रा बचाने के मकसद से

लागू किया है। लेकिन यह योजना सही समझ पर आधारित नहीं है।

विशेषज्ञों के मुताबिक पाकिस्तान की असल समस्या विदेशी मुद्रा भंडार में तेजी से आ रही गिरावट है। विदेशी मुद्रा बचाने के लिए पाकिस्तान सरकार बिना सबकी राय लिए कदम उठा रही है। जबकि इस कारण अर्थव्यवस्था के उत्पादक क्षेत्रों को भारी नुकसान हुआ है।

देश में बढ़ रही बेचैनी के बीच अब एक बार फिर शहबाज शरीफ सरकार ने उम्मीद जताई है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) पाकिस्तान को ऋण देने के लिए एक अस्थायी समझौते पर राजी हो जाएगा। आईएमएफ को उनकी मंशा के मुताबिक संकेत देने की कोशिश में सरकारी सूत्रों ने बुधवार को कहा कि देश

इससे घरेलू तेल कंपनियों को भी भारी नुकसान हो रहा है। कुल नतीजा यह हो रहा है कि उद्योग-धंधे बंद हो रहे हैं। ओसीएसी के अध्यक्ष वकार सिद्दिकी ने पेट्रोलियम मंत्री मुसादिक मलिक को यह पत्र भेजा था।

में पेट्रोलियम पदार्थों पर अतिरिक्त कर लगाया जा सकता है। फिलहाल पेट्रोलियम डेवलमेंट लेवी प्रति लीटर 50 रुपये है, जिसे बढ़ा कर 55 रुपये किया जा सकता है। संभव है कि बढ़ा शुल्क एक जुलाई से लागू कर दिया जाए।

लेकिन पाकिस्तानी अखबारों में छपी रिपोर्टों में इस बात पर संदेह जताया गया है कि ऐसे कदमों के बावजूद आईएमएफ से पाकिस्तान को तुरंत ऋण मिल जाएगा। अखबार द न्यूज में विशेषज्ञों के हवाले से यह सवाल पूछा गया है कि क्या पाकिस्तान सरकार को आर्थिक एवं वित्तीय नीतियों के बारे में आईएमएफ से कोई सहमति पत्र मिला है? इसमें ध्यान दिलाया गया है कि बिना ऐसा सहमति पत्र मिले नए ऋण की उम्मीद रखना बेबुनियाद है। पाकिस्तान सरकार के अधिकारियों ने द न्यूज को बताया है कि सरकार और आईएमएफ के बीच सहमति पत्र के दस्तावेजों का कई बार आदान-प्रदान हुआ है। लेकिन अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि पाकिस्तान को ऋण देने के लिए जो पिछला समझौता हुआ था, उससे संबंधित नौवीं समीक्षा से आईएमएफ संतुष्ट हो गया है। आईएमएफ और पाकिस्तान के बीच मंगलवार को दोबारा बातचीत शुरू हुई थी। लेकिन उसमें बात कितनी आगे बढ़ी है, इस बारे में अभी कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं।

इमरान को मिली बड़ी राहत, इस्लामाबाद हाईकोर्ट ने तोशाखाना मामले को अस्वीकार्य घोषित किया

इस्लामाबाद। तोशखाना भ्रष्टाचार मामले में इमरान खान को बड़ी राहत मिली है। इस्लामाबाद उच्च न्यायालय ने मंगलवार को तोशाखाना मामले

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

अधिकारियों को दिए गए बहुमूल्य उपहारों को संग्रहीत करता है। एक

रिपोर्ट के मुताबाकि एनएबी ने तोशाखाना मामले की जांच के सिलसिले में इमरान खान को तलब किया था। साथ ही पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान को राज्य के सभी उपहारों का रिकॉर्ड लाने के लिए कहा गया। एनएबी के नोटिस के मुताबिक, इमरान खान को तोशाखाना से 108 तोहफे मिले हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, एनएबी ने बुशरा बीबी को एनसीए स्कैंडल मामले में तलब किया है, उनसे अल-कादिर ट्रस्ट समझौता से जुड़े दस्तावजों को लाने को कहा गया है।

इस बीच इमरान खान ने रविवार को आरोप लगाया कि प्रशासन ने उन्हें जेल में डालने की योजना बनाई है और उनकी गिरफ्तारी से जुड़ा पूरा घटनाक्रम पूर्व नियोजित था। अपने संबोधन में, इमरान खान ने अपने खिलाफ दर्ज सभी भ्रष्टाचार के मामलों में किसी भी तरह के गलत काम से इनकार किया। पाकिस्तान के पूर्व पीएम ने कहा कि मैं चाहता हूं कि देश को पता चले कि कैसे झूठे और आधारहीन मामलों के आधार पर मुझे गिरफ्तार करने की योजना बनाई गई है। क्रेटा में एक वकील की हत्या कर दी जाती है और बिना किसी जांच और सबूत के शाहबाज शरीफ के सलाहकार उसी दिन टीवी पर आते हैं और कहते हैं कि हत्या इमरान खान ने की थी और बाद में उसी वकील की विधवा के वीडियो में दिखाया गया कि यह किसने क्या किया। इमरान ने कहा कि यह राजनीति नहीं हैज्यह जिहाद है। हम सभी गुलाम हैं।

सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का ब्रिटेन ने खुलकर किया समर्थन, कहा- दुनिया में बढ़ा है कद

लंदन। ब्रिटेन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में विस्तार का समर्थन किया है और कहा है कि भारत, जापान, जर्मनी, ब्राजील और अफ्रीकी देशों को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट दी जाए। ब्रिटेन की प्रतिनिधि ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम 2020 में कदम रखें। बता दें कि अभी संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में पांच देश ही स्थायी सदस्य हैं, जिनमें अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, फ्रांस और रूस शामिल हैं। हर दो वर्ष पर इसके 10 देश अस्थायी सदस्य बनते हैं लेकिन भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट देने की मांग की जा रही है।

भारत समेत इन देशों को स्थायी सदस्यता देने की मांग

संयुक्त राष्ट्र में ब्रिटेन की स्थायी प्रतिनिधि बारबरा वुडवर्ड ने कहा कि हम चाहते हैं कि सुरक्षा परिषद का विस्तार किया जाए और इसमें भारत, ब्राजील, जर्मनी,

जापान और अफ्रीकी प्रतिनिधित्व को स्थायी जगह दी जाए। यह सही समय है, जब सुरक्षा परिषद 2020 में दाखिल हो। बता दें कि जुलाई महीने में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता ब्रिटेन के पास है।

भारत का दुनिया में बढ़ा है प्रभाव

बारबरा वुडवर्ड का यह बयान ऐसे वक्त आया है, जब ब्रिटेन के विदेश मंत्री जेम्स क्लेवरली ने भी बीते हफ्ते ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार करने की वकालत की थी। वुडवर्ड ने कहा कि सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता मिलना उस दिशा में पहला कदम है। बारबरा ने कहा कि भारत और ब्राजील सुरक्षा परिषद में विस्तृत

हर दो वर्ष पर इसके 10 देश अस्थायी सदस्य बनते हैं लेकिन भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट देने की मांग की जा रही है।

प्रतिनिधत्व लेकर आएंगे। बता दें कि दोनों देशों में विशाल जनसंख्या है और दोनों देश तेजी से आर्थिक विकास कर रहे हैं। ब्रिटेन की स्थायी प्रतिनिधि ने सुरक्षा परिषद में विस्तार का समर्थन करते हुए ये भी कहा कि 1945 के मुकाबले इन देशों का दुनिया में प्रभाव बहुत बढ़ गया है। ऐसे में इन्हें सुरक्षा परिषद में शामिल करना स्वभाविक है।